CONTENTS.



REPORT.

REPORT.

This is my fourth Annual Report on the Search for Hindi Manuscripts. The greater portion of the year 1903 was devoted to the examining of the library of the Mahárájá of Benares and in all 186 manuscripts were noticed there. Notices of 8 other books (Nos 1 to 8) were kindly sent to me by Pandit Chandra dhara Śarmá B A (Jaipur) So that in all 194 manuscripts were noticed. Of these complete notices of 135 are given in this Report and a tabular statement of the rest (59) is given in Appendix I Out of the manuscripts noticed in the library of the Mahárájá of Benares 14 books have 2 or 3 copies. (1) Conse quently 177 books have in all been noticed

In the appendix I have given information about such of the manuscripts as did not appear to me to be of any great importance and as had been noticed in the previous years. I propose to follow this procedure in all future reports of mine on this subject.

Out of 135 manuscripts of which complete notices are given 129(2) have been found to be the work of 71 authors whose ages are as follows —

14th century	1
16th ditto	3
17th ditto	18
18th ditto	26
19th ditto	23

The dates of the remaining six authors could not be ascertained (3)

The statement in appendix I contains information about 59 manuscripts 46(4) out of which have been ascribed to 35 authors the dates of 19 of whom are as follows —

16th century	3
17th ditto	7
18th ditto	4
19th ditto	5

The dates of the remaining 16(5) authors could not be fixed

Among the authors whose work have been fully noticed and those whose work are mentioned in Appendix I the following eight names are common —

Chintámani (17th century)	Suradása (19th century)
Deva (17th century)	Sundara (17th century)
Gokulanátha (19th century)	Tulasí Dása (17th century)
Manohara Dása (?)	Viswanátha Singha (19th century)

Most of the manuscripts noticed are in verse but there are some which are in prose also and that of course in its Braja dialect The majority of these manus cripts were copied out in the 18th and 19th centuries (6) Only 6 were copied out in the 17th century

---

(1) See Nos 19 21 55 65 79 101 108 133-34 138-39 145 45-4 153-54 155-56 158-59 167 68-69

(2) See Nos 2 3 8 10 69 6

(3) See Nos. 6 19 27 83 84 93 94

(4) See Nos. 1 4 to 186.

(5) See Nos. 128 129 130 131 132 136 143 148 149 151 153 157 160 161 166 171

(6) 18th century 143 19th century 153

The character in which these manuscripts are written is mostly Devanágarí, only in a few cases it is Kaithi

In my report for 1900 I wrote that from the beginning of the 18th century to the present day, India could only produce commentators and second rate poets, who were more or less the imitators of the great illustrious masters who had flourished during the two preceding centuries. In continuation of these remarks it may be stated that during the 18th and 19th centuries, there were four different centres of literary activity in Upper India, in so far, of course as Hindi is concerned. These centres were Bundelkhand, Baghelkhand, Oudh and Benares. It is difficult to add anything to what has already been written by several eminent authors about the literary history of the first three centres. But I am sure that the examination of the library of His Highness the Maháráj́á of Benares alone, when completed, will throw a flood of light on the history of the fourth centre. I, therefore, postpone my general remarks about the works noticed this year to 1904 by which time I hope to be able to finish the examination of the Maháráj́á's library and then to be in a position to say something definitely about the poets of Benares and their patrons.

LAHORI TOLA BENARES
The 4th of April 1904

SYÁM SUNDAR DÁS

NOTICES OF HINDI MANUSCRIPTS,

No 1—अमरेश विलास *Verse* Substance—Kásmir-made paper Leaves—45 Size—7½ × 5 inches Lines—16 on a page Extent—860 ślokas. Appearance—worm eaten but new Complete Generally incorrect Character—Devanágarí Place of deposit—Pandit Shivaram's Library, Gulera.

Amaresa Vilása—Translation of 108 ślokas of Amaru Śataka made by the poet Nilakantha in Vikrama Samvat 1698 (1641 A D) This Nilakantha was probably the brother of the great poet Chintámani, Bhusana and Mati Ráma. The manuscript is dated Samvat 1808 (1751 A D)

Beginning—ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ॥ अमरेश विलास लिख्यते ॥ ता भुवन तिहु भवन सारि वाहन जसु जान्यो । तेग त्याग बड भाग जासु गुन गुनिन बखान्यो ॥ धीर धीर मति धीर उद्धि गभीर धुरंधर । जगजीत सोचि नीत परम हिन्द पुनीत धर ॥ महिपाल मौलि नव मुकुट मणि दुख भंजन दुर्जन दवन । कवि नीलकंठ इमि उपजहि सुबोरल अर्थान अवनी रजन ॥ १ ॥ विरचि तेग कर गहे रारि वाहिन सुन मडे । दोरि दुश्मन दलमले मस्त-गन कुंभ विहडे ॥

End—सवैया ॥ काम के प्यास तें कामिनि के जबहि तें पिय अधरा सधरा मे । जान सुधारस हू ते अनूपम या विधि और कहो रस कामें । कठ कहे तबतें बहुती विधि दुगुन श्वास बढी फिरि धामे । ताको अचभो कहा करिए हैं जोपें बलोन लजाइ है तामे । १०८ इति श्रीमन्महिपालमौलिमुकुटचिंतामणि श्री महाराजाधिराज श्री अमरसिंह देव विलासाख्यो नीलकंठ कृत समाप्त. शुभमस्तु । बरष से सोरह ठानवे सातें सावन मास । नील-कठ कवि उच्चरिय श्री अमरेस विलास । सवत् १८०८ चैत्रे मासे कृष्ण पक्षे रवि वासरे प्रति-पदा तिथौ हरिपुर नगर वसते जालधर क्षेत्रे धाय गगा महिमा लिपत प्रोहित मनसाराम श्री श्री नालपाये नम शुभ भूयात् ॥

Subject—अमरुशतक के १०८ श्लोको का अनुवाद ।

Note.—ग्रन्थ अन्तिम दोहे के अनुसार सवत् १६९८ श्रावण की सप्तमी को कवि ने बनाया है तथा जिस प्रति की यह नोटिस है वह हरिपुर मे सवत १८०८ चैत्र कृष्ण १ को पुरोहित मनसाराम ने लिखी थी । ग्रन्थकार ने यद्यपि आदि के छप्पयो मे "वीरसिंह" राजा की स्तुति की है किन्तु छठें और सातवें छप्पय मे 'राम" "अमरेश" की स्तुति से मिल जाने से यह ऐतिहासिक तागा कच्चा मालूम देता है । कदाचित भूषण प्रभृति चार भाइयो मे से यह नीलकण्ठ हो ॥

No 2—वृहज्जातक और राजमुक प्रश्न *Verse* Substance—country made paper Leaves—9 Size—4 × 8 inches Lines—11 on a page Extent—185 ślokas Appearance—ordinary Complete Generally incorrect. Character—Devanágarí Place of deposit—Bhatta Divákar Rája Gulera district Kángrá

Vrihajjátaka and Rájamuka Prasna—A book on Hindu Astrology The name of the author is not given. The manuscript is dated Samvat 1744 (1687 A D).

Beginning—ॐ स्वस्ति श्री गणेशायनम । अथ वृहज्जातक ॥ दोहरा ॥ जपि मुनिन्दु पितु गर्भ मो नृप जठर मधि होइ ॥ पुछे प्रश्न विचारि के आदि अन्त कहु सोई ॥ १ ॥ नारि प्रसूतो कालि को पिय आगमनि धन धाम । सब प्रकार विधि लिखित हो वृहज्जातक धरि

नाम ॥ २ ॥ यय गर्भ निमित्त चिन्ह पुनि कहत हैं ॥ दोहरा ॥ प्रश्न लग्न तिथि सांपरी दिन औ लोगनि मानु ॥ मास पक्ष्यो भीजियो प्रथम लग्न प्रमानु ॥ ३ ॥ चिन्ह निमियो गर्भ मैं मास लाल निन होइ ॥ वैकुंठ प्रश्न विन्दु दि कह्यो मानह निश्चय सोई ॥ ४ ॥

End—पहनु ८६ कहु पुरुष कुच कहत हैं। धनु थिना पुष टेषु लिया पुष कहो येन्द्रा यो गोलाक फोगुक मानि ८७ कुपर धामना गुन जिपैं पाषा चन्द्र पिता घटया पुष पक्षनीयो वैकुंठ कहत मति यात ८८ चन्द्रम रवि गुरु दृष्टि हूं भृगु चंद्र निज भाव हटा लग्न मानि जाव गुनु प्रश्न पुचित धरि राधु ८९ गुरु चगर स्थन पुगह स्वेत नाम भृगुहेतु यहो मुक स्थ मानियो वैकुंठ प्रश्न करि हेतु ९० इति श्री राजमुक प्रश्न समाप्त ॥ शुभ ॥ सं० १९४४ फागुन वदि ७ पुनि लिखतं ॥

Subject.—फलित ज्योतिष का ग्रंथ है।

Note—ग्रन्थकर्ता का तथा इसके समय का पता नहीं। जिस प्रति से यह नोटिस की गई है वह संवत् १९४४ को लिखी है॥

No 3—प्राणसुख *Verse* Substance—country made paper Leaves—3 Size—8 x 5½ inches. Lines—19 on a page Extent—5? slokas. Appearance—new Incomplete Incorrect Character—Devanāgarī. Place of deposit—Bhatta Divākara Rāja, Gulera, district Kāngrā.

Prāna Sukha—A book on Vaidyaka, written by a Muhammadan author in the reign of Shāhjahān in 1711 (1654 A.D.) The book is incomplete.

Beginning—श्रीं स्वस्ति श्री गणेशायनमः अथ प्राणसुख लिख्यते ॥ चौपाई ॥ जय परवेग हकीम पठाने राम राम गढ कैलाश मा श्री राम गढ कैलासकी गली गाया बोलो साचे झूठ न रखिया पढ़ग वेद अनेक कवीसर मुनि जन माथ मंद्रा वेश्वर इसा पय नमी चढ़ चग भगयो टूक नाटक नृप चढ़ पवन चहारो इक लिए तर्जन चबोरे मुन इक घय रोकरि दिखलावै मुन इक हाकिम का ताय डानिसमंद इक मानिक वाणी फहग मपद इसी टुम्बर माया रमानो दहु मानस मामे करी चाली इक नैनाक पाउ पठान मन की इक भति विमान महकम तान की इक करे रसायन साधे धान यह गाच न होने साधी धान इक मुमानी अब मेर कहावै पद ९ सेतो हो कल गावै पोथी का संवत्॥ दोहा ॥ संवत पोथी इसका लिखया कहो गुनो लहगोर यारे साहजहान के हाकम जु मय मेर ॥ दोहा ॥ इक हजार अरु पैंसठा सन जग का यह मास तें पर ग्यारवीं संवत विक्रम राद पानी इसके पाछे वेदक बोलो कहन न झूठा माचो माना जिस सिर निवही यादह पत्र चोदहाम संवत विषम भूपति नरपति साहजहां सलामत ॥ ४ ॥

End—दोहा ॥ जिस रोगी का बल घटे रस ना छुध्या होइ तिस रोगी परि पड़ियो सिरहि उठायो रोइ ॥ १६ ॥ दोहा ॥ सुप याला स्वामु उमनासिका मिलाना होइ तिस रोगी ते प्रहद को लाग कायो चेन ॥ १७ दोहा

Subject—वैद्यक का ग्रन्थ है। इन तीन पत्रों में केवल "रिपु परीक्षा" "कर्म लक्षण" और "ज्वर परीक्षा" लिखा है॥

Note—शाहजहां के समय में हिजरी सन् १०६५ में, विक्रम सं० १७११ (?) में यह ग्रन्थ लिखा गया॥

No 4—अष्टांगसार? *Verse* Substance—country made paper Leaves—75 Size—5½ x [illegible] inches [illegible] '02 slokas. Appearance—new [illegible] Place of deposit—Bhatta D[illegible]

Ashtavakra.—Dealing with some of the principles of Vedántism by one Mohana, who lived at Mathura and composed this book in Samvat 1667 (1610 A D) when Jahángíra was on the throne of Delhi The manuscript is dated Samvat 1714 (1657 A.D)

Beginning—स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥ अष्टावक्र मोहन कृत लिख्यते ॥ चौपाई ॥ नमो आत्मा सहज सनेही ॥ ॥ परमानन्द प्रगट घट देही ॥ आपा एक अनेक दिखायो ॥ ठोर ठोर ले मनु विरमायो ॥ आपे रंकु आप भूपाला ॥ आपे तरुन विरध भय वाला ॥ आपे पुरष आप ही नारी ॥ आप माहि मिल कीन्ह विन्हारी ॥

End—दोहा ॥ जो यह वाचे जो सुने उपजै अमित तरङ्ग ॥ मोहन भेटे भावता सहज सनेही सग ॥ २०० ॥ चौपाई ॥ सोलहसै सतसठा सुनाहा । सावन पडवा बुध दिन राहा ॥ जहागीर आदिल कर राजू । अकबर तन साहन सिरताजू ॥ राइ रंक को नहि समताई ॥ रान सुजसु थिरु सदा रहाई ॥ आप आप मग जो जिहि भावे । कोउ काहू को नहीं चलावे ॥ सभे पथ मनही कर तारा ॥ जो सरता निधि मिलहि अपारा ॥ देस सकल राजे जो देही ॥ जो मथुरा पुर कीय सनेही ॥ सदा नगर थ्यो गुन इइ नाचा ॥ पिन अमिति महि थके साचा ॥ २०१ ॥ दोहा ॥ मोहन मथुरा महि बसे कीनो कथा बनाइ आप रूप पुरन सकल समझो सहज सुभाइ ॥ २०२ ॥ इति श्री सहज सनेही अष्टावक्र मोहन कृत सपुर्णं ॥ ॥ रघुनाथ ॥ सवत् १७१४ फागुन बदी ० सनि वासरे लिखित मिश्रि जगत राइ विधीचन्द पाठार्थे लेषक पाठकयो शुभ ॥

Subject—तत्व विचार का अद्वैत वेदान्त, माया वाद प्रभृति के अनुकूल ग्रन्थ है ॥

Note.—जहागीर के समय में मथुरा में रह कर "मोहन" ने (जिनका उपनाम सहज सनेही प्रतीत होता है) सवत् १६६७ में श्रावन की पडवा को यह ग्रन्थ बनाया ॥

यह प्रति स १७१४ आश्विन बदी ० को लिखी गई थी ॥

No 5—चण्डी चरित्र *Verse* Substance—country made paper Leaves—66 Size—$8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches Lines—15 on a page Extent—928 ślokas Appearance—new Complete. Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Bhatta Divákara Ráya's Library, Gulera district Kángrá.

Chandí Charitra.—Translation of the Durgá Pátha by Gurú Gobinda Singha (Born 1666) the tenth and the last gurú (Padasáha) of the Sikhas. He was a great soldier and composed good verses in Braja bháshá The manuscript is dated Samvat 1880 (1823 A D) This book is divided into two parts called Chandí Charitra ukta vilás and Chandí Charitra Nátaka.

Beginning—ॐ श्री गणेशायनम ॥ ॐ मगल भगवान विष्णु मगल गरुडध्वज ॥ मगल पुडरीकाक्ष मगलायतनो हरी ॥ ॐ श्री गणेशाय नम ॥ अथ चडी चरित्र उक्त विलास लिख्यते ॥ भाषाकृत कवि श्री गुरु गोबिन्दसिघ जी ॥ सवैया ॥ आदि अपार अलेष अनन्त अकाल अभेष अलेष्य अनासा ॥ कै शिव शकति दय स्तुति चारि रजोतम सत तिहू पुर बासा ॥ दिवस निसा ससि सूर के दीपक सृष्टि रची पचि तत्त प्रकासा ॥ बैर बढाइ लराइ सुरासुर आपहि देखत आप तमासा ॥ १ ॥

End—सवे राग कोई ॥ तिसे सर्व कुप्यान कोप न होइ ॥ १ ॥ दोहरा ॥ जे जे तुम्हे ध्यान को नित उठि ध्यैहे सत ॥ अति लहैंगे मुकत फल पावहिंगे भगवत ॥ ॥ श्री मारकडे पुराणे-श्री चडी चरित्र नाटक उसतति बरनन नाम अष्टमो ध्या ॥ ८ ॥

मग्रताका मपुर्ण ॥ सवत् ॥ १८८० ॥ फाल्गुण सुदी ॥ सप्तमी ॥ रविवार मनाति ॥ १७ ॥ लिख्यं राजाराम पडित कश्मीरी ॥ पठनार्थ देवीदत्त ब्रह्मभट्ट साग गोरखाल ॥ मार्ट्डाणीरोग ॥ शुभंमस्तु ॥ श्री राम ॥ राम जी ॥

Subject—वास्तव में ये दो ग्रन्थ हैं—"चडी चरित्र उक्त विलास" और "चंडी चरित्र नाटक"। ग्रन्थकार एकही प्रतीत होता है। नाटक का आदि यो है॥ नराज छन्द। महिष्य देत सूरयं यठयो मुलोह युध। सुदेवराज जीतय॥ विलोकलोकलोकय॥ भजे सुदेवता तजे॥ इकत्र होइ के सबे॥ .... ॥ यहां भी अध्यायो का क्रम और नाम वैसाही है॥

Note—ग्रन्थ बनने के समय का पता नहीं लगता, किन्तु गुरु गोविन्दसिंह जी इसके रचयिता हैं जिनका जन्म सन् १६६६ में हुआ था॥ यह प्रति सवत् १८८० फाल्गुण सुदी सप्तमी रविवार को लिखी गई थी॥

No 6—सिंहासनबत्तीसी *Verse* Substance—country made paper Leaves—124 Size—8 x 5½ inches. Lines—20 on a page. Extent—2 822 slokas. Appearance—new Incomplete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Bhatta Divákara Ráya's Library, Gulera, district Kangrá.

Sinhásana Battísí—Thirty two stories told to Bhoja The name of the author appears to be one Gangá Ráma.

Beginning—ॐ श्री गणेशायनमः॥ ॐ अथ सिंहासनबत्तीसी लिष्यते॥ दोहा॥ ॐ शिव सुत को प्रनवें सदा करहु सीस निवाई॥ सिया आदि देवी जपों सब वरदानी माई॥ तिहि प्रसाद कथनी करो हर्ष चित्त उपजाई॥ नालकंठ पिय हरष सुत विक्रम को जस गाई॥ चौपई॥ दक्षिण देश उजैनी नगरी॥

End—चौपई॥ सुनहु भोज इह विक्रम कीना॥ पर कारण को इह व्रत लीना॥ तब विक्रम अपने ग्रह गयो॥ द्विज अपने ग्रह सुख सो भयो॥ धन धन राजा पर उपकारी॥ मत घृत को देही धारी॥ विक्रम सम जो करणी काने॥ तजह सिंहासन पर पगु दीजे॥ सोइसवा पुतरी बोल सुनायो॥ गगा राम प्रगट जस गायो॥ इति विक्रम सर्वधनी चर्यासवीं कथा सपूर्णम्॥ शुभम्॥

Subject—पुतलियो द्वारा कहा गई ३२ कथाओं की सुप्रसिद्ध सिंहासन बत्तीसी का अनुवाद॥

Note—कुछ पता नहीं चलता। ग्रथकार का नाम गगाराम प्रतीत होता है॥

No. 7—कनक मञ्जरी *Verse.* Substance—country made paper Leaves—21 Size—7¾ x 5 inches Lines—21 on a page. Extent—484 slokas Appearance—old. Complete. Generally incorrect. Character—Devanágarí Place of deposit.—Bhatta Divákara Ráya's Library, Gulera, district Kángrá

Kanaka Manjarí—The story of Kanaka Manjarí, wife of Dhana Dhira, a merchant of Rajnapura. It is a love story describing the unsuccessful attempts of Rajkumára to seduce her in the absence of her husband The name of the author is Kási Ráma who wrote it for Rajkumára Lakṣmi Chanda. The exact date of the composition of the book is not given but it must have been composed between 1623 and 1777 A.D as the poet makes mention of Tulsí Dása, who

died in 1623 A.D, and as the date of manuscript is Samvat 1834 (1777 A D) Probably he is the same Káśí Ráma whom Dr Grierson mentions to have been born in 1658 A. D and to have attended the court of Nizámat Khán, Subedár of Aurangazeb

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कनक मंजरी कथा कवि कासी राम कृत लिखितं उम सागुडा । दोहा । गनपति गोविन्द गुरु चरन सेई सुमति उपजाई ॥ भजन ॥ भरोसे चतौ के कविता रचित बनाई ॥ १ ॥ छप्पै ॥ विदित वीर पृथीराज राज दिल्ली थिर थप्यौ ॥ रोपहान अधकाइ बंदी वर चन्द समप्यौ ॥ आठ अधक सत यक सग सामत सजत नर । सुभट जोत रनधीर विमल कीरत मुकरि अंबर । सबहु चक्र आन चोहान कुलु तेज भान सुभ ··· गयो । मृगया विनोद चहू कोद बस वसु वितरन सुप भुगयो ॥ २ ॥ दोहा ॥ विधि वसठि (हलो ?) तपत तजि समरथ पत जगाई । कोयो राज राजो कोय उतम धरन बनाई ॥ २ ॥ उमराई राई निजि हूँ रहो रनाई राजि ॥ ३ ॥ छुद्र दमन छोनी छमी छिति छवि जिन्हैं सुहाई ॥ ४ ॥ कवित्त ॥ राजा होत जब तक जानिय रजाई बडो राई भय राई ही को कीरत पकति है ॥ राजा होत जानिय रनाई समरूप को न भूपर अनूप जिह महिमा पकति है ॥ दे दे उमराई दिलिपत दिल जोई करे सहाई आप उर में बकति है ॥ (पृष्ठ २) जाहि जाहि पदवी को चढ़ो चहुआन अब ताहि ताहि पदवी सु आपही बढ़ातु है ॥ ३ ॥

End—दोहरा । सुक सारिका सब सुप रहे साह जोर कर कंज । नप चूमें निजु नारि के लागे उर अनुरंज । हिलि मिलि विथा विरह की मेटी ॥ भुज भर कनक मंजरी भेटी । करी केल बहु विधि मन भाई ॥ निरख लजात काम रति राई ॥ उतम चरित्र कथा सुनो कुंअर सु लछमीचंद ॥ कविता कासीराम की कीनी परमनंद ॥ बाजिराज सिर पाउ दे आदर सहित समान । धरणासन बहु भूमि दे यसि यकही सनमान ॥ इति श्री महाराज कुमार लछमीचन्द विरचितं कवि कासिराम उतम चरित कनक मजरी कथा समाप्तं शुभं ॥ लीपतं उम सागुडा समैयो प्रसाद कवि अदर्थे प्रति ॥ समत नृपति १८३४ ॥

Subject.—रतन पुर में धनधीर साह की कनकमंजरी स्त्री थी ॥ जब साह समुद्र यात्रा को गया तो एक तोता और सारिका उसको बहलाते थे । एक बेर स्नान करती बेर काग उसका हार ले उडा । उसे देख कर राजकुमार आसक्त हो गया और कई चतुर दूतियों में से एक चतुर अनूप दूती उसे ढूंढने चली । यह भिक्षा मागने आई और दुःखिनी से भीख न लेने के मिस उसके पति के प्रवास का हाल कनक मंजरी से जान गई । दूसरे दिन पान मिठाई बांटने लगी । कनक मंजरी के पूछने पर उसने चिन्ताहर की पूजा करनेवाली एक तपस्विनी का प्रसाद बताया और उसे चिन्ताहर की पूजा के प्यारे से मिलने का भरोसा दिया । सारिका ने रोका किन्तु फटकारी गई । दूसरे दिन एक और दूती को तपस्विनी बनाकर पूजा को ले जाने का विचार किया । सारिका सलाह देते पीटी गई, झूठे आप फोडने का मिस किया । पूजा को तयार होने पर तोते ने महावर डाल दिया और कनक मंजरी को रजस्वला बताकर पांच दिन ठहराया । पांचवें दिन—

चिन्ता हर मठ में नाई बसे ।
भजन भावना के मग लसे ॥
पीया गय न द्वारका, बदरी गय न बचौर ।

भजन भावना में मिले, तुलसी से रघुबीर ॥ कह कर घर में पूजा कराई । तोते ने अपनी व्याध तथा विद्वान के घर रहने की कथा कह कर कुसंगति और जल्दबाजी का बुरा परिणाम बताया । फिर जब अनूप आई तो "चिन्ताहर घटमाहीं" कहने वाली

कनक मंजरी से चहुस मे हार कर राजकुमार की सलाह से एक नाव बनवा लाई। सारिका ने अपने दृष्टान्त से उस पर चढने से रोका। फिर सिंहलपुर की फ़ौज ले आने की डौंडी राजकुमार ने पिटवाई। अनूप ने कनक को पति के पास जाने को तयार किया किन्तु आरी और सारिका ने छींक मार कर रोक दिया। साहूकार के आने की खबर उड़ने पर राजकुमार ने हार की गवाही से कनक को कलङ्कित करने की धमकी दी किन्तु तोता हार को ले उड़ आया। दूती के नाक कान काटे गए। प्रेमिक प्रेमिका मिले।

Note—यह प्रति सं० १८३४ में लिखी गई है। काशीराम ने राजकुमार लक्ष्मीचंद के लिये यह बनाई थी, और इन्होंने इसका पुरस्कार पाया था। भाषा कुछ पुरानी है। दोहों की चाल भी पुरानी है। सम्भव है कि इस कथा के 'राजकुमार' और पृथ्वीराज के वंश के "मृगया विनोद" राजा और लक्ष्मीचन्द में कोई सम्बन्ध हो। कई शब्दों के लिहाज से यह कवि इस देश का भी हो सकता है॥

No 8—योगवसिष्ट *Verse* Substance—country made paper Leaves—24 Size—$5\frac{1}{4} \times 4$ inches. Lines—13 on a page. Extent—253 ślokas Appearance—new Complete Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Bhatta Divákara Ráya's Library, Gulera, district Kángrá

Yoga Vasista—An abstract translation of Yoga Vásiṣta The name of the author is not given. The date of the manuscript is probably Samvaṭ 1714 (1657 A.D), as it is bound in the same volume which contains other manuscripts written in that year

Beginning—स्वस्ति श्री गणेशायनमः॥ योग वसिष्ट लिख्यते॥ दसो दिसा त्रैकाल निरंतर प्रभु बसे पूर्ण ब्रह्म प्रकास घट घट माहि है॥ आपे ही सों आप आप सुहावणा। नमस्कार करि ताको सोधु नियावणा॥ १॥ हो यथ्य कैसे मुक्त हो दूसरो नाहि संयोगु॥ ना अति मूर्ख ना चतुर यह सास्त्रु निहियोगु॥ २॥

End.—काष्ट महि जो पुतरी सदा निरंतर वासु॥ त्यों जग सदा अव्यक्त तें बने बने परकासु॥ ३०॥ जैसें सागर ते लहरि लहरी होइ न नासु॥ तैसे सम अगु मून ते मूनें माहि समाइ॥ ३१॥ इति श्री योग वसिष्ठ को भाषा दसम प्रकरण समाप्त॥ १०॥

Subject—रामचन्द्र और वसिष्ठ के सम्वाद रूप से जगत् की तत्व विवेचना के ग्रन्थ योगवासिष्ठ का संक्षिप्त अनुवाद १० प्रकरणों में है।

Note—ग्रन्थकार का नाम नहीं मिलता। न समयही है। यद्यपि ग्रन्थान्त में प्रति की तारीख नहीं दी है तथापि उसी ग्रन्थ में 'अष्टावक्र गीता' है जो सम्वत् १७१४ की लिखी हुई है॥

No 9—रामायण *Verse.* Substance—English made paper Leaves—253 Size—$13\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines—9 on a page. Extent—4,705 ślokas Appearance—new Complete Generally incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—The Library of the Mahárájá of Benares.

Rámáyana.—The story of Ramachandra by Gomaṭi Dása Vairágí of Avadha. The book was written in Samvaṭ 1915 (1858 A.D) and the manuscript copy was made in Samvaṭ 1921 22 (1864 65 A.D)

Beginning—बालकांड आरम्भ॥ श्री मते रामानुजायनमः॥ सोरठा॥ गन नायक सब गुन सदन। बुद्धि दाय सुभ खानि॥ अथ सुभ देव अनादि हौ॥ सास्त्र करत परमान॥

॥ १ ॥ चैापाई ॥ सकर सुत सब को सुष दाता ॥ गवर तनय कीरति विप्याता ॥ सो अब कृपा करो लघुनानि ॥ सीतापति कोरति मन मानि ॥ सकर सरीस श्रोर हित नाहिं ॥ उमा जो सहित बसो उर माहि ॥ सब प्रकार अपनो मोहि जानो ॥ रघुपति चरित मोर मन मानो ॥ सो अब प्रभु को वात ननाईउ ॥ राम चरन फिर फिर सिर नाईउ ॥ ब्रह्मादिक सनकादिक गाये ॥ सो मुनि के सुष सतन पाये ॥ जा मुनि चित मोर अब लाग्यो ॥ कीजिये कृपा तो होहु सभाग्यो ॥ सेस सारदा होहु दयाला ॥ नारद सहित करो प्रतिपाला ॥ पुनि जो सबे रिषिन सिर नाऊ ॥ सोतापति कीरति अब गाऊ ॥ गुर अब दयाल सजे हितकारी ॥ रघुपति चरन कीयो अधिकारी ॥ दोहा ॥ सीतापति मन में बसे लषन लाल हित जानि ॥ हनुमत अब अनुकूल है। सो में करत बषानि ॥ ३ ॥ सवत उनईस से पचदस। श्रावन चितिया जानि ॥ शुक्र पक्ष गुरवार को राम चरित करो गान ॥ ४ ॥ सरजू सुरग की सिढि है ॥ अवधि नित्य सुष धाम ॥ गोमतीदास विचारि के ॥ कोनो जहां विसराम ॥ ५ ॥

End—सोरठा ॥ गोमतीदास विचार ॥ रघुपति जस गावत भये ॥ उतर को है सार ॥ जानो अति कन्यान में ॥ अभ्यागत अब जानि ॥ रहते सजूं निकट में ॥ सतन कौन प्रमान ॥ दीन जानि अपनो करो ॥ मीतो सावन वदी ॥ १२ ॥ सवत ॥ १६२२ ॥

Subject—श्री रामचन्द्र का इतिहास ॥

Note—ग्रथकर्त्ता गोमतीदास वेरागी अवधवासी। निर्माण काल सवत् १६१५ श्रावण शुक्ल ३ गुरुवार। लिपिकाल सवत् १६२२ सावन वदी १२।

No 10—रामचरित मानस मुक्तावली *Prose* Substance — country made paper Leaves—488 Size—14 × 7 inches Lines—15 on a page Extent —27,020 ślokas. Appearance—somewhat old Incomplete Generally correct Character — Devanágarí Place of deposit—The Library of the Mahárájá of Benares.

Ramacharita mánasa Muktávalí — Annotations on the Rámacharita mánasa of Tulsí Dása by some disciple of Śivalala Páthaka. The manuscript copy was made by several persons. The first book was written in 1890 (1833 A D) and the other books were written in 1915 (1858 A D)

Beginning—बालकांड मगलाचरण ॥ श्री जानकी वल्लभाय नम ॥ श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नम ॥ श्री सुमित्रा नदनो जयति ॥ चो० ॥ श्री गुरु चरण सरोज प्रणामा ॥ अभिमत फल दायक अभिरामा ॥ जो जग सकल सुकृत कर टीका ॥ जेहि कीन्हे सब ही कर नीका ॥ १ ॥ (इसी प्रकार दे। पत्ते तक है तीसरे पत्ते में कुछ व्याख्या सहित गोसाई जी के श्लोक वर्णानामार्थ इत्यादि, फिर चतुर्थ पत्ते से गोसाई जी के सोरठे की टीका है) येहि सुमिरत सिधि होइ—इत्यादि ॥ १ ॥ श्री रामायनमः टीका ॥ येह सुमिरत सिधि होइ ॥ येहि देवता के सुमिरत मात्र सिद्धि होति है ॥ गन नायक जो आपु ऐश्वर्य सो गन नायक कहे ॥ करि वर बदन फेरि आप स्वरूप सो करि वर बदन हैं ॥ बुद्धि रासि ॥ फेरि जो आपु स्वभाव सो बुद्धि के रासि हैं ॥

End.—कौशल्या सुत भव देव सदसो दोर्व्यद्धतैनैादोत ॥ कौतुस्वोचीत रूप सील सुभगेकन्यघने साधने ॥ सोमोचोतरतोय सजु समनश्चेतेषिसे पुनोता ॥ सानोकोजन के स्वरेण सहित साकेतनाथोपिस. ॥ ३ ॥ नतिरमितमहीम्ने वेद दुर्गेय सीम्ने सोव कपोत गरीम्ने कोशलेन्द्रात्मजाया ॥ अनदिनमघि रात्र कोटिसोनतसो धा मम बदन

मनोभ्यामस्तु कायेन चापि ॥ ४ ॥ संवत ॥ १६१४ ॥ पुष माघे कृष्ण पक्षे द्वीतीयां बुध वासरे लीखित समाप्तम ॥ अतिम पृष्ठ को पीठी उत्तर कांड समाप्त संपुर्ण मङ्गल दुर्गा के रोज बुध के सन १२६६ साल माह ।

Subject.—श्री तुलसीकृत रामचरित मानस पर टीका ।

Note.—टीकाकार अपने नाम के विषय में सर्वत्र यही लिखते हैं कि "श्री जानकी रामचरणपरायण शिवलाल पाठक के शिष्य कृत" । पुन कांड एक व्यक्ति के लिखे नहीं जान पड़ते, पहिला कांड संवत् १८८० का लिखा है और शेष कांड १६१४ के लिखे हैं ॥

No 11—रुक्मिणी मंगल *Verse* Substance—country made paper Leaves—8 Size—9¾×6¼ inches Lines—21 on a page Extent—190 ślokas Appearance—old Complete Correct Character—Kaithi Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rukmini mangala—The story of the marriage of Rukmini with Krisna by Narahari Bháta. He is probably the same Narahari (1550 A D) who attended the Court of Akbar and who according to tradition was instrumental in inducing Akbar to put a stop to cow killing in his Râj

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ प्रथमहि लीजे नाम परम सिधि पाइये ॥ गनपति गौरि मनाइ सो मंगल गाइये ॥ जे सारद को नाम सो सिधिहि मनाइये ॥ सुर नर मुनि गनदेव तो जगपति पाइये ॥ भुपति भायम राउ से कुदन पुर वसे ॥ ताको कन्या रुकु मिनि सेहे तिरदसे ॥

End—छन्द ॥ तारे जो कुछ सब भांति अपने कहे सुने जो गावई ॥ कल्यान काज विवाह मंगल सर्वदा सुख पावई ॥ इह कथा परम पुनीत मनुष्य जो नर करि चित लाइया ॥ नरहरि महा जो पाइ सब विधि परम पद सो पाइया ॥ शुभमस्तु इति श्री रुकुमिनी मंगल नरहरि भाट विरचित समाप्त शुभमस्तु रस्तु ॥

Subject—श्री रुक्मिणी कृष्ण विवाह वर्णन ।

Note—ग्रंथकर्ता कवि नरहरि भाट हैं । इनका विशेष कुछ पता नहीं है ।

No 12—बालमुकुन्द लीला *Verse.* Substance—country made paper Leaves—107 Size—10×4½ inches. Lines—9 on a page Extent—2,250 ślokas Appearance—ordinary Incomplete Generally correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Bálamukunda Lílá—The translation of the first half of the tenth canto of Bhágavat dealing with the life of Krisna Chandra by one Bhisama Kavi.

Beginning—श्री रामायनम ॥ श्री गणेशायनम ॥ दनोत्ता । हेरम्ब प्रणवस्य मूर्ति सतत बुद्धिप्रद प्रस्फुट विघ्नध्वंसकर गजेन्द्रवदन लम्बोदर सुन्दर ॥ यस्येह यदुनन्दनस्य चरित विघ्नप्रदाकर्णेयात्मर्येण सुप्रसन्नप्रति नित्यं सद्भावप्रपाल्यते ॥ १ ॥ (इसी प्रकार दो पन्नों में मंगलाचरण के १२ श्लोक हैं इन्हीं में कुछ महाराज मोरवडसिंह का भी वर्णन है उसके पीछे भाषा कविता है) कवित्त ॥ दंडक ॥ येदि झलकत झलकत भाल विधु भाल सेंदुर लसत मानों भानो भोर वेष को ॥ मद जल झरत लसत अलिवृन्द सुंड कुंडली करत मन हरत महेस को ॥ भीषम भनत ऐसो ध्यान जो धरत नर लेसु न रहत उर कुमति कलेस को ॥ शंकरे सहायक सकल सिद्धि दायक समस्थ सुभ सत्य पग पुनिये गनेस को ॥ १३ ॥

End —बाजि विचित्र विचारि कै कान्ह सो धाइ कह्यो सब गोप कुमारन ॥ श्रातुर ताहि तहां लषि कै बटिबे कें लगे हरि ब्योंत बिचारन ॥ पीठ पै कामरी ज्यौं धरि कै चढि कै चित चाहे कसाइनि मारन ॥ त्यौं गहि गाष श्रकास चल्यो पल कै छल कान्ह कें दूरि श्रडारन ॥ ६ ॥ दोहा ॥ केस पकरि घनस्याम तब ताकी मुष भुज मेलि ॥ लिये काढि श्रतापरी गयो केसियो पेलि ॥ ६६ ॥ ताहि मा .. ..
(आगे पत्र ही नहीं है)

Subject —पूर्वार्द्ध दशम भागवत मे श्री कृष्ण लीला ।

Note —ग्रंथकर्ता कवि भीषम है ।

No 13 —बाहु सर्वाग *Verse.* Substance—country made paper Leaves —22 Size—7 × 3½ inches. Lines—7 on a page Extent—208 ślokas Appearance—ordinary Complete. Incorrect. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Bahusarvánga —Praises of the monkey god Hanumána by the celebrated Tulsí Dása (Died 1623 A D) The manuscript is dated Samvat 1882 (1825 A.D)

Beginning —श्री गणेशायनम. श्रथ बाहुसर्वाग गात पिर मोचनो ॥ दोहा ॥ श्री रघुबीर प्रनाम करि सहित लषन हनुमान ॥ राषि हिदै बिस्वास दिढ पुनि पुनि करौ प्रनाम ॥ १ ॥ भोमवार श्रादिक पढै जो नर सहित सनेह ॥ रुज संकट ब्यापै नाहिं बाढ़े सुष धन गेह ॥ २ ॥ सुचि सनेह पठहि नर निरुज गात बलवान ॥ होइ है रत तुलसी पद लष पद है सब ठाम ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ श्री राम कृपालु बिराजत मध्य महा छवि धाम गहे धनुबाना ॥ बाम दिसा महिमा सुठि सुन्दरि दछिन श्रोर लषन बलवाना ॥ चामर पान लिये प्रभु के ढींग ठाये तनै हनुमाना ॥ तुलसी हिदै धरु ध्यान सदा भ्रम संसय त्यागि कहो परिमाना ॥ ४ ॥

End —राम नाम पितु बधु सजन गुरु पुज्य परमहित ॥ साहेब सषा सुजान नेह नाते पुनीत चित ॥ देस कोस परि वार धरनि धन धाम धरम गति ॥ रान काज सब सान राजत समान श्रति ॥ स्वारथ परमारथ सकल सुलभ राम ते श्रमित फल ॥ कहु तुलसिदास श्रब सब दिनन्ह एक राम ते मोर भल ॥ ४८ ॥ श्रथ मंत्र ॥ श्रों हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा ॥ इति मंत्र ॥ इति श्री बाहुसर्वाग तुलसीदास कृत हनुमान स्तोत्र संपूर्णम् ॥ संवत् १८८२ मिती बैसाष कृष्ण नैाम्याम् ६ चन्द्र वासरे शुभमस्तु ॥ दसषत सोवरतन पांडे भृगुलो घाम ॥

Subject —हनुमान जी का स्तोत्र ।

Note —श्री गोस्वामी तुलसीदास जी कृत है । लिपिकाल संवत् १८८२ बैसाख कृष्ण ६ चन्द्रवार है ॥

No 14 —काव्यकलाधर *Verse* Substance—country made paper Leaves—105 Size—8½ × 4½ inches. Lines—20 on a page Extent—2 560 ślokas. Appearance—old. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kávyakaládhara.—A book on Hindi rhetoric by Raghunátha Bandijana, who was the court poet of Mahárája Barivanda Singh of Banáras. He composed this book in Samvat 1802 (1745 A.D) The manuscript is dated Samvat 1835 (1778 A.D) (See No 15)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ सुफल होति सब कामना मिटत बिपन के दुंद । गुन सरसत बरसत हरष सुमिरत लालमुकुंद ॥ १ ॥ कवित्त ॥ अर्थ धर्म काम मोक्ष कहै कवि रघुनाथ चारि य पदारथ महानदी में लहिये । सिद्धि सिद्धि बुद्धि की विरिद्धि होति दिन दिन विद्या और बल विवसाय लै ज्यो चहिये ॥ सतरो मझति जग कीरति पढ़त सुष मानिय कहत चाह मोद महा गहिये । तरन के सुर को बसाति है न कहूं प्यारो गुर के चरन को सरन आइ रहिये ॥ २ ॥ .. ..

अट्ठारह से द्वै अधिक संवत सर सुखसार । काव्य कलाधर को भयो कातिक मे अवतार ॥ २५ ॥ सं० । १८०२ कार्तिक ॥

End—मोट्टाइत लक्षन ॥ दोहा ॥ पकु हिये गुर लोग की दरसन चाहै चित्त ॥ प्रीत भीत सग वर्जिये हाव सो मोट्टाइत ॥ २१४ ॥ उदाहरने यथा ॥ चेरो ह्वै तेरो रहौंगी सदा अरु तोहि हितू नक ऊपर लेखौं । तेरी कही मैं करौंगो सदा अरु तो उपकार हिये अवरेखौं । प्यारो रह्यो न सुन्यो जब सो रघुनाथ दो गेह के आसनि भेखौं । लेउ उपाइ अनो करिये कछु मेरी गली हरि आवै मै देखौं ॥ २१५ ॥ श्री कवि रघुनाथ बंदीजन काशी निवासी विरचिते काव्य कलाधरे विभाव अनुभाव संचारी अस्थाई नवरस हाव वर्णन नाम चतुर्दस मयूषः ॥ १४ ॥ शुभमस्तु संवत् १८३५ मितो आसनो मासे शुक्ल पक्षे गुरु वारे के समुरनः ॥ ॥

Subject—नायिका भेद अलंकार आदि ॥

Note—ग्रन्थकर्त्ता बंदीजन कवि रघुनाथ हैं । ये महाराज बरिवंडासिंह के आश्रित थे । ग्रन्थ का निर्माणकाल कार्तिक संवत् १८०२ और लिपिकाल आश्विन शुक्ल ४ गुरुवार संवत् १८३५ है ।

No 15—श्री राधा कृष्ण विलास *Verse.* Substance — country-made paper Leaves—120 Size—11 × 5½ inches. Lines—8 on a page. Extent—2 500 ślokas Appearance—old. Incomplete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Srí Rádhá Krisna Vilása—A book on Hindi rhetoric with special reference to the description of the beauty of Rádhá and Krisna. The name of the author is Gokulanátha (see No 2 of 1900), who was the son of Raghunátha Bandijana. Gokulanátha was appointed Superintendent of the Charity Department by Mahárája Barivanda Singha, and when later on Mahárája Udita Náráyana Singha succeeded, he wrote this book in Samvat 1858 (1801 A.D) with his permission The Banáras Ráj family is said to have been founded by one Manasá Ráma, who by his intelligence and craft succeeded in winning over the then Nawáb of Avadha. The manuscript is dated Samvat 1860 (1803 A D)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री विन्ध्याचलनिवासिन्यै नमः । सिंदुर भरो मुखद वक्र दंत सोहै मानो जग जगदीस ताको दीसे वडो रती को । सिद्धि लय सिद्धि लयं सुमति समृद्धि लय लंबोदर लानो है सदन सरस्वती को । चारों फलदायक सहायक सकरे को सेइये चरन ऐहे मन महा मति को । गोकुल कहत महादेव को लडायतो है गनमुख चंद्रभाल लाल पारवती को ॥ १ ॥ .. ..

वसु सर वसु विधु माधव मास अमंद । ग्रंथ कह्यो प्रारंभ लहि पूनो पूरन चंद ॥ ८६ ॥

End—सोरठा—नौबी लेहु सभारि कोऊ किनारी को करत । अवहु न निधि अधियारि हरवराइ हाले चलो ॥ १६ मोट्टाइत लक्षन । सकुच हिय गुरलोग को दरसन चाहत चित्त । प्रीति

भाँति सग वर्णनियं हाय सो मिट्टाइन ५० यथा—नद को लाल जसोदा को नदन चंदन सो सिगरी जगती को। दुष्टनिकंदन ददन रापत देपतही उनके मनही को। गोकुलनाथ है साथ सखानके कालिंदीपै चित चोरन ती को। पाय परो चलि आय देपाय दे सावरे रग को डांवरो नोको १४ सोरठा। री सखि मोहि देपाय यह नदन नटराय को। लपट आटि चलि जाय लाल निगोडी चपनतें २१ इति श्री कवि गोकुलनाथ कासीनिवासी विरचिते राधाकृष्ण विलासे हाव वर्नन नाम द्वादसो विलासः १२ श्री' सवत् १८६० मिती श्रावण मासे कृष्ण पक्षे पचम्या बुध वासरे श्रीः शुभमस्तु कल्यानरस्तु ग्रंथ श्लोक सख्या ५५०० श्री विन्ध्याचलनिवासिन्ये नमः ओं नमो सूर्य नमः ॥

Subject.—श्री राधा कृष्ण चरित्र सयुक्त नायिका हाव भावादि वर्णन का काव्यग्रन्थ ॥

Note—ग्रन्थकर्त्ता कवि गोकुलनाथ काशी निवासी हैं-ये रघुनाथ कवि के पुत्र थे जो महाराज काशीराज महारामजी के समय में यहां आए और उनके पास रहे। फिर महाराज चरिवंडसिंह के समय में कवि गोकुलनाथ को दानाध्यक्ष का अधिकार मिला और फिर जब महाराज उदितनरायणसिंह राजपदाधिकारी हुए तब उनकी आज्ञा से यह ग्रन्थ इन्होंने बनाया। निर्माण काल १८५६ चैत्र शुक्ल १२ और लिपिकाल स १८६० श्रावण कृष्ण ५ बुधवार है ॥

No 16—ज्ञानप्रदीप *Verse* Substance — Foolscap paper Leaves — 7 Size—9 x 5 inches Lines—9 on a page Extent—125 ślokas. Appearance—old. Complete Incorrect Character — Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Gyána Pradípa—Praises of God by Gangá Ráma Tripáthí, who wrote this book in Samvat 1846 (1789 A D) The manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A D)

Beginning—श्री गणेशायनमः । कुंडलिया ॥ राजत मन मोहन मुदित श्रीघन स्याम स्वरूप ॥ पीत वसन भृकुटी कसन सुदर हसन अनूप ॥ सुदर हसन अनूप रूप अति उतम छाजे ॥ मनु तारागन गोपि मध्य मुख चद्र विराजे ॥ सेवक सुलभ दयाल नामकरुणा निधि छाजत ॥ कृष्णचद जगदीश माधुरी मूरति राजत ॥ दोहा ॥ श्री वृन्दावन रवन प्रभु कृष्णचंद नद नन्द ॥ चरन कमल युग वदि रज करो दूरि दुख दद ॥

End—कुडलिया ॥ गंगाराम त्रिपाठि द्विज मालवीय विख्यात ॥ कीन्हो ज्ञानप्रदीप यर विमल ग्रन्थ अवदात ॥ विमल ग्रन्थ अवदात जहा हरि भजन निरतर ॥ कीन्हो मति मति छद नाम लीन्हो बिनु अतर ॥ जाते कोनिहु भांति लेय हरि भजन प्रसगा ॥ ध्यायो सो हरि चरन जहाते प्रगटी गगा ॥ दोहा ॥ अष्टादश शत अरु अधिक छालिस सवत् माह ॥ भयो ग्रन्थ भादों सुदी चतुर्दसी गुरु काह ॥ इति श्री गगाराम कृत भाषा ज्ञानप्रदीप समाप्त ॥ सवत् १८५७ कातिक सुदी ६ चंद्र ॥

Subject—भगवद्ज्ञान।

Note—कर्त्ता गगाराम त्रिपाठी मालवीय हैं। निर्माणकाल सवत् १८४६ भादों सुदी १४ गुरुवार और लिपिकाल सवत् १८५७ कातिक सुदी ६ चद्रवार है।

No 17—आनदाम्बुनिधि *Verse.* Substance — Śivarampur made paper Leaves—688 Size—17 x $5\frac{1}{2}$ inches Lines—10 on a page Extent—28,350 ślokas. Appearance—new Complete Generally correct Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Ánandámbunidhi.—Translation of the Bhágavat Purána by Mahárája Raghurája Singha of Rewáh, who completed it in Samvat 1911 (1854 A. D.) He took four years in completing this translation.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजाबहादुर श्री कृष्णचंद्र कृपापात्राधिकारी रघुराजसिंहजूदेव कृत आनंदाम्बुनिधि लिष्यते। सोरठा। जय हरिपद अरविंद भक्त भृंग आनंद कर। मयतु सुजस मकरंद कुमति कुरता ताप हर १ छप्पै। भय भय भंजन करन पुर मन काम दहन के। तीर्थास्पद विधि संभु सदा मुनि ध्येय मनन के। प्रनतपाल भवसिंधु सेतु जेहि सुर मुनि गावें। जाकी सेवा होइ भक्तजन मुक्ति न ध्यावैं। कलि कुमति हरन असरन सरन भक्ति भरन सुख प्रद नरन। अघमोचन हरन आपद हरन वंदौं श्री जदुवर चरन १ दोहा। तजि सुर दुरलभ संपदा पितु सासन धरि सीस। विपिन कीन्ह्यौं गमन जयति राम जगदीस १ कवित्त। भार ते पीड़ित भू को त्रिलोकिके से प्रगटे मथुरा में मुरारी। लीला अनंत करी ब्रज में दुष्टदाई अनेकन मारि सुरारी। द्वारका औ मथुरा में बसे प्रभु दासन को सब भांति सुधारी। ते जदुनंदन के पद वंदत है रघुराज सदै सुखकारी ॥ १ ॥

End.—दोहा। यह सुष मे जिमि कहि सकौं बिनु त्रिभुनाथ प्रभाउ। जासु कृपा तें मोहु सम रच्यो ग्रंथ भरिभाउ ६ चौपाई। सुद्ध असुद्ध भयो जो होई। सुमति सुधारि लिहो सब कोई। १ मे भागवत अर्थ सब लीन्ह्यो। तेहि अनगुन भाषा करि दीन्ह्यो २ हरिजसहु अब भारत आदी। औरहु बहुत पुरान मजादी ३ गर्ग संहिता आदिक केरी। कथा रची जो जो मति मेरी ४ कहु कहु तेहि सनमत बिचारी। मै लिषि दियो सुमति अनुहारी ५ कृष्ण चरित अति सुषद बिचारी। सुनहु सुमति यह बिनय हमारी ६ मै अति करिकै मनहिं ढिठाई। जो कछु रच्यो सो दियो बनाई ७ पै अस मन मे अहै भरोसू। हरि जस सुनि कोउ करो न रोसू ८ सज्जन प्रीति सहित मुद मोई। आनंद अंबुधि ग्रंथहि जोई ९ पढै सुनै जो प्रीति समेतू। भागवत दास समान सहेतू १० तिनको बहु है मोर प्रनामा। मोपर कृपा करहि मति धामा ११ टेहि करिहि यह बिनय सुनाई। रघुराजहि लीजे अपनाई १२ दोहा। जय रघुपति जदुपति जयति रघुनंदन जदुराज। मो मन अपने बस करहु बिनै करत रघुराज ० इति सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज बांधवेस बिस्वनाथ सिंहात्मज सिद्धिश्री मन्महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा बहादुर श्री कृष्णचंद्र कृपापात्राधिकारि रघुराजसिंह कृते आनंदाम्बुनिधौ समाप्त शुभमस्तु ॥ ० ॥

Subject.—श्रीमद्भागवत के द्वादश स्कंधो का छन्दोबद्ध अनुवाद।

Note.—ग्रंथकर्ता महाराज रघुराजसिंह रीवाधिपति हैं। जिसने इस पुस्तक को आदि में लिखा उसका नाम हनुमान है। ये महाराज के मंत्री के घरान थे।

निर्माणकाल—संवत् ओनइस से सुपहत्तर। साल साल को सरस सुहावन ८ कातिक मास आरंभहि कीनो। आनंद अंबुधि ग्रंथ नवीनो ९ रचत बीतिगे बरषहि चारी। कियो कृपा करि पार मुरारी १० ओनइस से ग्यारह को साला। पुस मास गुरुवार बिसाला ११ कृष्णपक्ष दसमी सुषदाई। धन की जब संक्रांतिहि आई १२ आनदअंबुनिधिहि सुभ ग्रंथा। जो सतान सतत सत पंथा १३ तब यह ग्रंथ समापत भयऊ। मम बांछित पूरन हुै गयऊ १४ दोहा। सत्य सत्य मे कहत हौं दोउ हाथ उठाय। मेरी नहि करतुति यह सब कीन्ही जदुराय ४।

No. 18.—श्रीमद्भागवत माहात्म्य *Verse*. Substance—country made paper. Leaves—69. Size—11 × 6 inches. Lines—12 on a page. Extent—200 ślokas. Appearance—new. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śrimadbhágavat Mahátmya.—Translation of an extract from the Padma Purána dealing with the virtues of reciting the Bhágavat by Mahárája Raghurája Singha of Rewáh, who wrote it in Samvat 1911 (1854 A.D.)

Beginning.—श्रीगणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ जेजे रघुकुल कमल रवि जे राघस कुल काल। जेजे भुव भार हरन नवल नोप नदलाल १ जे बानी दानी सुमति जयति भवानी नद । जेजे पितु विसुनाथ पद जे हरि गुरु मुकुद २ जे सुक जो जनमत समै ज्ञान विज्ञानहि पाय । चल्यो कृष्ण ध्यावत मनहि लह्यो व्यास पछिआय ३ पुत्र पुत्र कहि जाहि को गुहरावत मुनि जात । सब सथल व्यापित भयो उतर तरू दिय तात ४ सो सुक के जुग पद कमल मे धरि के निज माथ । श्री भागवत महात्म को बरनत हो मुद गाथ ५ सुदर पदुम पुरान के हैं अध्याय चैाबीस । ताको भाषा रचि सुपद पुर करौ जगदीस ६ चै। ० नीमषार छेत्रहि यक काला । बैठे सैानक बुद्धि बिसाला १ कियो सूत सो प्रश्न सुधारी । कृष्ण कथा को सुनन विचारी ॥ २ ॥

End.—दोहा । सुनत भागवत सात दिन होती मुक्ति विसेषि । यामे भूप परिछित साखी लीजे लेषि १ हरिमुष ते प्रगट भयो यह रस रूप पुरान । पाठ करत जो जन नित होत सो सम भगवान २ सब सिद्धातन सार यह तुम सो कियो बषान। छोडि भागवत जगत मे मुक्ति उपाइ न आन ३ ले प्रथमहि असकध ते अरु द्वादस परजत । पान करहु रस भागवत हे सैानक मतिमत ४ नारद रिषि भागवत के ब्रह्म बीज मतिवान । भक्ति सक्ति छदहु ग्रहति जदुपति देव न आन ५ कीलक ग्यान विराग हे कृष्ण प्रीति विनियोग । यहो मत्र पढि जात है यदुपति पुर सब लोग ६ यह भागवत महात्म को सुने पढे चित लाय । तासु पाप जरि जात हे अतसि परमपद जाय ७ रुद्र षड ससि सवते आमा सुर गुर वार । मास फाल्गुन भागवत भो महात्म अवतार ८ इति सिद्ध श्रीमन्महाराजाधिराज बाघवेस विश्वनाथसिहात्मज सिद्ध श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा बहादुर श्री कृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि रघुराजसिह जू देव कृते आनदांबुनिधो पद्म पुरानीय श्री भागवत माहात्मे चयोनिससतरग ॥ २ ॥ श्रीभागवत महात्म सपूर्ण ॥

Subject.—पद्मपुराणोद्धृत श्रीमद्भागवत माहात्म्य का कविता में भाषानुवाद ॥

Note.—यह ग्रन्थ महाराज रघुराजसिह रीवाँधिपति कृत है । निर्माण काल स १९११ फाल्गुण कृष्ण ३० गुरु वार है ॥

No 19.—रामाश्वमेध *Verse*. Substance—country made paper Leaves—194 Size—12¼×6 inches. Lines—12 on a page Extent—6 000 ślokas. Appearance—old Complete Incorrect Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Rámáswamedha.—Translation of the Pátála Khanda of Padma Purána, dealing with the Horse sacrifice by Ráma Chandra, king of Ajudhyá. The name of the author is Hari Sahaya Giri of Mirzapur, who composed the book in Samvat 1859 (1802 A.D.) The date of the manuscript is Samvat 1860 (1803 A.D.) The author gives a detailed account of himself in the beginning of the book which has been quoted in full in the "beginning" There are two copies of this book in this Library The second copy has 158 leaves and is 13½×7¼ inches in size.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरु चरन कमलेभ्योनमः ॥ श्री सीता रामाय नमः ॥ श्री सियाय नमः ॥ श्री देव्यै नमः ॥ श्री हनुमद्देवाय नमः ॥ श्लोका लिष्यते ॥ सकलमनोरथदात्रीधात्री जगतामुरसुराराध्या ॥ विनयरप्रत्यवकला यदा विन्ध्येश्वरी ज-

यति ॥ १ ॥ श्रीमद्राम शिरोवर्ते तत्समीपे विराजते ॥ मिरिजापुरनामाद्यं पुरं तु गिरिजा पुर ॥ २ गंगा तटे तिष्ठति विमलं शोभितं जनसंकुलं ॥ सर्वैश्वर्यसंपन्नं सर्वलोकमनोहरं ॥ ३ यत्र सन्यासिनः सिद्धा वसन्ति शिवपूजकाः ॥ ज्ञानिनो निर्ममाः शान्ता दान्ता भेदविवर्जिताः ॥ ४ ॥ साधवो निर्मला शान्ता यत्र सन्ति विरागिणः । शिव शक्ति रमारामभेदज्ञानाभिशक्ता ॥ ५ ॥ वेदशास्त्रयापि शैवाश्च शाक्ता गाणिका तथा ॥ महात्मानो महाधीरा अद्वैतपारःपरस्परं ॥ ५ ॥ ब्रह्मण्याः पण्डिता यत्र गुणवन्तश्च भूरिशः ॥ श्री मद्राम प्रसादाद्याः यन्द्र ब्रह्मनिष्ठधियः ॥ ६ ॥ बहुना किमिहोक्तेन यथा शास्त्रमिदस्तथा । यत्र सर्वे यथान्यायं स्वकर्मेण्या चरन्ति हि ॥ ७ ॥ तत्रैवदयागिरेः शिष्यो वस्तावर गिरः स्मृतः ॥ भोलागिरिस्तु तच्छिष्यस्तस्य शिष्यो महामतिः ॥ ८ ॥ श्री सुग्रीवगिरिः ख्यातः सर्वसद्गुणमंडितः । यस्य कीर्तिर्महावृद्धे. शोभिते क्षितिमंडले ॥ ९ ॥ रामाश्वमेधिक कथा कथिता पुरा या वात्स्यायना यहि सहस्र मुखाहि नाह ॥ तच्छिष्य शिष्य इह चित्तमुदे नियद्धां तां भाषया हरिसहाय गिरिः करोमि ॥ १० ॥ यत्पुर्वं मुनिना कृतं सुकविना व्यासेन ॥ शेषेन वत्सप्रोक्त हयमेधक प्रमुकृतं वात्स्याना याहृतं ॥ तद्वत्या चितनोति रामचरितं सद्भाषया भाषितं । श्री मद्राम प्रसादतो हरिसहायाद्यो गिरिश्चन्मुदे ॥ ११ ॥ भाषा प्राकृत संस्कृत सद्भाः सन्तिर्निर्मिताः प्रौढैः ॥ ममतु शिशोः श्रममेतं दृष्ट्वा तुष्यन्तु सज्जनाः सरलाः ॥ १२ ॥ यदि दास्यसोऽह दोषं तदपि खलो मेधिकं सुहृद्विला ॥ यस्मात्स्वदोष वस्तुनिदोषं नाशो कदापि भवते ॥ १३ ॥ सोरठा ॥ बुध बिहारि भुज चारि ॥ गन नायक गज वर बदन ॥ सिद्धि कारि भय हारि ॥ बंदौ शिव सुत विघ्नहर ॥ १ ॥ बंदौ पद नद नद गोपपति करुनाई तन ॥ त्रिभुवन कुमुद सुप चंद वेद बखान्यो मीन हूं ॥ २ ॥ बंदौ दसरथ नंद सीतापति रावन दुपद ॥ भूमि रूप सुपकंद भूमि धर्यो निज पीठ पर ॥ ३ ॥

End—छंद हरिगीता ॥ फल चारि लहिहैं नारि नर सियराम कृत गुन गाय के ॥ तिहू काल कुसल बिसाल जस रहिहैं छमा पर छाइ के ॥ बहिहैं जो यह रघुवर कथा सुनि हैं जो कोउ मन लाइ के ॥ भव विभव भोग विनास करि वसिहैं ते हरि पुर जाइ के ॥ १ ॥ श्लोक ॥ नवधराष्टमहोमितवत्सरे सवितवाश्विनसद्दशमी तिथौ ॥ हरिसहाय गिरिर्हयमेधजा व्यधितुरामकथां नरभाषया ॥ १ ॥ इति श्री पद्मपुराने पातालखंडे सेषवात्स्यानसंवादे हरिसहायगिरिकृते रामचंद्र अश्वमेध संपूर्नं सुभमस्तु श्रियमस्तु संवत् ॥ १८ ॥ ६६ ॥ मीती भादो वदी ॥ १ ॥ वार सुभ ॥ श्रीः सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम ॥ ६६० ॥ दोहा सुमार ॥ श्लोक गिन्ध ६००० ॥ श्री सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम ॥

Subject.—श्री. रामचन्द्र के. अश्वमेध यज्ञ का वर्णन. १ पद्मपुराण. पाताल. खंड से. उद्धृत और अनुवादित ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता हरिसहायगिरि मिरजापुर वासी है । इन्होंने अपना विशेष हाल आदि के श्लोकों में लिखा है । इसी लिये वे उद्धृत कर दिए गए हैं । निर्माण काल संवत १८९३ आश्विन शुक्ल विजया १० और लिपिकाल संवत १८६६ भादों वदी १ मंगलवार है ।

No 20—रामभक्तिप्रकाशिका *Prose and Verse*. Substance—country made paper. Leaves 141 Size—14 × 6 inches. Lines—8 on a page Extent—600 ślokas. Appearance—ordinary Complete. Correct. Character—Deva nágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Benares

Rámabhaktiprakáśiká.—Annotations on the Ráma Chandriká of Keśava Dása by Jánakí Prasáda, who wrote the book in Samvat 1872 (1815 A.D) The manuscript is dated Samvat 1874 (1817 A.D)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ कवित्व ॥ फुडलित सुड गंड गुजत मलिंद फुड चन्दन बिराजै सुड अद्भुत गति को । बाल ससि भाल तीनि लोचन विसाल राजै कनि गन माल सुभ सदन सुमति को । ध्यावत बिना ही श्रम लगावत न वार नर पावत अपार मोद भार धनपति को । पाप गन मदन को बिघन निकंदन को आठो याम बंदन करत गनपति को ॥ १ ॥ ... .

चचला छंद ॥ नैन मुरज वाजि सिद्धि निशीस सवत चारु ॥ शुक्र सयुत शुक्लपच सुरेस पुलि चारु ॥ चारु दिति थि हस्त तार वरिष्ट योग नवीन ॥ राम भक्ति प्रकासिका अवतार तादिन लीन ॥ १० ॥

End.—मूल ॥ रूपाकांता छंद ॥ अशेष पुन्य पाप के कलाप आपने बहाइ ॥ विदेह राजज्यों सदेह भक्त राम को कहाइ ॥ लहै सो मुक्ति लोक लोक अतमुक्ति होइ ताहि ॥ कहै पढै गुनै जो रामचद्र चद्रिकाहि ॥ ४० ॥ इति, श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणि श्रीरामचद्र चद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां कुशलव समागमो नामैकोनचत्वारिंशत् प्रकाश ॥ ३९ ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री

टीका ॥ कलाप समूह ॥ पुन्य पाप के नाश सो मुक्ति होति है यह वेदांत को मत है ॥ अथवा इन के धारन सो प्राप्त जो यज्ञादि को अशेष सपूर्ण पुन्य है तासों पाप के कलाप बहाइ के ॥ ४० ॥ कवित्व ॥ कैधो सुभ सागर विराजमान जामें पैठि पावत परम पदारथ की राशिका ॥ कठ में करत सोभ धरत सभा के मध्य कैधों सोहै माल उर विमल उपासिका ॥ सेवही जाको लहै सुमन प्रवीनताई जानकी प्रसाद कैधों भारती हुलासिका ॥ ज्ञान की प्रकासिका मुकुतिप्रद काशिका है सेइय सुजान राम भगति प्रकासिका ॥ १ ॥ दोहा ॥ राम भक्ति उर आनि के राम भक्त जन हेतु ॥ रामचद्रिका सिधु मे रच्यौ तिलक मय सेतु ॥ २ ॥ जो सुपथ तजि सेतु को भूलहि और मग जोर ॥ रामचद्रिका सिधु को लहहि कौन विधि ओर ॥ ३ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननि जनक जानकी जानकी जानि प्रसादाय जन जानकी प्रसाद निर्मितायां रामभक्ति प्रकासिकायामेकोनचत्वारिंशत् प्रकाश ॥ ३९ ॥ सवत्सरे १८७४ चैत्र मासि शुक्ल पक्षे तिथौ नवम्यां गुरु वासरे पुस्तकमिदं समाप्तिमगमत् ॥

Subject—केशवदास कृत रामचद्रचद्रिका पर तिलक ॥

Note—ग्रन्थकर्ता तो रामचन्द्रिका के केशवदास हैं । टीका के अन्त में टीकाकार अपना नाम "जानकीप्रसाद निर्मितायां" ऐसा लिखते हैं । टीकाकार ने आदि में यह भी लिखा है कि विस्तार भय से मैंने केवल कठिन शब्दों के अर्थ किए हैं । टीका सवत १८७२ की लिखी है और ग्रन्थ का लिपिकाल सवत १८७४ है ।

No 21—श्रीरामचद्रचद्रिका *Verse* Substance—country made paper Leaves—185 Size—12×7 inches. Extent—3 410 ślokas Appearance—new Complete. Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Śri Ramachandra Chandriká—The story of Ráma Chandra's life by the poet Keśava Dása, who composed it in Samvat 1658 (1601 A D) There are three manuscripts of this book in the Library of the Mahárája of Banáras. The second manuscript has 231 leaves is 11×6¾ inches in size and is dated Samvat 1882 (1825 A D) The third manuscript has 100 leaves, is 13½×6 inches in size and is dated Samvat 1888 (1831 A.D) No date is, however, given of the manuscript under notice.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रामचंद्रचंद्रिका लिख्यते ॥ दंडक ॥ बालक मृनालनि ज्यों तोरि डारै सब काल कठिन कराल ये अकाल दीह दुख कों ॥ बिपत हरत हठि पद्मिनी के पात सम पंक ज्यों पताल पेलि पठवै कलुष कों ॥ दूरि के कलंक अंक भव सीस ससि सम राखत है केसोदास दास के बपुष कों ॥ सांकरे की सांकरनि सनमुख होतहीं तो दसमुख मुख जोवै गजमुख मुख कों ॥ १ ॥

End—घिमला ॥ अशेष पुन्य पाप के कलाप आपने बहाइ विदेह राज ज्यों सदेह भक्त राम को कहाइ । लहै सुभक्ति लोक लोक अंत मुक्ति होइ ताहि पढै गुनै कहै सुनै जु रामचंद्र चंद्रिकाहि ३६ इति श्रीमत्सकललोचनचकोरचिंतामनि श्रीरामचंद्रचंद्रिकायां केसवदास विरचितायां जग्य पूर्ण वर्णनं नाम ऊनचत्वारिंशः प्रकाश ॥ ३९ ॥ समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ रामनाम ॥ रामनाम ॥

Subject—रामचरित ॥

Note—ग्रंथकर्ता केशवदास हैं । ये जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे । इनके पूर्वज कृष्णदत्त मिश्र थे । इनके पुत्र गणेश, उनके काशीनाथ, और इनके केशवदास हुए जिन्होंने इस ग्रन्थ को बनाया है । इसका निर्माण काल सं० १६५८ कार्तिक सुदी बुद्धवार है । इस ग्रन्थ की दो और प्रतियां इस पुस्तकालय में हैं जिनमें से एक संवत १८८२ और दूसरी संवत १८८८ की लिखी है ।

No 22—अनुभव पर प्रदर्शनी टीका *Prose and Verse.* Substance—country made paper Leaves—319 Size—12½ × 9½ inches. Lines—24 on a page. Extent—9,165 ślokas Appearance—ordinary Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Anubhava para pradarśanī ṭīká—Annotations on the 12 books of Kabira Dása by Mahárája Viswanátha Singha of Rewáh (1834 A.D) The manuscript copy was made in Samvat 1905 (1848 A.D)

Beginning—श्री गणेशायनमः दोहा । श्री हरि गुरु प्रिय दास जे मन बच कर जे राम ॥ जे हनुमत जे सिव सिवा जे सरसुति अभिराम १ श्री कबीर जे साधु सब जे जानत गुरु भेद ॥ बीजक की टीका करत विस्वनाथ हर खेद २ कथनी अकथ कथेउ पढनी यहि को कोई विचारी ॥ भजन क्रिया जो लिपी करिहि जो सो परधाम सिधारी ३ अनुभव परे प्रदर्शनि नामा टीका मुनिहि जो गेहै । विस्वनाथ परधाम परेस प्रभु तेहि सब ठौर दियेहै ४ जेतने भर कबीर जी के ग्रंथ हैं ते भर यही बीजक की मत ले के बने हैं याते यह बीजक सब ग्रन्थ केर बीजक है याते याको बीजक नाउ है और सार सब्द बरनन कियो है याते या बीजक सब ग्रन्थन को सार है तामें प्रमान कबीर जी को—चौदह भरव थान हम भाषा सार सब्द करि लपर राषा—सार सब्द जो रामनाम है ताको बीज नाम सब सास्त्रन में बरनन है ताको बीज को थान यामें बरनन है याते याको बीजक कहे हैं औ प्रथम को उत्पत्य यामें है याते आदि मगल जो है कबीरजी को सो यही बीजक को मंगलाचरन है यह जानि के आदि मंगल यह बीज में लिखि दियो है ॥

End—साषी घोये घोये सब जग बोरा है अगुवा को साथ । कहै कबीर पैट जो बिहारो बन का आवै हाथ ३६६ अर्थ ....
(यहां पर इन साखी की टीका है तब यह लिखा है)

सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्री महाराज श्री राजाबहादुर सीता रामचंद्र कृपापात्र-

धिकारी विस्वनाथसिंघ जू देव कृत पापड पंडनी टीका समाप्त सुभमस्तु ॥ श्लोक ॥ पापड पडनी नाम टीकेय परमात्मा प्रेरणात् विस्वनाथेन विस्वनाथ प्रकासिता। दोहा। बीजक ग्रन्थ कबीर की कहरा साखी ज्ञान। गुरु मूल लखि तिलक किय श्री विस्वनाथ सुजान। लहि विस्वनाथ रजाय सुभ रामनाथ परधान। लिष्यो आपने हाथ ते साषी सब्द महान ॥ इति साषी सपूर्ने मिती असाढ सुदी ६ सुक्रे का संवत १६०५ के साल ॥

Subject—कबीरदास के निम्न लिखित बारह ग्रन्थों की टीका है। अर्थात् (१) आदिमंगल वा बीजक (२) रमैनी (३) शब्द (४) ककहरा (५) बसंत (६) चौतीसी (७) विप्रमतीसी (८) बेलि (९) चाचरि (१०) हिंडोल (११) विरहुली (१२) साषी।

Note—टीकाकार महाराज विस्वनाथसिंह जी भूतपूर्व रीवाधिपति हैं। निर्माण काल नहीं दिया है। लिपिकाल संवत १६०५ आषाढ़ शुक्ल ६ शुक्रवार है।

No 23—श्री सीताराम गुणार्णव रामायण सप्तकाण्ड *Verse* Substance—country made paper Leaves—352 Size—11×7 inches. Lines—15 on a page Extent—4950 ślokas. Appearance—ordinary Complete. Generally correct Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Śrí Sítárāma Gunarnava, Rámáyana Sapta Kánda.—Translation of the Adhyátma Rámáyana by Gokula Nátha Bandījana. (See No 15) The manuscript is dated Samvat 1906 (1849 A D)

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री सीता रामायनमः ॥ दोहा चरना ॥ एक रदन गज बदन विनायक लंबोदर ससि भाल ॥ विघन हरन भरताभरत गौरी नंद विसाल ॥ १ ॥ हरो भूमि को भार यर सागर बाधो सेत ॥ देत चारि फल राम सो चरन चित्त में लेत ॥ २ ॥ जगत जननि श्री जानकी जाप राम हिय धाम ॥ सेवहु तासु सरोज पद पूर्ण करिहि मन काम ॥ ३ ॥ रामगीतो ॥ फिरत नारद लोक में सब करि अनुग्रह धर्म ॥ सत्य लोकहि गय क्रम ते सत्यपूरित घर्म ॥ तहा देख्यो मूर्ति धारें बेद सेवत जाहि ॥ बालकि कैसी प्रभा पूरित सभासद नहि चाहि ॥ करत अस्तुति मारकंडे आदि मुनि मति धाम ॥ बाकदेवी सरस्वती सो पास अति अभिराम ॥ जगत कर्ता चतुर्मुख को तहा लखि मुखदान ॥ दंडवत परनाम करि मुनि कियो सुस्तव गान ॥ १ ॥ प्रसन ह्वैके कह्यो ब्रह्मा बचन नारद पास ॥ कहा बूझो चहत हो सो कहहु मुनि मति रास ॥

End—अध्यात्म रामचरित्र है यह आदि काव्य ललाम ॥ ब्रह्मादि सुरवर कियो अस्तुति परम जे गुन धाम ॥ सहित श्रद्धा सुने जन्मैं मरे नहि पुनि तौन ॥ सुद्ध ह्वै हरि बदन को सो करे मनुज सुगौन ॥ इति श्री बंदीजन काशीवासी रघुनाथ कवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथ कविना कृत उमा महेश्वर संवादे श्री सीता राम गुणार्णवे उत्तरकांडे नवमस्सर्गः ९ उत्तरकांड समाप्त शुभमस्तु मी ॥ आषाढ कृष्ण द्वितिया तिथौ गुरवासरे लिपि संवत् १९०६ सन् ११५६ फसलो ॥ श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्री राम राम राम राम राम राम ॥

Subject—अध्यात्म रामायण का अनुवाद जान पड़ता है क्योंकि कवि कई जगह अध्यात्म का नाम लेता है।

Note—ग्रन्थकर्ता कवि रघुनाथ बन्दीजन हैं। लिपिकाल मिती आषाढ कृष्ण २ गुरु वार संवत् १९०६ सन ११५६ फसलो है।

No 24—वाल्मीकि रामायण श्लोकार्थ प्रकाश *Verse* Substance—country made paper Leaves—222 Size—13¼×7¼ inches. Lines—9 on a page

Extent—3 900 ślokas Appearance—new Complete Correct Character—Devanágari Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Válmíki Rámáyana Ślokártha Prakása.—Translation of the first book and five chapters of the fourth book of Válmíki's Rámáyana by Ganeśa Kavi, son of Guláb Kavi. He flourished in 1800 A.D

बालकांड ॥

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री रामायनम ॥ गिरजा सुत गिरजा सहित सदि कालिका देश ॥ हनुमान मुनि ग्रंथ कृत यानि राम जगदीश ॥ १ ॥ कवित्त ॥ बुद्धि के निधान के प्रधान काव्य कारन में दीबे परदान ऐसे परम हमेस के ॥ दुग्ग ते दूरि भूरि भूषण से पूरि पूरि भूषण समेत हेतु नवो रस वेश के ॥ मनत गनेश छन्द छन्द मे ललाम रूप भूप मन मोहे मोहे पंडित सुदेश के ॥ ग्रंथ परि पूरण के कारण करोंव हार दोजिय निवाहि नेम मदन महेश के ॥ १ ॥

सुंदरकांड ॥

End—विरह जैसे याय ग्रय में याय करि उतरे है ॥ लखि परत जैसे है नहीं नेह याय करि अति भग्न है ॥ ऐसे तरह की जानुकी हनुमान ताहि न देखियो ॥ जेहि विरह करि अति राम के चित होत कष्ट विशेषियो ॥ १० ॥ दोहा ॥ राम मनुज पति को प्रिया सिया न लखि हनुमत ॥ कवि हूटत यह बेर लगि दुखित भए अनत ॥ २ ॥ इति श्री बाल्मीकीय रामायण श्लोकार्थ प्रकाशे महाराजाधिराज उदित नारायण कारिते गणेश कवि कृते बाल्मीकीय रामायणे सुंदर काडे पंचम सर्गः ॥ ५ ॥

Subject.—बाल्मीकि रामायण के पूरे बालकाड और सुंदरकांड के ५ सर्गों का अनुवाद ॥

Note.—लाल कवि के पौत्र गुलाब कवि के पुत्र गणेश कवि कृत। ये महाराज उदित नारायण के आश्रित थे और उन्हीं की आज्ञा से इन्होंने यह अनुवाद किया था। निर्माणादि काल का पता नहीं है ॥

No 25—कोशलपथ *Verse.* Substance—country made paper Leaves—236 Size—13 × 6½ inches. Lines — 11 on a page Extent—5,310 ślokas. Appearance — old. Incomplete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kosala Patha.—Translation of a Sanskrit book called Kola Kalpa (?), describing in details the scenes from Ráma Chandra's life as described in the second book of Válamíki's Rámáyana. The name of the author is Rudrapratápa Singha who composed this book in Samvat 1877 (1820 A.D) at village Mándavya on the banks of the river Ganges

Beginning—..... ... रवहु सुकुमारू ॥ कार्य सकल मची सिर राखी ॥ आपुन अंतःपुर अभिलाषी ॥ प्रथमहि कैकेइ गृह आये ॥ दीप पानि भृत्या चलिकाये ॥ करत प्रसस सचिव गण भूरी ॥ बोलत प्रतिहारिन पुर दूरी ॥ मध्य कक्ष ते सबो गैते ॥ गये माम मंदिर कद तैते ॥ केकेइ प्रतिहारिय थाई ॥ गृहप रानि को सारूव नाई ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कोप सदन पुनि कम्पु किमि निमि करि सिंह निहारि ॥ केदली साल सुरिंद सम मानहु वाता धारि ॥ १ ॥

End—दोहा ॥ गुहते नहि हिंसिक परम पशुते बुद्धि न थोर ॥ पुरजन नहिं गणिका करिस सरिस अनामिल मोर ॥ ६ ॥ चौ० ॥ एक एक गुण शादि माधा ॥ हो धारिह गुण गुन नरनाहा ॥ ताते सांचित होहु दयाला ॥ को कलुषी मो सरिस विशाला ॥ महा भार नहिं पोत बिराजू ॥ केहि बाहन कद अंक जहाजू ॥ पलाहारि बहु मृग समुदाई ॥ केवल

हरि मतंग घरि खाई ॥ मो ऋघ शैल उठावनि हारो ॥ केवल शर्गि तुम अनुर्थविहारी ॥ ताते सकल अमर तजि भारे ॥ भजउ तुमहि अघ खवँड निहारे ॥ दीन जानि लपि आपन आशा ॥ मेटहु मोर घोर बहु त्रासा ॥ यक सहस वसु सत नग साता ॥ विक्रमार्क सवत् विख्याता ॥ ५६ ॥ दे० ॥ भरत खण्ड महि द्वीप धर जम्बु श्रुति विख्यात । दुहियावर्त सुभूमि के करी कथा यह जात ॥ दे० ॥ कोल कल्प केशव कथा करी से कोशल पंथ ॥ हरि भूरि कल्पित नहीं श्रुति द्विजोक्त सत ग्रन्थ ॥ से० ॥ हिंद वश्य यहि काल युंड भूर प्रख्यात महि ॥ किंग राम महिपाल ॥ पालत मेदिनि मनु सरिस ॥ दे० ॥ तीरथ अमर नदी भुपद कल्कि रूप किल राम ॥ पुत्य देव किल चण्डिका मनु यक रघुवर नाम ॥ छन्द ॥ निज मति निहित हरि नाम गान पुराण मत सोही करी ॥ जिमि भाष पुर्वहि भर्ग बूभेउ हेतु सादर शंकरी ॥ रघुवीर किंकर मृत्य किंकर केर अनुग कहावउँ ॥ यावत रहो महिमाह तावत नाम तव नित गांवउँ ॥ दोहा ॥ द्विवो दास कुल ख्यात महि नृप पेश्वर्य विशाल ॥ रुद्रप्रताप सु तस्य सुत वर्णउ चरित कृपाल ॥ ६ ॥ इति श्री स्वसिद्धान्तोत्तमे रामखण्डे श्री रुद्रप्रतापसिंह विरचिते कोशलपथे देश भूमि पुर महात्म वर्णने नाम सप्तचत्वारिंशो विश्रामः ॥ ५६ ॥ ६ ॥ २ ॥ १ ॥

Subject—रामायण अयोध्याकाड का सविस्तर चरित्र ।

Note—ग्रन्थकर्ता रुद्रप्रतापसिंह है । इन्होंने इस ग्रन्थ को विन्ध्याचल के निकट गंगा के दक्षिण तीर पर माडय्यग्राम मे रचा था और स्यात् यह राजा भी कहलाते थे—सवत् १८८० के विक्रम साल में यह ग्रन्थ बना है—यह कोई संस्कृत ग्रन्थ कोलकल्प नाम के ग्रन्थ का अनुवाद है ॥

No 26.—नखशिख केशवदास कृत *Verse.* Substance—country-made paper Leaves—16 Size—$6\frac{1}{4}\times5\frac{1}{4}$ inches. Lines—21 on a page Extent—300 ślokas. Appearance—old. Complete Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Nalhasikha Keśava Dása Krita.—Description of the different parts of the body by the celebrated Keśava Dása (1600 A.D) The manuscript is dated Samvat 1853 (1796 A.D)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ केशोदास कृत नष सिष लिष्यते ॥ दे० ॥ सविता के परताप ज्यों वरने कविता अग । कहे यथा मति वरनि त्यों वनिता के प्रत्यंग १ कही सु पुरन पडितनि जाकी जितनी जानि । तितनो अब ती अङ्ग को उपमा कहैं बषानि २ नष तें सिष लैं। वरनियै देवी दीपति देषि । सिषतें नष लो मानुषी केसवदास विशेषि ३ ॥

End.—अन्यच्च : छप्पै : क: ॥ महि मोहन मोहिनी रूप महिमा रुचि रूरी मदन मंत्र की । सिद्ध पेम की । पद्धुति पूरी जोवन भूरि विचित्र किधौं जगजोय मिष की । किधौं चित्त की वृत्ति मित्त अभिलाष चित्त की केसव परमानंद की । आनद सकति किधौं वरनि आधार रूप भव धरनु कौं राधा व्रज बाधा हरन को ६५ इति श्री केसवदास कृत नखसिष लिष्यते सपुर्न कासी जी मध्ये रूपचंद गैाड सवत् १८५३ मिती आषाढ शुद्ध ४ वुधवासरे ॥

[१३ पत्र में यह समाप्त होगया आगे इसके ३ पत्र में और भी केशवदासहा का कुछ कविता का सग्रह है । प्राय: कवित्त है] ।

Subject.—नख से शिखा पर्यन्त प्रत्यंग की शोभा का वर्णन ॥

Note—प्रसिद्ध कवि केशवदास कृत—लिपिकाल सवत् १८५३ मि० आषाढ शुद्ध १४ ; बुधवार है ।

No 27.—श्री राधा नखशिख *Verse* Substance — country-made paper Leaves—16 Size—6¼ x 5 inches Lines—17 on a page. Extent—280 ślokas Appearance — old. Complete. Correct. Character — Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Śri Rádhá Nakha Sikha.—Description of the different parts of the body of Rádhá by the poet Dwija. The manuscript is dated Samvat 1855 (1798 A.D) This poet is not the Dwija *alias* Manna Lal of Benares.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधा मोहन प्रिया वृंदावन सुखधाम ॥ द्विज कवि तुव वरनन करै नख सिख छवि अभिराम ॥ १ ॥ चरन यः ॥ वयुत वरन मान हरन लषा के केधौं याके विद्ररोचन रुचिर सुधरत है । जावक समेत अनुराग के निकेत केधौं रजोगुन के छवि देत विहरत है । कहै द्विज कवि मषमल्तो मृदुल नीके याही बीच विद्रुम कठोरता धरत हैं । सोवन दिनेस की मयूषन परसि गेरे पद तामरस तामरस निदरत है १ ॥

End.—कमल कमन रम खंभ मे उलटि धरे गुरज जुगल दोष केहरी नसत है । सुधारस पेरकारो लर मखतूल डारो सीफल मृनाल कंबु सोभा सरसत है । सुमन गुलाब विव मदन मुकर फोर खंजन कमान उपमान परसत है । द्विज कवि जान कही राधिका सुजान छवि मेरे जान चंद ढिग नागिन लसत है ६२ इति श्री द्विज कवि कृत लिष्यते समाप्त श्री काशी मध्ये रूपचंद गौड संवत् १८५५ मो० वैसाष सु० ७ सोम ॥

Subject.—नख से शिखा पर्यन्त शोभा वर्णन ॥

Note.—द्विज कविकृत । लिपिकाल संवत् १८५५ वैशाख शुक्ल ७ सोमवार है ॥

No 28.—प्रेम तरंग चन्द्रिका *Verse.* Substance — country-made paper. Leaves—37. Size — 6¼ x 4¾ inches. Lines — 13 on a page. Extent—600 ślokas Appearance — old Complete Correct. Character — Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Prema Taranga Chandriká.—The description of the different kinds of affection by the poet Deva (1620 A.D) The manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A.D).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ देवकवि कृत प्रेमतरंगचन्द्रिका लिष्यते ॥ मंगला चरण सवइया ॥ आलिन आलि लगाय रहे मुनिये धुनि कानन कों सुखकारी ॥ देव रही हिय मे धरकें न रुके निसरे विसरें न बिसारी ॥ फल मेरा सु ज्यों मूल सुवास को है फल फूलि रही फुलवारी ॥ प्यारी उज्यारी हिये भरिपूरि सुढ़ारि न जोवन मूरि हमारी ॥ १ ॥

End.—दोहा ॥ भक्ति भाव आसक्तिहूं नेह काम अनुराग ॥ पेर सना वात्सल्यहू हरिहि मिलत वड भाग ॥ ६२ ॥ देव दीनबन्धु दयासिंधुपादि के सहाई हूं अवधु की मर्यादा सुफाई है ॥ ज्यु हिरण्यकशिपु विडार्‌यो नरसिंह हूं दयार्‌यो प्रह्लाद सेना सुप यो सुफाई है ॥ रावन को राम हूं पठायो दिव्य धाम हूंके वामन पताल गति वलि को सुफाई है ॥ को करें प्रससा घनस्याम जदु जदुवंसालय कंसादिक वैरी घोर घसागिनि वुझाई है ॥ ६३ ॥ श्री राधा हरि चरन जुग देव देव अधिदेव ॥ दुःख हरौं सेवकनि के गुरु चरनन की सेव ॥ ६४ ॥ इति श्री देवजी कृत प्रेमतरंगचन्द्रिकायां चतुर्थ प्रकाशः ॥ ४ ॥ लिषितं ईश्वरीप्रसाद गौड ब्राह्मण काशी जी मध्ये अपने पठनार्थं । श्री संवत् १८५७ मिती वैशाख शुक्ल ॥ १ ॥ प्रतिपदा वार गुरउ शुभं भूयात् ॥

Subject.—प्रेम का स्वरूप, प्रेम कैसा और कितने प्रकार का होता है—इत्यादि का वर्णन ॥

Note.—प्रसिद्ध कवि देवदत्त कृत—लिपिकाल संवत् १८६० वैशाख शुक्ल प्रतिपदा गुरु वार है।

No 29—कल्कि चरित्र *Verse* Substance—country made paper Leaves—74 Size—$7\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches Lines—10 on a page Extent—1 310 ślokas Appearance—old Complete Correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Kalki Charitra—The story of the Kalki (24th) incarnation of Viṣṇu, which is yet to take place by Prāṇanātha Trivedi who composed it in Samvat 1765 (1708 A.D) The manuscript is dated Samvat 1849 (1792 A.D).

Beginning—ॐ सिद्धि श्री गणेशायनम ॥ दोहा ॥ एक रदन करिवर बदन सिद्धि सदन गिरिलाल ॥ विघ्न विनाशन विरद सिर सुभासन गुन माल ॥ १ ॥ धारक धारन वदन कहि सुमत ध्यान त्रिकाल ॥ सेमे दोषक देहलो भोतर मन्दिर सुकाल ॥ २ ॥ नराच ॥ भवा नि विध्यवासिनी अखंड जे प्रकासिना उदंड पाप नासिनो सुबुद्धि सिद्धि की भरै ॥ करै महाप रक तें प्रमाण मेरु पक्ष ते हरै त्रिनाक्ष सक्र ते कटाक्ष नेकहू ढरै ॥ जपै निसक नाम को बडे विनोद धाम को पुजे समस्त काम को अगाध सिंधु उद्धरै ॥ महा गुमान गंजिनी विशाल शोक भंजिनी नमामि प्राण रंजिनी कृपालि पाहि किंकरै ॥ ३ ॥

End—दोहा ॥ केहू विधि कलकी कथा परै जु श्रवननि माहि ॥ श्रोता वक्ता भगत जन श्रपि कर नरक न नांहि ॥ इति श्री श्री कलकी चरित्रे भवानी भविष्यते कथन म्लेछ न विध्वसने उत्तर कांड समम सोपानः ॥ ० ॥ * ॥ * ॥ सुरसरि जु के उत्तर दिसि सोभित लानि सुदूरि ॥ मोरध्वजो नगरी बहु बरननि सो भरि पूरि ॥ बरननि सो भरिपूरि परम अभिराम सुपावनि ॥ देव दनुज नर नाग सकल मुनि जन मन भावनि ॥ बुध वैदिक जह बसत लसत मानहु सुर हर हूरि ॥ निज निज मन लजि रहत लहत कोउ नहि सुरसरि ॥ सोरठा ॥ तिही पुर मतिमंद बसत भवानी शर्म द्विज ॥ तेन लिपित सुखकंद परम सुभग कलकी कथा ॥ सोरठा ॥ मोहि न भ्रपर ध्यान ताते पंडित जन सुधा ॥ सोधव मति अनुमान अपनी ओर विचारिके ॥ सवत्सर नव ६ वेद ४ धृति १८ चैत्र कृष्ण रविवार ॥ तिथि दशमी शुभ लिपि भई कथा सकल सुखसार ॥ सवत् १८४- चैत्र मासि कृष्ण पक्षे दशम्या रविवासरे लिखितमिद पुस्तक भवानीप्रसादकेन ॥ मगल लेखकानाच पाठकानाच मगलम् ॥ मगल सर्व साधूनां भूयो भूपति मगलम् ॥ १ ॥ श्री गुरुभ्यो नम ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

Subject—कल्कि अवतार की भविष्य कथा ॥

Note—ग्रथकर्ता कवि प्राननाथ त्रिवेदी हैं। निर्माणकाल का बतानेवाला दोहा इस प्रकार है ॥ सवत् सत्रह से प्रगट पैसठि मकर सुमास ॥ बुधवासर श्री पचमी कलकी कथा प्रकास ॥ ० ॥ लिपिकाल सवत् १८४८ चैत्र कृष्ण १० रविवार है ॥

No 30—बृहस्पति काड *Verse* Substance—country made paper Leaves—26 Size—$8 \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines—8 on a page. Extent—300 ślokas. Appearance—old Complete Correct. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Vrihaspati Kanda — The effects of the planet Jupiter in the twelve Zodiacs on the human body by the celebrated Tulasī Dāsa. (Died 1623 A.D)

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ जे जे श्री रघुवंश मनि दीनदयाल कृपाल ॥ कस कहि प्रभु गौरीश्वर बोले वचन रसाल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुनहु उमा अति रुचिर प्रसंग ॥ सुमति बिलास सकल भ्रम भंग ॥ सुर गुरु दशा केर फल जैसा ॥ द्वादश राशि बखानौं तैसा ॥

End.—मारठा ॥ ऐहि प्रसाद भगवंत मारहि आर भेद बंद ॥ बसहि हृदय आनन्द सुषमा सिंधु कृपायतन ॥ इति श्री तुलसीदास कृत बृहस्पति काण्ड समाप्तम् ॥ शुभ ॥

१	अथ मेष राशि पर जब गुरु रहहीं	३	तुला राशि पर जब गुरु रहहीं
३	सुर गुरु जब वृषराशि सुपाता	४४	वृश्चिक राशि अमर गुरु आयहि
४	मिथुन राशि पर सुर गुरु जबहीं	५०	अब धन राशि कहौं फल पावन
८	कर्क राशि सुरेश्वर बसेरा	५६	सुर कुल पूज्य मकर कुल बासा
६	सुर गुरु जबहि सिंह अस्थाना	५९	कुंभराशि कर जीव बसेरा
११	रवि पवन भव कन्या रासे	६४	सुर गुरु मीन राशि जब रहहीं

Subject.—बृहस्पति का बारहो राशियों की दशा का फल ॥

Note.—श्री गोस्वामी तुलसीदास जी कृत । काल इसमें कोई नहीं है ॥

No. 31.—छन्दार्णव *Verse* Substance—country made paper Leaves—97 Size—10¾ × 6¾ inches. Lines—15 on a page. Extent—1,450 ślokas. Appearance — ordinary Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Chhandarṇava.—Hindi prosody by Bhikhári Dása Káyastha, who wrote it in Samvat 1799 (1742 A. D.). Bhikhári Dása is considered to be one of the great masters of Hindi composition.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ कर बदन महिमेश खण्डित पुरन पण्डित ग्यान पर । गिरिनन्दिनि नन्दन असुर निकंदन कीर्ति वर ॥ भूषन भृग लक्ष्य बान धन धान धीर बिबसन धाम घर ॥ नय नय गन नायक मलगन धायक दास सहायक बिघुन हर ॥ १ ॥

End.—दोहा ॥ छन्दनि दोहरो मोहरा करि निज बुधि बिवेक । मन रोचक सुख ध्वनिके दंडक रचा अनेक ॥ ४ ॥ रागनि के बस कीजिय ताहि प्रबंध बखानि । छन्द लिये मो पद्य है गद्य छन्द बिनु जानि ॥ ५ ॥ ग्यारह ते छत्तीस लगि बरन दुपद तुक मान । सो मिर दै बहु छन्द ठन धरे प्रबंध निबन्ध ॥ ६ ॥ भेद छन्द दण्डकनि को होत पारावार । बरनत ग्रन्थ बात ह मै दीन्ह मति अनुसार ॥ ७ ॥ सत्रह सै निन्नानबे माधु बदि नवै बुधवार । दास बड्यो छन्दार्नौ सुमिरि सारदे चन्द ॥ ८ ॥ इति श्री भिखारीदास कायस्थ कृते छन्दार्णवे दण्डक भेद बर्नन नाम पंचदशम तरंग ॥ १५ ॥ ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥ सिद्धिरस्तु ।

Subject.—पिंगल ॥

Note.—कर्ता कवि भिखारीदास कायस्थ । निर्माणकाल सम्वत् १७९९ चैत बदी ६ ॥

No. 32.—छन्दप्रकाश *Prose and Verse* Substance—country made paper Leaves—5 Size—10¾ × 6¾ inches. Lines—15 on a page Extent—75 ślokas Appearance—ordinary Incomplete Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—*Library of the Mahárája of Banáras.*

Chhandaprakáśa. — Hindi prosody in prose by Bhikhári Dása. (See No. 31)

Beginning—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ छंदप्रकाश पोथी लिष्यते ॥ दोहा ॥ गनपति गौरी शंभु को पग बंदौ यह जोइ ॥ जासु अनुग्रह अगम ते सुगम बुद्धि को होइ ॥ १ ॥ श्री महाराजनि मुकुटमनि उदितनरायन भूप ॥ सभुपुरी कासी सुथल ताको राज अनूप ॥ २ ॥ सोरठा ॥ रहत जासु दरबार सात दोष के अयनि पति ॥ रच्यो ताहि करतार तिन मधि उदित दिनेस सो ॥ ३ ॥ दोहा ॥ रज सत दाया दान मे रस मे रानित वीर ॥ जग पालक घालक खलनि महाराज रनधीर ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ सुकवि भिखारीदास कियो ग्रन्थ छन्दारनो ॥ तिन छन्दनि दरसाम भो महराज पसंद हित ॥ ५ ॥

End—सघ्या प्रसार वर्णके ॥ वृत्ति ॥ ५६२६४८८५७३४२१३१० ॥ छन्द ॥ १९८ ॥ सघ्या मात्रा वो वर्न प्रस्तारके ॥ वृत्ति ॥ ४६८२५६०३३१६३२५६ ॥ छन्द ॥ ३२१ ॥ (आगे इति आदि कुछ नहीं है।)

Subject—कविता के प्रस्तार, वृत्ति और छन्द सख्या का कथन ॥

Note—इस ग्रन्थ के कर्ता कवि भिखारीदास कायस्थ हैं। ये काशिराज महाराज उदितनारायणसिंह के आश्रित थे ॥

No 33—आलम केलि *Verse* Substance—country made paper Leaves—57. Size—10½ × 5¼ inches Lines—11 on a page Extent—1,350 ślokas. Appearance—old Complete Generally correct. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Ālama Keli—An account of Rādhā and Krisna by the poet Ālama, who was a Brahman by birth, but on falling in love with a Muhammadan woman he embraced Muhammadanism and remained for a long time in the service of Muazzam S'āha, son of Aurangzeb, and afterwards of Bahādur S'āha (1707—1712) Dr Grierson says that he was born in 1700 A.D, but this date does not seem to be correct, as it only makes a child of 7 or 8 years an admired poet of his time Besides, this manuscript copy of the *Keli* was made in Samvat 1753 (1696 A D), or 4 years earlier than the year of his birth as given by Dr Grierson. In my opinion the poet must be 30 or 40 years old before he could write such elegant poetry He must have, therefore, been born about 1660 A D

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ अथ आलमकृत कवित लिष्यते ॥ अथ बाललीला ॥ घनाक्षरी छंद ॥ पलन षेलत नंद ललन छलन बल गोद लैने ललना करति मोद गान है ॥ आलम सुकवि पल पल मैया पावे सुष पोषति पियूष सुकरति पय पान है ॥ नंद सो कहत नंदरानी हो महर सुत चंद को सी कलन बढ़तु मेरे जान है ॥ आइ देषि आनंद सो प्यारे कान्ह आनन मैं आन दिन आन घरी आन छवि आन हैं ॥ १ ॥

End—सेज सुषासन हेम हीर पटचीर विविध वर। निरषि निरषि मन मुदित होत निजु सुर सपति पर ॥ आलम के कवि जु आपु बनै बनिता बनाइ विलसत बिलास अति ॥ जग रंजन जगदास सोभु भूल्योन अनप मति ॥ अजहू समारि आलम सुकवि जोलो अतक नहि ग्रस्यो ॥ पग डगमगात हेरत हसत सुविरह भुअगम को डस्यो ॥ ४०० ॥ इति श्री आलम कृत कवित्व आलम केलि समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ सवत् १७५३ समये आसन पदी अष्टमी वार शुक्र ॥

Subject—श्री राधा कृष्ण की लीला के कवित्त ॥

Note—यह ग्रन्थ कवि आलम कृत है। निर्माण काल नहीं मिला। लिपि काल सवत् १७५३ आश्विन कृष्ण ८ शुक्रवार है ॥

No 34.—ज्ञान समुद्र *Verse*. Substance—Foolscap paper. Leaves—42. Size—9 × 5 inches. Lines—8 on a page. Extent—656 ślokas. Appearance—old. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banaras.

Gyána Samudra.—A philosophical treatise dealing with Vedantism by the poet Sundara Dása of Gwalior. He attended the court of Sáhajahán. He wrote this book in Samvat 1710 (1653 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A.D.)

Beginning.—श्री परमात्मने नमः । अथ ज्ञानसमुद्र लिख्यते । मंगलाचरण छप्पै छंद ॥ प्रथम वंदि परब्रह्म परम आनंद स्वरूप ॥ दुतिय वंदि गुरुदेव दियौ जिहि ज्ञान अनूप ॥ तृतिय वंदि सब संत जोरि कर तिनके आगैं ॥ मन वच काय प्रणाम करौं भ्रम सब भागैं ॥ इहि भांति मंगलाचरण करि सुंदर ग्रंथ बखानियें ॥ तहं विघ्न न कोऊ उपजय यह निश्चय करि मानियें ॥ १ ॥

End.—सुंदर ज्ञान समुद्र को । कोउ पावै पार ॥ देखतहीं सुख ऊपजै ॥ निर्मल जल गंभीर ॥ ६३ ॥ यहहैं ज्ञान समुद्र है । यह गुरु शिष्य संवाद ॥ सुंदर याहि कहै सुनै ताके मिटहिं विषाद ॥ ६४ ॥ संवत सत्रह से गये ॥ वर्ष दशोत्तर और ॥ भाद्रव सुदि एकादशी ॥ गुरु वासुर थिर ठौर ॥ ६५ ॥ ता दिन सपूर्ण भयो ॥ ज्ञानसमुद्र सुग्रंथ ॥ सुंदर अवगाहन करै । लहै मुक्ति को पंथ ॥ ६६ ॥ सुंदर ज्ञान समुद्र के । वरने पंच हुलास ॥ गुरु दादू अंजन दियो । लोचन हिंदे प्रकाश ॥ ६७ ॥ इति सुंदर दासेन विरचितः ज्ञान समुद्रे पंचम उल्लास ॥ ५ ॥ श्री गुरु संवत् ॥ १८ ॥ ५७ ॥ मार्ग मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दस्या रवि वासरे ॥ श्रीराम ॥ श्रीराम श्रीराम श्रीराम आय कृष्णाय गोविंदाय नमोनमः ॥ श्रीराम ॥ श्रीराम राम श्रीराम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम ॥

Subject.—वेदान्त ॥

Note.—कर्त्ता ग्वालियर के सुंदरदास हैं और यह दादूपंथी जान पड़ते हैं। इस ग्रंथ का निर्माण काल संवत् १७१० भादों सुदी ११ गुरुवार और लिपि काल संवत् १८५७ मार्ग कृष्ण १४ रविवार है ॥

No 35.—कविमुखमंडन *Verse*. Substance—country made paper. Leaves—30. Size—11 × 6½ inches. Lines—8 on a page. Extent—360 ślokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banaras.

Kavimukha mandana.—Hindi rhetoric written by Gokula Nátha of Banáras (See No. 15). The manuscript copy was made in Samvat 1870 (1813 A.D.)

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ सीता रामाभ्यानमः ॥ श्री गणपति के चरन प्रभु चारि .... से अभि राम ॥ देत चारि फल चाहतैं फल कामना के धाम ॥ १ ॥

(आगे ब्रह्मा से काशिराज तक की वंशावली दी है)

End.—हेतु लच्छन ॥ हेतु मान सह हेतु जहं कहै हेतु न मुख्यदान ॥ जीव जात जुग जुग जने चढे स्वर्ग सोपान ॥ २४८ ॥ अपर ॥ करत राज वरिवंड नृप कासी को अभिराम ॥ विश्वनाथ जाके बसे कृपा भरे हिय धाम ॥ २४९ ॥ राम । इति मार्ग शुक्ल ४ वार चंद्र वासरे ग्रन्थ समाप्त ॥ संवत् १८७० ॥

Subject.—अलंकार ॥

Note.—कर्त्ता कवि गोकुलनाथ हैं। यह पुस्तक कवि ने महाराज हरिवंशसिंह की आज्ञा से ४१ दिन में बनाई थी। इसके बनने का समय नहीं दिया है। लिपि काल संवत् १८८० भाद्रपद शुक्ल ४ चन्द्रवार है॥

No. 36.—पिंगल *Verse.* Substance—country made paper. Leaves—34. Size—9½ x 5 inches. Lines—9 on a page. Extent—630 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Pingala. — Hindi prosody, written by Chintámaṇi Tripáthí (Fl 1650 A. D), the eldest brother of the celebrated Bhúṣana and Mati Ráma. He attended the court of Makaranda S'áha of Nágpur. The manuscript is dated Samvat 1956 (1899 A.D)

Beginning.—श्री गणेशायनमः॥ अथ चिंतामणि कृत पिंगल लिख्यते॥ दोहरा॥ गज-मुख जननी जनक के पगनि नाइ निज सीस॥ चिंतामनि कवि साहि को देत बनाइ असीस॥ १॥ छप्पय॥ मुकुत माल उत गंग इतहि धर मंग गंग गति। उत सित चंदन आडु इतहि निसिकर ललाट मनि। उतहि भाल मधि लाल इतहि दृग अनल विराजत। उत कपूर तन लेप भस्म इत अति छवि छाजत। कहि चिंतामणि सम भेष धरि अति अनूप सोभा सहित। जय सानद्द सुरजा साहि कहं गिरिजा हर अरधंग नित॥ २॥ दोहा॥ सूरज वंसी भोसिला लसत साहि मकरंद। महाराज दिगपाल जिमि मंगल मुद जसु चंद॥ ३॥

End.—रूप घनाक्षरी छंद लक्षनं दोहा॥ सोरह सोरह पर जहां विरति अंत लघु होइ सो॥ रूप घन अछरी वतिस अक्षर जोइ ॥ यथा। सिर शशि पर धर गौरि अरधंग धर जटा जूट गंग धर गरे मुंड माल धर। विर्पात विनास कर दोह दिवि वासकर पलंनि उर मूल उर डमर वैसूल कर। सेवत अमर वर वंश सुर नर वर देत हरवर चिंतामनि को अभय वर। देह लषे विषधर मदन को गरब हर निज जन दुःख हर वे जे देव हर हर ५७३ इति श्री मन्महाराजाधिराज साहि मकरंद कारि श्री चिंतामनि कृते छंदो विचारे वृतानि निश्तानि समाप्तं शुभं सम्वत् १६५६ मिती कार्तिक सुदी २ वार बुधवार के लिष गया। साकेन पिपरी प्रयोधी दल दुमन की याल को॥

Subject.—पिंगल, कविता बनाने के नियमादि॥

Note.—ग्रंथकर्त्ता कवि चिंतामणि हैं। यह मकरंद साहि राजा के आश्रित थे और इन्हीं की आज्ञा से इन्होंने यह ग्रंथ रचा। इस ग्रंथ का लिपि काल संवत् १६५६ कार्तिक सुदी २ बुधवार है॥

No 37.—आनन्द अनुभव *Verse.* Substance — country-made paper Leaves—21 Size—8½ x 4¾ inches. Lines—15 on a page Extent—206 ślokas. Appearance — old Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Ánanda Anubhava.—A book dealing with spiritual principles and the worship of God by the poet, Ánanda of Banáras. He wrote this book in Samvat 1842 (1765 A.D)

Beginning.—श्री कृष्णायनमः॥ आनंदोवाच॥ सोरठा॥ आदी करौं परणाम। परम आतमा कृष्ण को॥ ब्रह्म ज्ञान के धाम। सर्व व्यापी विष्णु को॥ दोहा॥ मुनो मीत चित लाय के यह अध्यातम विचार॥ जो याको गावै सुनै निश्चय हो भव पार॥ उत्तम याको जानियो

आनन्द अनुभव नाम । दा वो जा जन समुझिहैं लहैं मुक्ति पर धाम । मुक्ति देत काशीपुरी सब को हरस सोय । आनन्द अनुभव ग्रंथ यह पूर्ण भयो शुह सोय । परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्ण भगवान । यह ग्रंथ आनंद द्वारा हो आज्ञा कीनो ज्ञान ।

End—दोहा । ऐसा महा दुर्लभ है ढाम्ह मे व्यापेउ । आनन्द अनुभव ग्रंथ कर हरिहि निवादन मंत्र । आनन्द वन काशीपुरी तहां सब के आनंद । गुरु राय गोपाल के दया करी गोविन्द । इति श्री आनन्द अनुभव आनन्द कृत भाषायां सम्पूर्ण समाप्त । ० । श्री । दोहा । आनन्द वन काशीपुरी राजमंदिर निज धाम । लिख्यो ज्योतिषी विप्र मे नाम बुला- की राम । १ । श्री हरये नमः ।

Subject—उपासना युक्त आत्मज्ञान ।

Note—यह ग्रन्थ आनन्द कवि कृत है । यह कोई काशीवासी कृष्ण भक्त थे । निर्माण काल संवत् १८४९ है ।

No 38—भारत विलास *Verse* Substance—country made paper Leaves —232 Size—10½ × 7 inches Lines—17 on a page Extent—4 400 ślokas Appearance—old Complete , Generally correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banaras

Bhārata Vilāsa—The story of the Mahābhārata by the poet Diggaja, who wrote it in Samvat 1766 (1709 A D) under the patronage of Diwan Prithvī Singha, son of Udvata Singha. It is not clear who this Prithvī Singha was.

Beginning—श्रीगणेशायनमः । गुरुभ्योनमः । दंडक छन्द । सुंदर बदन एक रदन विराजे जाहि मधुप भ्रमत गुंडादंड लपटावहीं । दिग्गज सकल लिखिहो को भुजदण्ड लियो मानो मनि पंड यमक बनावहीं । बदन के बीच गुम सोहत मयक मानो कुम्भ को बंकुरि ३ विष्णु मे न पावहीं । जानि यक दंत निज धोवा दियो थोभ यसे गुननि के गुन धा गणेनाथ को मानहीं । १ ।

End—दोहा । जो विलास भारत यहै पढै सुनै चित लाइ । ताको पुत्र कलत्र सब देइ यदुभूप बाढ़ । ४३ । नृप भरति दिनदिन धनी दान अजु मत नेति । यश लिहि दाता यहै भारत पारथ प्रीति । ४४ । कृष्ण परायन यथन मुनि द्विज मै जन यहु दान । अन- काल भूषण बसन यथाशक्ति सनमान । ४५ । सोरठा । भारत हरि गुन गुढ । जानहि सज्जन विमल मति । जे जड़ता बस मूढ । ते जानहि किम कृष्ण गुण । ४६ । इति श्री महाराज उद्योतसिंहात्मज श्री दिवान प्रथ्वीसिंह विरचिते भारत विलासे इन्द्रप्रस्थ युधि- ष्ठिर गवन नाम पञ्चविंशाध्याय । ४ । २५ । सम्पूर्ण । शुभमस्तु । । । । ।

Subject—महाभारत की कथा ।

Note—इस ग्रन्थ के कर्ता दिग्गज कवि हैं । इन्होंने पृथ्वीसिंह की आज्ञा से यह ग्रन्थ बनाया और इन्हीं के नाम से प्रकाशित किया । निर्माणकाल इसका संवत् १७६६ चैत्र शुक्ल ४ गुरुवार है ।

No 39—सुजान विलास *Verse* Substance—country made paper Leaves —97 Size—8 × 6 inches Lines—16 on a page Extent—1,940 ślokas. Appearance—old. Complete Correct. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Sujāna Vilāsa—A book on rhetoric by the poet Datta who lived under the patronage of Kunar Fateh Sinha of Tikāri District Gayā. He composed this book in Samvat 1804 (1747 A.D) The manuscript is dated Samvat 1849 (1792 A.D)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ कवित्त ॥ बंदे सुर मुनि गंधर्व यच्छ नाग नर कमद क्रिपानिधि सकल सिद्धि का है घर ॥ भ्रमर सरित को सरोज सुड भ्राति सोहै धार्यो भुज धरें पास अंकुस अभयधर ॥ सिंदुर मसुड गज सुड पक्र वक्र दन्त लंबोदर मने दन सकल कलुप हर ॥ गणपति प्यारो जो दुलारो गिरिजा जू को सो सुमिरत देत सुष संपति को निकर ॥ १ ॥

End.—श्री फतेसकुमार जग भयो भोज अवतार ॥ मंडित पंडित कविन सों रहत सदा दरबार ॥ १३५ ॥ राज समाज प्रजानि जुत पुत्र कलत्र समृद्धि ॥ श्री फतेस जगमें लहो सुजस सुधर्म सुवृद्धि ॥ १३६ ॥ जौलगि गणपति गौरिपति फनपति सिर भुवभार ॥ चिरजीव तव लौं रहो श्री फतेस सुकुमार ॥ १३७ ॥ इति श्रीमन्‌निमहाराजकुमार मागवेंद्र श्री बाबू फतेसिंह कारिते कवि दत्त कृते सपन विलासे त्रिशिग श्रृंगार भेद वर्नन नाम सप्तमो विलासः ॥ ७ ॥ समस्य समाप्त ॥ श्रोरस्तु शुभंभूयात् ॥ कासी जी मध्ये लिख्यत ब्राह्मन गौड रूपचन्द मिती वैशाष वदी १४ रवउ सवत् १८४६ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥

Subject—नायिका भेद ॥

Note—ग्रन्थकर्ता कविदत्त हैं। ये राजा टिकारी जिला गया के आश्रित थे। इनको कुमार फतेसिंह ने आज्ञा की, उसी पर इन्होंने यह ग्रंथ बनाया। ग्रन्थ बनाने का सवत् इस प्रकार लिखा है—सवत् ठारह से बरष चारि चैत सुदि चारु ॥ नौमी बुध दिन को भयो नयो ग्रन्थ अवतारु। इसका लिपिकाल सवत १८४८ है ॥

No 40—जहांगीर चन्द्रिका *Verse* Substance — country made paper Leaves—30 Size—5 × 5 inches. Lines—15 on a page Extent—450 ślokas Appearance—very old Complete Incorrect Character—Devanagari Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Jahángíra Chandriká—The praises of the Emperor Jahángira (1605—1627) by the poet Kesava Misra who wrote this book in Samvat 1669 (1612 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1848 (1791 A.D.)

Beginning—श्री गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ अथ जहांगीर चन्द्रिका कवि केसवदास कृत लिख्यते ॥ छप्पै ॥ सुनहु गनेस दिनेस देस परदेस छेम कर ॥ अम्बकेस फनेस सेस नय तेस पेसधर ॥ धननेस प्रेतेस सुद्धसिद्धेस देखि अब ॥ विहगेस स्याहेस देव देवेस छेस सब ॥ प्रभु पर्वतेस लोकेस मिलि कलि कलेस के सब हरहु ॥ जग जहांगीर हजरति साहि को पल पल ही रच्छा करहु ॥ १ ॥ दोहा ॥ सोरह सै उनहत्तरा माहा मास बिचार ॥ जहांगीर सक साहि की करी चन्द्रिका चारु ॥ २ ॥

End—दोहा ॥ जहांगीर जू जगतपति दें चिरंजीव सुष साजु ॥ केसवराई जहान में कियो यहीते राजु ॥ १८० ॥ इति श्री सकल रव भूमडला पडलेश्वर सकल साहि सिरोमनि श्री जहांगीर साहि यशचंद्रिका केसव मिश्र विरचिता समाप्ता ॥ सवत् १८४८ मीती आषाढ़ शुद्ध १२ मगलवार लिख्यते रूपचंद ब्राह्मण गौड वाराणसी मध्ये शुभमस्तु श्रीरस्तु ॥

Subject—जहांगीर शाह का यश वर्णन ॥

Note—कर्ता कवि केशव मिश्र हैं। निर्माण काल सवत् १६६९ माघ मास और लिपिकाल सवत १८४८ आषाढ़ शुद्ध १२ मगलवार है ॥

No 41—भावविलास *Verse* Substance—country made paper Leaves—66 Size—6½ × 4½ inches. Lines—12 on a page Extent—980 ślokas

Appearance—very old. Incomplete Correct Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Bháva Viláva.—A treatise on rhetoric by the celebrated poet Deva. (Born 1604 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A.D.)

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ भावविलास लिख्यते················ (इसके आगे प्रथम पत्र पत्र साद्दा पड़ा है और दीमक का खाया भी है फिर १२ पत्र तक अनुमान पत्रे दीमक ने भली भांति चाट लिये हैं दूसरा पत्र इस प्रकार से आरम्भ है)

सो अंकुर होइ ॥ सो ताको थिति भाव है कहत सु॰ .. ..
सत्र कोर ॥ ४ ॥ नव रस के थिति भाव नव तिनके ध .. ..
विस्तार ॥ तिनमें रति थिति भावसो उपजत .. ..
सिंगार ॥ ६ ॥ अथ रति सेक्षु सु पिय्यन दौ .. ..
नि आन भांति चित होइ ॥ अति कोविद पति .. ..
न के सुमति कहत रति सोइ ॥ ७ ॥

End.—दोहा ॥ अलंकार य मुख्य हैं इनके भेद अनन्त ॥ आन ग्रन्थ के मतिन तें जानि लाहु मतिमन्त ॥ ८० ॥ अपनी बुद्धि प्रमान से कह्यो कछु निरधार ॥ तातें मोपर करि कृपा लेहैं सुमति सुधार ॥ ८८ ॥ या साहित्त समुद्र को कहेंहु न पायो पार ॥ हम से कोऊ कवित्त को तहां कहां आकार ॥ ८६ ॥ दौलतिया कवि देव को नगर इटायें वासु ॥ जोवन नवल सुभाव पर कीनो भाव विलासु ॥ ८० ॥ यद्द्रसो पुस्तकं दृष्ट्वा तादृसो लिषतं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ ८१ ॥ इति श्री कवि देवदत्त विरचिते भावविलासे अलंकार निरूपने पंचमो विलासः ॥ ५ ॥ समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ श्री संवत् १८५७ मिती पौषे मासे शुक्ले पक्षे रविवासरे लिषितं श्री काशी जी मध्ये ईश्वरीप्रसाद गौड़ ब्राह्मन अपने पठनार्थे श्री दुर्गा देव्यै नमः ॥ श्रोरस्तु शुभं भूयात् श्रोऽ ॥—

Subject.—काव्यग्रन्थ—नायिका अलंकारादि वर्णन ॥

Note.—यह ग्रन्थ प्रसिद्ध कवि देव कृत है। लिपिकाल संवत् १८५७ पौष शुक्ल ६ रविवार है।

No. 42.—रसदीप काव्य *Verse* Substance—country made paper Leaves—63 Size—11 × 7 inches. Lines 15 on a page. Extent—925 slokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasadípa Kávya.—A book on Hindi rhetoric by Rája Guru Datta Singha of Amethi (?) He composed this book in Samvat 1799 (1742 A.D.)

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रामायनमः ॥ ग्रंथ परिवृत्त के तुरत विचनहारो मुकता के तुल्य सर्गाहिर सुजान के ॥ पत अपरा कैं वैषरी के मध्यमा के प्रतिभा के भेद संधी अनुबंधी कवितान के ॥ मनत कविन्द्र प्रति पद नये नये कढे न्यारे न्यारे प्यारे नृ रस के विधान के ॥ धाधो के बरत सुग परे ते चतुरमुख होत है चतुरमुख वानी के समान के ॥ १ ॥

End.—अथ दर्शन निरूप्यते ॥ लक्षणम् ॥ दोहा ॥ दर्शन तीनि प्रकार के भाषे है कवि सिंह ॥ होत दुविध प्रकार मे चित्र स्वप्न परतिक्ष ॥ १ ॥ अथ दर्शन तृतयमयि यथा ॥ कवित्त ॥ पीतम को पट मे लिख्यो चित्र निहारि हरको मन मोद बढांय ॥ लागतहीं पलता पल मे सपने सुष मे अपनो पिय पाएं ॥ सुष मने बढयो आनद षाल कैं वासरलोक यो लाल के आयं ॥ ध्यो एक धार सितासित मे मढि जात विहार विधार के न्हायं ॥ २ ॥ दोहा ॥

दंपति नेह सनेह युत अनुभव दशा समोय ॥ सोति युक्ति सो यह रच्यो सुवरन मय रसदोप ॥ ९ ॥ इति श्री भूपति गुरदत्तसिंह विरचिते रस दीपाख्ये काव्ये दर्शनाभिधानो नाम द्वादशः प्रकाशः ॥ १२ ॥ शुभमस्तु ॥ श्री ॥ रामायनमः ॥ श्री ॥ श्री ॥

Subject—नायिका भेदादि रस काव्य ॥

Note—ग्रंथकर्ता राजा गुरुदत्तसिंह अमेठी के राजा थे। ऐसा ज्ञान पड़ता है कि इन्होंने इस ग्रंथ को सम्वत् १७९९ कार्तिक शुक्ल ललित तृतिया बुधवार को आरम्भ किया जैसा कि इस दोहे से प्रगट होता है ॥ सत्रह सतक निन्यानवे कातिक सुदि बुधवार ॥ ललित तृतीया में भयो रसदीपक अवतार ॥ ८ ॥

No 43—कविकुल कण्ठाभरण *Verse* Substance — country-made paper Leaves—19 Size—11 × 7 inches Lines—15 on a page Extent—285 ślokas Appearance—old. Complete Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kavikula Kanthábharana—A treatise on Hindi rhetoric by the celebrated poet Dúlaha, a great authority on Hindi composition He flourished about 1750 A.D He was the grandson of Kálí Dása Trivedí and son of Udaya Nátha Trivedí, both celebrated authors of their time

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री हनुमतेनमः ॥ अथ अलंकार को ग्रंथ कवि दूलह कृत कंठाभरन लिख्यते ॥ दोहा ॥ पारवती सिव चरन मे कवि दूलह करि प्रीति ॥ थोरे क्रम क्रम तें कहौं अलंकार की रीति ॥ १ ॥ चरन बरन लचन ललित रवि रीझयो करतार ॥ विन भूषन नहि भूषहीं कविता वनिता चारु ॥ २ ॥ दीरघ मत सत कविन के अरथा से लघु तनें ॥ कवि दूलह यातें कहो कविकुल कंठाभर्ने ॥ ३ ॥

End—सकरी यथा ॥ हेरहीं मति मंद पै पठाई दोउ सकर को चाही चंद कला ध्यान मुष तें लटाई री ॥ कहे कवि दूलह अपूरव प्रकास्यो हेतु नाइन हमारी ठकुराइन हू आई री ॥ चारो भेद सकर के तुक मे विचारो चारु चातुरी दै मानो निठुराई सुरझाई री ॥ पेप मनि मंदिर मे पलक की पीक पोंछी सोई अरुनाई इनि आंषिन मे छाई री ॥ ॥ ० ॥ इति महा कवि कालिदासा ....

Subject—अलंकार काव्य ॥

Note.—ग्रंथकर्त्ता प्रसिद्ध कवि दूलह हैं जो सम्वत् १८०० के लगभग हुए थे ॥

No 44—रसमालिका ग्रन्थ *Verse.* Substance — country made paper Leaves — 44 Size — 9 × 5 inches. Lines — 9 on a page. Extent—675 ślokas. Appearance — ordinary Complete. Generally incorrect. Character — Devanágarí—Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasamáliká Grantha—A book dealing with subjects like spiritual knowledge, wordly renunciation, love of God, good company, etc. The author is one Rámacharana, who composed it in Samvat 1844 (1787 A.D) The manuscript is dated Samvat 1854 (1797 A.D)

Beginning—श्री सीतारामाय नमः ॥ वसंत तिलक छन्द ॥ यस्योरमालतुलसी हरिमिन्दिरेन भाल धनुर्धाय भुजाकितस्य ॥ भक्तिश्च ज्ञानमभिभूषणभूषिताग ते श्रेष्ठ्याः चरण रामचरणौ नमस्ते ॥ १ ॥ श्रीमद्गुरोश्चरन मोहनिशांधतापडो चित्त ममालि चलजातक सपुटापडो ॥ ज्ञानाग्निभोरवर भउर धान्दत्यक्त्वा दृश्यं स्वरूप सतत नमो नमस्ते ॥ २ ॥

काव्य छन्द ॥ श्री गणेश श्री शम्भु ब्रह्म श्री सरस्वती श्री ॥ श्री मुरारि श्री गौरिचंद श्री सूर्य सती श्री ॥ श्री दृगपति श्री अग्नि पवन श्री वेदवरुण श्री ॥ श्री सुमेरु सब देव थपि पद रामचरण श्री ॥ ३ ॥

End.—हरिगीत छन्द ॥ तप नेम पूजा पाठ जप जोगादि कृम रतिम घनो ॥ मोक्षादि सब नहि सुलहि जो फल एक सतसंगति बनो ॥ कोटि सग पाय कुबेर में मिथ्यान मिलु कोटिन गनो ॥ तजि सकल कर्माकर्म गति सतसग कर परि मम मनो ॥ ४ ॥ दोहा ॥ रामचरण सतसग बिनु श्रग भग नहि होइ ॥ श्रग भग बिनु कर्म जड धरे रहत सब कोइ ॥ ५ ॥ तीन दपर आठ हुत ईसर श्रयकास किजात ॥ पोलि कहय जनि पिय बरस श्रपर कथय विख्यात ॥ ६ ॥ पर भाषा को काढि कै अपने ग्रथहि बढाइ ॥ रामचरण ते स्वान कवि कबहु न पेट अघाइ ॥ ७ ॥ श्रुति गिरि कद्र में रहत कहत अनूठी बात ॥ रामचरण ते सिह कवि नव शब्द नित खात ॥ ८ ॥ काव्य धर्म पूर्वापरहि अर्थ आस नहि मान ॥ ते सिसु दूपन देत हैं बिनु सतगुर के ग्यान ॥ ९ ॥ सवत सत अष्टादशो चैाआलिस दिन सूर ॥ सरद विजे दसमी विमल रस ग्रथ भो पूर ॥ १० ॥ इति श्री रसमालिकाबोध शास्त्रे सवादोस्थने सद्गुरोर्प्रबोधे वर्णनो नाम पचदशोल्लास ॥ १५ ॥ अथोध्यास्थले ॥ वैसाष वदि सुकल पचे दसम्या सपूरण समाप्तम् ॥ लिषित सत्रूप्रसाद वैष्णव ॥ श्री महारानजू के स्थले ॥ सवत ॥ १८ ॥ ६४ ॥

Subject—ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, सत्सगादि ॥

Note—इसके ग्रन्थकर्ता कोई रामचरण जान पडते हैं । सवत् १८४४ शरद ऋतु आश्विन शुक्ल १० रविवार को यह ग्रन्थ पूरा हुआ । लिपिकाल वैशाख शुक्ल १० सवत् १८६४ है ॥

No 45—रससार *Verse* Substance—country made paper Leaves—48 Size—$10\frac{3}{4}\times6\frac{3}{4}$ inches Lines 18 on a page Extent—1 065 ślokas. Appearance—old. Complete Generally correct Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Rasa Sára—A book on Hindi composition dealing specially with the different kinds of heroines and styles etc The name of the author is not clearly given but in some places the word Dása occurs which may only be his nom-de-plume This book was written in Samvat 1791 (1734 A.D)

Beginning—श्रीगणेशायनम ॥ दोहा ॥ प्रथम मगलाचरन को तीनि भातमक जानि ॥ नमस्कार अरु ध्यान पुनि आसिरवाद बखानि ॥ नमस्कार आतमक मगलाचरन ॥ कदन अनेकन विघुन को एक रदन गन राउ ॥ बदन सुत बदन करौ दुहकर पुटकर चाउ ॥ २ ॥ ध्यान आतमक मगलाचरन ॥ कवित्त ॥ बक्रतुड कुडलित सुड नग वलित चाडु रद ॥ भासि घुमड मडलित दान मडित सुगध मद ॥ बाहु दड उदड दुष फुडनि श्रमुड कर ॥ विघुन घड कर पडबोल सत मारतड घर ॥ श्री षड घरस नदन दास घड घडी तनय ॥ अभिलाषु लाष लाहन समृद्धि राषु आषु बाहन हृदय ॥ ३ ॥ आसिरवाद आतमक मगलाचरन ॥ सोरठा ॥ करौ चद् श्रीतस मो मन को अगमी सुगम ॥ काढो रस सारस सुमति मथानी मथनु करि ॥ ४ ॥

End—दोहा ॥ सत्रह सै इक्यानवे नभ सुदि छठ बुधवार ॥ भर अमर देस प्रताप गढ भयो ग्रथ अवतार ॥ १९८ ॥ कुमति कुटुपन लाइहै विगस्यौ घरन विगारि ॥ सुमति समुझि सुष पाइहै विगस्यौ बरन सुधारि ॥ १९९ ॥ इति श्री रससार सपूरन लिष्यते ॥ शुभ मस्तु । जो देषा सो लिषा मम दोष न दीयते ॥

Subject —काव्य नायिकाभेद रस आदि ॥

Note —ग्रन्थकर्ता का नाम दो तीन कवित्तो मे 'दास' कवि मिलता है—निर्माण काल अन्त के दोहे में १८६१ है ॥ ये दास कवि कौन थे सो पता नहीं लगता ॥

No 46 —शृङ्गारनिर्णय *Verse* Substance—country made paper Leaves —46 Size—10¾ × 6¾ inches Lines—18 on a page Extent—825 ślokas Appearance—old Complete Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Sringára Nirnaya —A treatise on Hindi composition dealing with the different parts of that subject. The name of the author is Bhikhárí Dása, who was born in 1723 A.D

Beginning —श्री गणेशायनम ॥ लिख्यते सिंगार निर्नय ॥ कवित्त ॥ भूप मृगेस वल वृष वाहन किरुर कोन्हे करोरि तेतीस को ॥ हाथनि मे फरसा करवाल त्रिसूल धरे पल पाइवे पोष को ॥ जगत गुरू जग की जननी जगदीस भरे सुखदेत असोस को ॥ दास प्रनाम करे कर जोरि गनाधिप को गिरिजा को गिरीस को ॥ १ ॥

End —मरन दसा ॥ मरन दसा सब भांति सो ह्वै निरास मरिजाइ ॥ जोवन मत करि बरनिय तह रस भग बराइ ॥ यथा ॥ नारी न हाथ रही उँहि नारी के मारिनी मोहि मनोज महा की ॥ जीवन हग कहति रह्यो पलक मे अग रहो मिलि जा की ॥ वात को बोलिबो गात को डोलिबो हेरे को दास उसास उया को ॥ सीरी ह्वै आई सताई सिघाई कहो मत्रि मे कहा रह्यो वा की ॥ ३२४ ॥ इति श्री सिंगार निर्नय भिषारीदास कृते सपुर्न सुभमस्तु सिद्धिरस्तु । जो देषा सो लिषा मम दोषो न दीयते ॥

Subject.—नायक, नायिका, उनके अंग, लक्षण, शोभा, शृंगारादि, हाव, भाव, दसो दसादि का वर्णन ॥

Note —ग्रन्थकर्ता भिषारीदास हैं, यह अपना नाम कविता मे दास रखते हैं ॥

No 47 —भावार्थचन्द्रिका *Verse.* Substance—country made paper Leaves—18 Size—5 × 4½ inches. Lines—10 on a page Extent 210 ślokas Appearance—new Complete Generally incorrect Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Bhaúrtha Chandriká —Translation of the *mahimna stotra* or the praises of Śiva. The translator is Maniyára Singha son of Śyáma Singha, of Banáras The translation was made in Samvat 1843 (1786 A.D) and the manuscript is dated Samvat 1856 (1799 A.D)

Beginning —श्रीगणेशायनम ॥ अथ सदाशिव महिम्नस्य पद भावार्थचंद्रिका टीका भाषा कवित्त निबधने लिष्यते ॥ आसेमगलार्थे गणपति प्रार्थयामि क । सिंधुर बदन सिद्धिसदन रदन यक राजे भुजचारि चारो सिरां वलवेस के । कवो जर उदद समूचो जोति रासि होत भासमान मानो कोटि उदय दिनेस के । सिंह मनियार लाल सिंदुर घटा मे विहु छटा मनि रत्न स्वर्न भूषन असेस के । विविध विनोद रचि मोदक ले पेलें गणपति गोद गिरिजा महेस के ॥ १ ॥ राम राम ।

End —होये जो अनुग्वल धराधर सो कज्जल औ जलधि सो वासन प्रयासनते वनिजाए । कलविट डारे लेषनी सुधारे पुहुमी सो पत्र सरवत्र सो वितानिजाए । यार कहे ऐसो आचारन ठाट ठठे विधि रटे रते कल्प जेते गन सो नगन जाए । विरद विशाल लिखो सारदा सकल काल तदपि कृपाल गुन तेरो न वर्नि जाए ॥ ३२ ॥

संवत के अकर अग्र वेद पमुचन्द्र गुरौ चढ़ गुरो चंद्र मास सवद वरद धर्म धन की। चाकर अपडित आरामचद्र पंडित मैं मुख्य शिष्य कवि कृष्णलाल के चरन को। मनियार नाम स्यामसिंह की तनय मैं उदयछवि यश का • •• •• •• पुष्पदत महिम्मन को ३३ इति श्री मनियारसिंह विरचित सदाशिव महिम्नस्य टीका भाषा कवित्त निबधेन सपूर्ण। सवत् १८२६ मि चैत्र शुक्ल १३ भृगु वासरे ग्रंथ लिषत ॥

Subject—श्रीमहादेव जी की स्तुति। महिम्न का कवित्तों में भाषानुवाद समूल।

Note—ग्रथकर्त्ता स्यामसिंह के पुत्र मनियारसिंह क्षत्री हैं जो काशीवासी आरामचन्द्र पंडित के सेवक तथा कृष्ण कवि के मुख्य शिष्य थे। निर्माण काल सवत् १८४३ आश्विन शुक्ल ११ और लिपिकाल सवत् १८२६ मि॰ चैत्र शुक्ल १३ भृगुवार है ॥

No 48—राग विवेक *Verse* Substance—country made paper Leaves—15 Size—7 × 5 inches. Lines—18 on a page Extent—1,300 slokas. Appearance—very old. Complete. Generally incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Raga Viveka—A book on the art of music by the poet Purasottama, who wrote it in Samvat 1715 (1658 A.D) for one Fateha Chanda Káyástha, son of Pancholi Bhága Chanda. The manuscript is dated Samvat 1744 (1687 A.D)

Beginning—श्रीगणेशायनम ॥ पूजो आदर भाव करि प्रथम •• ••• पाइ ॥ मनसा वाचा कहत पुरुषोत्तम सिरनाइ ॥१॥ ससिवर धरन त्रिपुन हरन •• • हेरव ॥ पुरुसोतम की •• •• को देहु सदा अरनंद ॥ २ ॥ सारद चद मुखी सद र सम काइ ॥ निगम • मटोदधि पारदा भजो। सारदा • • ॥ ३ ॥ अति उज्ज्वल कायस्थ कुल ताके भेद अनेक ॥ तहां ••• मी नाम धर कहित है कुल यक ॥ ४ ॥ प्रगट भए तिहि बस मे जग मे लक्ष्मी दास ॥ फैलि रहो ससार मे जाको सुजस प्रकास ॥ ५ (पहिला पत्र कुछ फटा है इसलिये पढ़ा नहीं गया ॥)

End—सकर राग ॥ फतेचद की चाह पर कीनो राग विवेक ॥ याको नीके समुझिके जानहु राग अनेक ॥ ८० ॥ जो कवि राग विवेक मे कबहू चुक्यो होइ ॥ लीजो सज्जन सोधिके दूषी मति पल कोइ ॥ ८८ ॥ सवत् सत्रसे अधिक पद्रह करि के रीत ॥ कीनो राग विवेक तिथि पुनो सुदि आसोज ॥ ८९ जौलो गंगा गिरि सिसिर श्री जौलों हरि अग ॥ तौलो राग विवेक यह जग मे रहो अभग ॥ ९०॥ इति श्री चतुर्दश विद्या निधानेत्यादि विवेक विरद विराजमान कायस्थ कुल योपर पचौली भागचद सुत श्री फतेचद कारते कवि श्री पुरुसोतम कृते राग विवेके मेघराग परिवार स्वरूप कथन नाम षष्ठम प्रकाश सपूर्णाय राग विवेके ग्रथ शुभ मस्तु ॥ छ छ ॥ सवत् १७४४ समय नाम पुस सुदी दुवादसी लीषोत वधुराम कायस्थ कासी मधे ॥ रामसहाई ॥ छ ॥

Subject—संगीत ॥

Note—यह ग्रथ पुरुषोत्तम कवि कृत है। ये किसी फतेचद नामक कायस्थ के आश्रित जान पड़ते हैं। उन्हीं की आज्ञानुकूल यह ग्रथ रचा गया है। इसका निर्माण काल सवत १७१५ आश्विन सुदी १५ गुरुवार और लिपिकाल सवत् १७४४ पुस सुदी १२ है ॥

No 49—दीपप्रकाश *Verse.* Substance—country made paper Leaves—32 Size—$7\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines—17 on a page Extent—420 slokas. Appearance—very old. Complete. Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Dipa Prakása—A book dealing with the different kinds of heroines by the poet Brahma Datta, who lived in the time of Mahárája Udita Náráyana

Singha of Banáras. He wrote this book in Samvat 1866 (1809 A D) at the request of Babu Dípa Náráyana Singha the younger brother of Mahárája Udita Náráyana Singha. The manuscript which is dated Samvat 1860 (1803 A.D), is in the author's own handwriting

Beginning—श्रीगणेशायनम ॥ कवित्तु ॥ सेंदुर सें भरे भाल विशाल उदे गिरि पें मनों भानु उदे को ॥ दत लसे मनो द्वैन को चद विचारि के आयो है मित्र मिने को ॥ चदन लीक लो चद कला शिर चारि भुजा अहे दानि अभय को ॥ कैसे कलेश को लेश रहे मन आनत रूप महेश तने को ॥ १ ॥

End—कवितु ॥ जोनैा विश्व कर्के कमडल में पानी चद मडल मे मुनि की निसानी लोलो गाहियो ॥ जोनो अमरावती अखडल अखड नभ मडल में सुर शशिमडल उमाहियो ॥ कहे कविव्रम वरिबड वमर्माण तू है धनि तेरो सब नेहू खडनि सराहिबो ॥ लोलें फणिद फण मडल में मही महीमडल में तो लगि अखड तेरो साहिबो ॥ २०६ ॥ सपुर्णाय ग्रंथ ॥ दोहा ॥ अष्टादशशत अधिकषट षष्टि वरष तप मास ॥ शुक्ल पचमी को कियो दीप प्रकाश प्रकास ॥ १ ॥ जैसे दीप प्रकाश सों दृगनि परत सब सूझि ॥ तैसे दीप प्रकाश से। वस्तु परति सब सूझि ॥ २ ॥ सवत् १८६६ फाल्गुण पैार्णमासी लिषा ब्रह्मदत्त उपाध्याय दाक्षिणी। शुभ श्री ॥

Subject—नायिका भेद ॥

Note—कर्ता कवि ब्रह्मदत्त हैं। ये काशिराज महाराज उदित नारायणसिंह के समय के कवि हैं और स्यात् इन्हीं के आश्रित भी थे। इन्होंने महाराज के मझोले भाई बाबू साहब दीपनारायणसिंह की आज्ञा से यह ग्रन्थ बनाया। इसका निर्माण काल सवत् १८६६ फागुन सुदी पचमी और लिपिकाल सवत् १८६६ फागुन सुदी १५ है ॥

No 50—नख शिख *Verse* Substance—country made paper Leaves—10 Size—$6\frac{1}{4} \times 5$ inches. Lines—18 on a page. Extent—152 ślokas. Appearance—very old. Complete. Generally correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Nakha Śikha—Description of the different parts of the body of a heroine by the poet Mirzá Abdur Rahmána, who wrote this book while Farrukh a Siyar (1713 19 A.D) was on the throne of Delhi. The manuscript is dated Samvat 1859 (1802 A.D)

Beginning—श्रीगणेशायन ॥ अथ नषशिष वर्णन ॥ मिरजा अबदुरहमान प्रेमी कृत लि ॥ दोहा ॥ गुर गनेस सादेस कर रुचि सो रचस्वसान। नषसिष सुन्दर सज कियो कवि अबदुर रहमान ॥ १ ॥ फरकसेर सुलतान वर सुन्दर सुभट सुजान ॥ ताको मनसबदार सुभ कवि अबदुर रहमान ॥ २ ॥ कवि अबदुर रहमान कृत नष सिष कठ जो होइ ॥ होइ सभा पंडित सुमर रीझै सब कवि लोइ ॥ ३ ॥ जो नर हिय विद्या धरै सो विद्याधर मान ॥ गुण धरै मजूस में विद्याधान न जान ॥ ४ ॥ मन मजूस सुधार के विद्या पुस्तक धार ॥ कीट लगै ना घुन लगै नीके करो विचार ॥ ५ ॥ अथ पगनष व० ॥ तारे जोतवारे दिन दिये निहारे जग लाग है प्यारे रूप मगल को लहे है ॥ कैधो है सुहाग बीज जोबन के बीज कैधो अनुराग बीजराज गुन बीज कहे है ॥ रहमान प्रेमी प्यारी ससि भान की प्रधान काढ पग पल्लव पे राषै दुति गहे है ॥ पगनष लाल से सुमन छीन धरी कैधो मननि के भाय मन पाइ लाग रहे है ॥

End—दीपक की लोइ कापे दामिन को देह तापे सनला सी देष तापे जाने जग सब है ॥ फूल मुरझाइ गिरै अबर सो तारे भरे चद्रमा हू डरै सेत भयो पीत दब है ॥ रहमान प्रेमी कह्यो मै ताे अचरज लह्यो ज्वाल की लपट लाजे भाने जब तब है ॥ प्यारी को

लपे रहैारा सनै लाल लीन हैरा गक नग जीरा छोप छवि जी छवि है ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ व्यास नंदन मनाइ के नव सिख रच्यौ सवार ॥ भूलि कहँ जो कहूक .. .. लीजो सुघ सुधार ॥ ६६ ॥ इति श्री प्रेमी कृत नखसिख .. .. यहि श्री सम्वत् १८७६ मि ज्येष्ठ कृष्ण १ भौम वासरे लि .. .. ईश्वरीप्रसाद् गौड ब्राह्मण श्री कासी जी मध्ये ॥ शुभ भूय .. .. ॥

Subject.—प्रत्यंग की शोभा का वर्णन ॥

Note.—यह ग्रन्थ कवि मिर्ज़ा अब्दुर्रहमान प्रेमीकृत है, ये फर्रुखसियर के समय के कवि हैं। यद्यपि निर्माण काल कहु नहीं दिया ॥ लिपिकाल सम्वत् १८७६ जेठ वदी १ मंगलवार और लेखक ईश्वरी प्रसाद् गौड ब्राह्मण काशीवासी है ॥

No 61—रसरहस्य *Verse* Substance—country made paper Leaves—119 Size—10¾×6½ inches Lines—15 on a page Extent—1,785 slokas. Appearance—new Complete Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasa Rahasya—A book on rhetoric by Kulapati Miśra of Agra. He composed this book in Samvat 1727 (1670 A.D) Dr Grierson says that he was born in 1657 A.D but there appears to be some mistake in this as Kulapati Miśra cannot be expected to write a book on Hindi rhetoric when he was only 13 years old

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ रसरहस्य लिख्यते ॥ सवैया ॥ ऐसिय कुंज बनें छवि पुंज रहे अलि गुंजत यों सुख लीजै ॥ नैन विसाल हिये बनमाल विलोकत रूप सुधारस पीजै ॥ जामिनि जाम की कौतुग तौं जुग जात न जानिये ज्यों छिन छीजै ॥ आनद यों उमग्योइ रहै पिय मोहन को मुख देखिबो कीजै ॥

End.—वसतु आगरे आगरे गुन तप शोल विलास ॥ विप्र मथुरिया मिस्र है हरि चरनन के दास ॥ १४१ ॥ ग्रन्थ मिस्र तिन वंस में परस राम जिमि राम ॥ तिनके सुत कुल पति कियो रस रहस्य सुखधाम ॥ १४२ ॥ जिते ग्रन्थ है कवित के ममट कहे बखानि ॥ ते सब भाषा में कहे रस रहस्य में आनि ॥ १४३ ॥ सम्वत् सत्रह सै सत्ताइस ॥ कातिक वदि एकादशी बार बरन वानीस ॥ १४४ ॥ इति श्री मिश्र कुलपति विरचिते रसरहस्ये अर्थालंकार निरूपन नाम अष्टमो व्रतात ॥ ८ ॥ सुभे ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रीराम ॥

Subject—काव्य अलंकारादि ॥

Note.—निर्माणकर्ता कुलपति मिश्र हैं। निर्माण काल सम्वत् १७२७ कार्तिक वदी ११ गुरुवार है ॥

No 62—व्यंग्यार्थ कौमदी *Verse* Substance—country made paper Leaves—72. Size—10¾×6½ inches. Lines—15 on a page Extent—1,050 slokas. Appearance—new Complete. Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Vyangártha Kaumudí—A book dealing with the different kinds of heroes and heroines with special reference to the sarcastic style of Hindi composition. The name of the poet is Pratápa, who attended the court of Vikrama Sáhi of Charakhári and wrote this book in Samvat 1882 (1825 A.D) The author of the Śiva Singh Saroja is decidedly wrong when he says that Partápa attended the court of Chhattrasála Bundelá (1649—1731 A.D) for there is a difference of more than a century between these two persons.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ रामायनमः ॥ अथ विंग्यार्थ कौमुदी लिष्यते ॥ दोहा ॥ गनपति गिरा मनाइ कै सुमिरि गुरन के पाइ ॥ कवित रीत कछु कहत हौं विंगि अर्थ चितुलाइ ॥ १ ॥ वाचक लछक विंजको सहू तीन विधि मानि ॥ याच्य लच्छ अरु विंगि तहं अर्थ त्रिविधि पहिचानि ॥ २ ॥ इनके लच्छन लच्छ वहु रस ग्रंथन ठहराइ ॥ ताते हरि बरनै नहीं वढै ग्रंथ समुदाइ ॥ ३ ॥

End—दोहा ॥ सवि दूती दरसन दसा हाय भाव वहु और ॥ याते नहिं वर्नन करे वरनै कवि सव ठौर ॥ १२३ ॥ विंगि अरथ अतिसे कठिन को कहि पावै पार ॥ ममट मत कछु समुझि चित कीनो मति अनुसार ॥ १२४ ॥ यह विंग्यारथ कौमुदी पढै गुनै वितु लाइ ॥ ताकौ मति साहित्य कौ कछुक अर्थ दरसाइ ॥ १२५ ॥ समतु ससि वसु वसु मु द्वै गनि असाढ़ को मास ॥ किय विंग्यारथ कौमुदी सुकवि प्रताप प्रकास ॥ १२६ ॥ बिगरौ देत सुधारि के ते गनि सुकवि सुजान ॥ वनो विगारत जे सुयनि ते कवि अधम समान ॥ १२७ ॥ इति श्री विद्वत कुल मनोल्हाद कारिनो विंग्यार्थ कौमुदीया सुकवि प्रताप विरचितायां नाइका नाइक वर्ननो नाम सपूरन प्रकास ॥ छ छ छ छ ॥

Subject—नायिका नायक आदि वर्णन ।

Note—कर्ता सुकवि प्रताप हैं । निर्माणकाल सवत् १८८२ आषाढ़ है ॥

No 53—उत्तम काव्यप्रकाश *Prose and verse* Substance—country-made paper Leaves—67. Size—11 × 6 inches Lines—18 on a page Extent—1,195 ślokas. Appearance—ordinary. Complete Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Uttama Kávya prakáśa—A book on Hindi composition with special reference to sarcastic style by Mahárája Viswanátha Singha (1840) of Rewah. The manuscript is dated Samvat 1896 (1839 A.D.) in which year it appears that the book was also completed.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ उत्तम काव्यप्रकास लिष्यते । दोहा । हरि गुरु श्री प्रिय दास जे जे सिव सिवा गनेस । सरस्वती सीता राम जे जे राधा राधेस ॥ १ ॥ गोपी सुकिया है सबै रिझवन हित बृजनाथ । करहिं चरित कुल नाइकनि कहत सु कछु विसुनाथ ॥ २ ॥ उत्तम काव्य प्रकास यहि नाम विचार प्रमान । सुकवि सुमति गुन गनहिंगे या सम ग्रंथ न आन ॥ ३ ॥ वक्ति बैधव्य काकु वाच्य अन्य सनिधि प्रस्ताव देस कालादिक आदि पद ते चेष्टा येतो वैशिष्ट है तिन में प्रथम या कवित्त मे वैशिष्ट लम्य अरु पति नायक है । आजु अकेली आगारिही जाइ लई कनी फूलन की मन भाई । देषत ही वन देवी तहां गहि कै गई आपने ओन लिवाई । जानक दै किये व्याह सिगार कही कछुवै रहो ताहि डेराई । के हू के क्यों छुटो कानन व्है ढिग तेर लो आई पराइ मैं माई ॥ ४ ॥ वक्ति है नाइका तामे विहार की वैशिष्ट है सो कहै है देवी ब्याह के सिगार किये सो कहि ब्रह्मा को सर्विध के दियो सो विवाह सो गोपन कियो औ वनते भगी चली आहो मैया कहि विवाह भये भयो जो विहार सो गोपन कियो या वस्तु व्यंजित भई विवाह ते पति नायक आयो याते श्री राधा जी को विवाह तो आइहो गयो औ गोपिन को वस्त्राहरन समै मै सब गोपाल वाल भये श्री कृष्ण ताहो वर्ष मै सब गोपिन को विवाह भयो कान्ह रूप गोप बालन सो अरु गीता मै लिषे है की परा शक्ति जोर है याते सर्व जीव मात्र श्री कृष्ण की सुकी या है अरु गोपी तीन प्रकार की हैं नित्या प्रेमा छाया इनको जानि कै सुमति जे हम ते समाधान करि लेइगे तिनको वेयरा ग्रंथ के विस्तार के भय ते नही लिष्यो ॥ ४ ॥

End.—सिद्धि श्री बांधव धनी राजाराम बघेल। तासु वंस राजा भये रीवा श्राद नरेस ॥ १ ॥ ता कुल श्री जयसिंह को विस्वनाथ भुपाल। ध्युनि प्रकास कीनो भनो गाथा सो है साल ॥ २ ॥ सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्रीमहाराजा श्रीराजा बहादुर सीता रामचंद्र कृपापात्राधिकारी विस्वनाथसिंह जु देव कृत उत्तम ध्यान काव्य ग्रंथ समाप्त भवति। शुभ भूयात् मिती दुती जेठ सुदी ६ का संवत् १८६६ के (इसके बाद एक पत्राकार कोष्टक्ष्ठ है जिसमें एक श्रोर १६ कोष्ट श्रोर एक श्रोर ८ कोष्ट हैं उनमें श्रक्षर भरे हैं उसके ऊपर "मध्य-श्री" यह शीर्षक लिखा है ॥

Subject.—ध्यान काव्य ॥

Note.—कर्त्ता रीवाधिपति महाराज विश्वनाथसिंह हैं। इस ग्रंथ का लिपिकाल संवत् १८६६ है जो इसका निर्माण काल भी जान पड़ता है।

No 64—शान्तशतक *Prose and verse* Substance — country made paper Leaves—93 Size — 10 x 6 inches. Lines — 24 on a page. Extent — 2 580 ślokas. Appearance — ordinary Complete Generally correct Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śānta Śataka—A book dealing with spiritual subjects by Mahárája Viśvanātha Singha of Rewáh. The book is divided into three chapters, dealing with worldly renunciation, spiritual knowledge and final beatitude The manuscript is dated Samvat 1895 (1838 A.D) (See No 53)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शांत शतक लिष्यते ॥ दोहा। श्री रघुनंदन सरसुती गौरि संभु गनईस ॥ हनुमान हरि गुरु प्रिया दास धरन धरि सीस ॥ १ ॥ टीका मुक्ति प्रदीपका कहत श्रहे विस्वनाथ ॥ गुरु मुष सुनि यहि विधि करिहि पंच मुक्ति तेहि हाथ ॥ २ ॥ कवित्त ॥ नपनि नपत कटि केहरी कपट उर भुजनि भुजग धारी किसले करन में ॥ बदन में बिधु धारी नैनन नलिन धारो मन चंचरीक धारो कुंचित कचन में ॥ नाथ विस्वनाथ के मसच्य धरे रामचंद्र जगत के नाथ धारो आप गुन गन में ॥ काल रुद्र क्रुधता में विधि बेद विदता में धारो विष्णु धार धार करन सरन में ॥ १ ॥

End.—बहुत जे हैं बेदांत तिनको अभ्यास करिके जो बहुत जे है मत तिनको संग करि तिनके जे बहुत मत हैं तिनको या शांत सतक में बनायो है या में संतन के जे शुभ शुभ भावना है ये को कवित्त को अभ्यास करिके याकी रीति जो करि है सो या संसार समुद्र जो है ताको गोपद सम उतरि जैहे श्रह जो या भांति कोऊ साधन न करि सकैगो श्रो याको पाठो मात्र करैगो मूल तिनके को श्रर्थ समुझि के चित्त धरैगो ताको बैराग्य, ज्ञान भक्ति हैबदो करैगो जैनो भांति सो धारो बहुत अभ्यास करैगो ताते याकी परिक्षा करि लेउ यह उपदेस ध्वजित भयो ६३ ॥

इति सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा बहादुर सीतारामचंद्रकृपा पात्राधिकारि विस्वनाथसिंहजूदेव कृत मुक्तिप्रद शांत शतक समाप्त। सुभमस्तु जेठ बदी ३ का संवत् १८६५ ॥

Subject.—बैराग्य, ज्ञान श्रोर भक्ति इन तीन खंडों में पुस्तक विभक्त है ॥

Note.—ग्रंथकर्त्ता महाराज विश्वनाथसिंह रीवाधिपति हैं। इसका निर्माण श्रथवा लि-पिकाल पुस्तक के श्रंत में संवत् १८६५ जेठ बदी ३ दिया है ॥

No 55—लालित्यलता *Verse* Substance—country made paper Leaves—23 Size—9 × 4½ inches. Lines—12 on a page Extent—550 ślokas Appearance—old. Complete Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Lálitya Latá—A book on Hindi rhetoric by the poet Deva Dutta of Jájamaû He wrote this book in Samvat 1791 (1734 A.D) The manuscript is dated Samvat 1805 (1748 A.D) This Deva Dutta should not be confounded with the celebrated Deva Dutta of Mainapuri There is another manuscript copy of this book dated Samvat 1862 (1805 A D) in this library

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ कवित ॥ बंदे सुर मुनि गधरव यक्ष नाग नर कामद कृपानिधि सकल सिद्धि को है घर। भ्रमर सरित को सरोज सुडभ्रम सो है चार्यो भुज धरे पास अकुस अभय वर ॥ सिंदुर भमुड गन तुड वक्र एक दत लबोदर भने दत्त सकल कलुष हर। गणपति प्यारो जो दुलारो गिरिजा जु को सो सुमिरत देत सुष सपतिन को निकर ॥ १ ॥ सवैया ॥ श्रतर वेद पवित्र महा श्रउनी श्रोर कनौज के मध्य विलास है। भागीरथी भवतारनि के तट देषत होत सो पातक नाष है। देव सरूप सबै नर नारि दिनो दिन देषिये पुन्य प्रकास है। नष निनानबे कोने जिनाति सो जाजमऊ कवि दत्त को वास है ॥ २ ॥

End.—दो० ॥ सित सारी गोरे श्रगनि पीर फेन से फैन ॥ चलो चांदनी में सुमिलि चद्रमुषी लषियेन ॥ २५१ ॥ सकर ॥ चद कला मुष चद में नदलला सुप पानि ॥ पोछो अजन है लग्यो वैगुर से अधरानि ॥ २५२ ॥ समाप्ति ॥ सवत सत्रह से परे एकानवे प्रमान ॥ यह लालित्य लता ललित रची पोष सुदिवान ॥ २५३ ॥ इति श्री कविदत्त कृत लालित्यलता सपूर्ण सुभमस्तु ॥ दो० ॥ सरप अठारह से अधिक पाच पोष सुदि राम ॥ तिथि रविवासर को लिखी भोपम ललित ललाम ॥

Subject—अलकार ॥

Note—कर्ता कविदत्त जाजमऊनिवासी हैं। इस ग्रन्थ का निर्माण काल सवत् १७९१ और लिपिकाल सवत् १८०५ है।

No 56—रसिकमोहनकाव्य *Verse.* Substance—country made paper Leaves—74 Size—11 × 6¾ inches. Lines—17 on a page Extent—1 550 ślokas. Appearance—ordinary Complete Generally correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Rasika Mohana Kávya—A book on Hindi composition by the poet Raghunátha Bandijana (Fl 1745 A D) who was the court poet of Mahárája Barivanda Singha of Banáras. The manuscript is dated Samvat 1862 (1805 A D)

Beginning—श्रीगणेशायनम श्री सरस्वत्यैनम । विघन हरन दुरमति दरन करन सकल कल्यान ॥ सिव सुत श्री गननाथ को सब सुख दायक ध्यान ॥ १ ॥ श्री गुरदेव मुकुद को लहिके क्रिपा सहाइ ॥ कविबे की भाषी सकति ग्रथनि को समुदाइ ॥ २ ॥ ब्रह्मा को सुत मानसिक गौतम परम प्रसिद्धि ॥ ताके कुल कोटू मिसिर प्रगट भयो तपसिद्धि ॥

End—अपर ॥ पर अमक लक्षपति मेरी बिनै सुनौ पुर पारावार को पहारनि भरो भयो ॥ आवत बसत ज्यो त्यों वन उपवन सब रघुनाथ हरो भयो फूलि के फरो भयो ॥ करिबे जो है सो अब कीजे मन मचिन सो माग बचेयन के धास को डरो भयो ॥ तोकन

निवासि के हुँया राम राम ताके भाग उघराये रंद्रन विमोद्धन परो भयो ॥ ३९३ ॥ इति श्री कवि रघुनाथ बन्दीजन काशी वासी विरचितो काव्य रसिक मोहने शब्दादि अलंकार वर्ननं शुभमस्तु ॥ सवत् १८८९ ॥ माघ मासे कृष्णपक्षे ॥ १४ ॥ श्री राम राम ॥

Subject—अलंकार ग्रन्थ ॥

Note—ग्रन्थकर्ता कवि रघुनाथ बन्दीजन काशीवासी हैं। ये महाराज वरिवण्डसिंह के आश्रित थे। इन्होंने इनसे चौरा ग्राम पाया था जो काशी से दलर ४ कोस पर है और पञ्चक्रोशी से १ कोस दक्षिण तरफ गङ्गा के समीप पड़ता है। इस ग्रन्थ का लिपिकाल संवत् १८८९ माघ कृष्ण १४ है।

No 57—श्री सुन्दर श्यामविलास *Verse* Substance—country made paper Leaves—249 Size—9¼ x 6 inches. Lines 18 on a page Extent—5,370 ślokas. Appearance—ordinary Complete. Correct. Character—Devanagari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śrí Sundara Syáma Viláša.—Description of certain scenes from Krisna's life and the mention of certain Bhaktas. The name of the author is Sundara Dása. He was the son of Dulha Ráma who was alive when Vazír Ali was defeated in Banáras. Sundara Dása wrote this book in Samvat 1867 (1810 A.D.)

Beginning—श्री राधा कृष्णायनमः ॥ चौपै ॥ हरि श्री गुर कों प्रथम मनाबौ ॥ रसिक जनन के बलि बलि जाबौ ॥ हरि गुर कौ मन सें जो ध्याबौ ॥ परम काम धाम पद पाबौ ॥ रचि रचि कवि कवि हरि गुण गाबौ ॥ रसिक जनन पर रस बरषाबौ ॥ झुमि झुमि झुमि झुकि जावौ ॥ भुमि भुमि पर सीक नचावौं ॥ रोम रोम सें आनन्द पावौं ॥ घूम घूम रस बरषि सिरावौ ॥ अद्भुत रचना रचौं रचावौ ॥ झूमि झूमि सुख दै सुख पावौं ॥

End—करि है श्री कासी में बास ॥ धरैं ध्यान दंपति को बिलास ॥ कृपा करी हरि हरि के मत ॥ तिनकी कृपा पुरन भयो ग्रंथ ॥ सवत् अठारह से जानीगे ॥ सतसठ ता उपर मानीगे ॥ चैत मास शुद्ध पक्ष मगन मन ॥ नौमी श्री श्रीराम जनम दिन ॥ सो हित चित सों पढ़ै सुनैगो ॥ हरि चरित्र मन माह गुनैगो ॥ सो अवश्य हरि को पद पावै ॥ दौड अघातें सुदर गावै ॥ लिख्यो कह्यो अपनो नहि ज्ञान ॥ हरि प्रेरन सों कियो बखान ॥ केवल दपति की करुणा सो ॥ पुरन भयो ग्रन्थ यह तासो ॥ इति श्री सुदर स्याम बिलास समाप्तम् शुभमस्तु सिद्धरस्तु दोहा ॥ सुदर सुदर री जपो रटो यह सुदर नाम ॥ यह रटना सब तें भलो और न आवे काम ॥ सुदर हरि के जनन सो यहै मन नित चाह ॥ सुदर सुन्दर कहन को मन में रहे उमाह ॥

Subject—कृष्णलीला तथा कुछ भक्तों का वर्णन ॥

Note—ग्रन्थकर्ता का नाम सुंदर दास पड़ता है और यह जाति के कायस्थ काशीवासी थे। इन्होंने इस ग्रन्थ को सवत् १८६७ चैत सुदी ९ को पूर्ण किया। लिपिकाल नहीं है कदाचित् इन्होंने सामने की यह प्रति लिखी हो। सुंदरदास के पिता का नाम दूलहराम था जो वजीरअली की लड़ाई के समय काशी में विद्यमान थे।

No 58—सियरामभूषन *Verse.* Substance—country made paper Leaves—58 Size—10¾ x 6¾ inches Lines—15 on a page Extent—855 ślokas. Appearance—new Complete Correct. Character—Devanágari Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śivarája Bhúsana.—A book on rhetoric in which the examples are almost all written in the heroic style by the celebrated poet Bhuṣana who composed this book in Samvat 1730 (1673 A.D.) Bhusana's history is long and interesting He remained at no less than 5 different court viz. Aurangzeba Chhattrasála Siváji and his son Sambháji The date of Bhúsana's birth may be fixed between 1640 and 1650 A.D as he is said to have been a young poet when he attended the court of Aurangzeba prior to joining that of Śiváji, who was born in May 1672 A.D

Beginning.—श्री गणेशायनम ॥ अथ शिवराज भूषन लिष्यते ॥ कवित्त ॥ विकट अपार भव पथ के चले को श्रम हरन करन वीज नासे वरम्हाइये ॥ इहि लोक पर लोक सफल करन कोकनद से चरन हिये आनि के जुडाइये ॥ अलि कुल कलित कपोल ध्याइ ललित अनद रूप सहित मे भूषन अन्हाइये ॥ पाय ततु भजन विघन गढ गजन भगत मन रजन दुरद मुष गाइये ॥ १ ॥

End.—सवतु सत्रह से तीस सुचि वदि तेरस भान। भूषन शिव भूषन कियो पढो सुनो सुग्यान ॥ ३१६ ॥ चित्र कवित्त ॥ येक प्रभुता को धाम सजे तीनो वेद काम रहे पचानन षडा नन रानी सर्बदा ॥ साता वार आठो जाम जाचिक निवाजे अवतार थिराजे कपान ज्यों हरि गदा ॥ शिवराज भूषन अटल रहे तौलो जौलो त्रिदस भुवन सब गग और नरमदा ॥ साहि तने साहसीक भोसला सरजा सब दासरथो जा रसता सरजा विसरदा ॥ ३२० ॥ इति श्री कवि भूषन विरचिते शिवराज भूषन ग्रथ अलकारनि को सपूर्णं ॥ समाप्त ॥ * ॥ राम

Subject.—अलकार ग्रन्थ, वीर रस की कविता मे ॥

Note.—ग्रन्थकर्त्ता प्रसिद्ध कवि भूषन हैं। निर्माण काल सवत् १७३० है ॥

No 59.—रसिकविलास *Verse*. Substance—country made paper Leaves—63 Size—9 × 6¼ inches Lines—13 on a page Extent—700 ślokas. Appearance—very old Complete. Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasika Vilása.—A treatise on Hindi composition by the poet Bhojarája, who attended the court of Rájá Vikramájita of Bundelakhanda Rajá Vikrama was born in 1785 and died in 1828 A.D consequently the time of Bhojarája may approximately be fixed at 1800 A.D

Beginning.—श्रीकृष्णायनम । अथ रसिक विलास लिष्यते ॥ दोहा ॥ कलुष कदन सोभा सदन हस हय वदन सुदेस ॥ बंसिये प्रभु कवि भोज के हृदय सरोज हमेस। १ ॥ ताजो ताजी रहु किये भोज हिये सुत सीव ॥ साजी साजी सुमत रच राजी वाजी ग्रीव ॥ २ ॥ रोज रोज कवि भोज उर चरन सरोज उछाह ॥ बसिये महरानी सदा वानी वानी माह ॥ ३ ॥

End.—अथ दिसाबन्द दोहा। नाइका परकिया प्रोषित पतिका ॥ वायु वहत ईसान हिय अगिन नई रित देत ॥ पुरब मुष उत्तर सुपद पत दछन के हेत ॥ ४१ ॥ समभ रीझहैं रसिक कर सदन सरोज प्रकास ॥ रसिकन को रसमय सरस कोहैा रसिक विलास ॥ २२ ॥ सिद्ध सुरसिक विलास मो वरनो विविध विचार ॥ भावत होइ जु भूल कहु लीजो सुकवि सुधार ॥ २३ ॥ सिध्यश्री बुंदेलवसावतस श्रीमान महाराजाधिराज श्री राजा विक्रमाजीतजू देवाज्ञिप्त भोज राज सुकवि विरचिते रसिक विलासे काव्ये सपूर्नं शुभमस्तु ॥ मगल ददात ॥ श्री राम ॥

Subject—काव्य नायिकादि ॥

Note—ग्रन्थकर्त्ता सुकवि भीषणदास हैं। इनके लेख से मालूम होता है कि ये बुंदेलखंड के राजा विक्रमाजीत के आश्रित थे और उन्हीं की आज्ञा से इसे बनाया। समय आदि का कुछ पता नहीं।

No 60—हितोपदेश उपखाणां बावनी *Verse* Substance — country made paper Leaves—8 Size—10¼×5¼ inches. Lines—11 on a page Extent—160 ślokas Appearance — old Complete Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Hitopadeśa Upaśnáṇa Báranī—A collection of 54 Kundaliyas dealing with moral instructions by Swámi Agra Dása (Fl. 1575 A D) The manuscript copy was probably made in Samvat 1753 as this book is bound in the same volume with Álamkeli (No 33) and is in the handwriting of the same man

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अग्रदास जी की कुंडलीया लिषतं ॥ बहतो दुख्यो संसार मैं को कहि बैरी होइ ॥ को कहि बैरी होइ लोभ माया जिन राचै ॥ हरि छांडि सब स्यानि कहा कौचहि कपि नाचै ॥ मृगतृष्णा संसार अमरपुर लौं जो धावहि ॥ श्रीपति पद विमुख सुपै सुपने नहि पावहि ॥ अग्रदास झूठो कहै तो हृदय नैन निज खोल ॥ बहतो दुख्यो ० ॥ १ ॥

End—उपखाणां उपदेश हित ज्यों द्रुम शाखा पद ॥ ज्यों द्रुम शाखा पद द्वुतिय दिन द्रास दिषावै ॥ यह कथन स्वच्छ अनुमोद हृदै हरि चरण समावै ॥ विष्णु पदो बावनी शुद्धि बावन विस्तारा ॥ भव सागर पुरधेनु ताहि तरि लगे न वारा ॥ अग्र अटल चावै भगति संत संग सदानंद ॥ उपखाणां उपदेश हित ० ॥ ५४ ॥ इति हितोपदेशमुपखाणां बावनी संपूर्ण ॥

Subject—उपदेश ॥

Note—श्री अग्रदास कृत। निर्माणकाल नहीं है। लिपि काल भी इसमें तो नहीं है परन्तु आलमकेलि और ये दोनों पुस्तकें एकही लेखक की लिखी हैं और दोनों एकही जिल्द में बंधी हैं अतः लिपिकाल संवत् १७५३ है॥

No 61—काव्यनिर्णय *Verse*. Substance—country made paper Leaves—171 Size—10¾×6¾ inches Lines—14 on a page. Extent—2,423 ślokas. Appearance — old. Complete Generally correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kávya Nirnaya—A treatise on Hindi composition written by Bhikhari Dása of Bundelakhanda in the name of the prince of Bundelakhanda whom he calls Hindupati Babú Sáhib The poet gives his nom-de plume as Dása only He flourished in 1750 A.D The manuscript is dated Samvat 1871 (1814 A.D)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ छप्पै ॥ एक रदन द्वै मातु त्रय चख चो बाहु पंच कर ॥ षट आनन धर भ्रात सेव्य सप्ताचि भालधर ॥ अष्ट सिद्धि नव निधि प्रदानि दस दिसि जस विस्तर ॥ रुद्र इगारह शुद्ध द्वादसादित्य तोमहर ॥ जो त्रिदस वृंद वंदित चरन चौदह विद्यनि आदि गुरु ॥ तिहि दास पंद्रह हू तिथिन धरिय षोडसो ध्यान उर ॥ १ ॥

End—ज्ञानो भक्ति न ध्यान को सक्ति हो दास अनाथ अनाथ के स्वामिजू । मागो इतो घर दीन दयानिधि दीनता मेरी चित्ते भरो हामि जू ॥ ज्यो चित्त नाम के नेह को ध्योर हे अंतरजामी निरंतरजामि जु । मो रसना के रुचे रसना तजि राम नमामि नमामि नमामि जु ॥ इति श्री सकल कलाधर कलाधर वंसावतंस श्री मन्महाराज कुमार बाबू हिंदूपति विरचिते काव्य निर्नये रस दोष दोषोद्धार वर्नन नाम पचविंसतिमोल्लासः ॥ १५ ॥ ग्रंथ समाप्त शुभ भूयात् ॥ ॥ संवत ॥ १८८१ ॥

Subject—काव्य के सब अंग, उनके लक्षणादि ॥

Note.—ग्रन्थकर्त्ता का नाम अंत में महाराज कुमार हिंदूपति बाबू साहब लिखा है परन्तु कवित्तो मे इस ग्रन्थ में दास नाम ही मिलता है । एक जगह भिषारीदास भी लिखा है । इससे यह निश्चय होता है कि यह ग्रन्थ भिषारीदास का बनाया है । समय के विषय मे अंत में केवल संवत् १८८१ है जो लिपिकाल जान पडता है ॥

No 62—शृङ्गार *Verse* Substance—country made paper Leaves—44. Size—6½×4½ inches. Lines—14 on a page Extent—750 ślokas Appearance—old. Incomplete Correct Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sringára—Description of the different kinds of heroes and heroines written in the erotic style by the poet Bení of Asní in Samvat 1817 (1760 A.D.) under the patronage of one Nihachala Sinha. The manuscript is dated Samvat 1820 (1763 A.D.) Dr Grierson mentions only one Beni Kavi of Asani and he gives his date of birth as 1633 A.D If he is the same poet as the author of the book under notice, his date of birth must be fixed a century later

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ प्रथम गणेशहि वंदिये याते सब शुभ होत ॥ सोत कढें लग भुन्सं के बढे मुकुत में गोत ॥ १ ॥ लस्यो कुंभ सेंदुर धस्यो बिलसे नीली कोर ॥ एक रदन रवि शसि मनो गहों राह वर जोर ॥ २ ॥ कीनो निहचलसिंह जू बेनी कवि सो नेहु ॥ लीला राधा कान्ह की भाषा में करि देहु ॥ ३ ॥ वरणनु राधे कान्ह को सज्जन यो सुनि लेहि ॥ ज्यों मिसिरी के साथ तें कामें दामें देहि ॥ ४ ॥ करियतु रस मय ग्रन्थु यह रसिकन की रुचि पाइ ॥ बरणनु राधे कृष्ण को सब विधि कविन सुनाइ ॥ ५ ॥

End—· · · सु है असनी वर शुभ थान ॥ बसत जहे षट्कुल जहा करें वेद को गान ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ अष्टादस सत वर्ष गत सत्रह औरो जानि ॥ फागुन दसमी सित सुभग चंद्रवार अनुमानि ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ सत्य सुकुल सब द्विजन के छोट नाथ के हाथ ॥ लिषि पुस्तक पूरन भई कीनी कविन सनाथ ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ विनती कीजतु कविन मों भूल परी जो होइ ॥ सोधि सुधारो बरन धरि ग्रन्थहि नीके जोइ ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ भाष को समुदाउ बहु परे कहां लगु जानि ॥ सूक्ष्म याने मे कह्यो अपनी बुधि अनुमानि ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ चरन परसि जगदम्ब के गनपति के सिर नाइ ॥ ग्रन्थ रच्यो शृंगार शुभ दोहों कविन बनाइ ॥ ४५० ॥ शुभमस्तु ॥ श्री संवत् ॥ १८२० ॥ समे नाम ॥ आषाढ कृष्ण पक्ष ॥ ९ ॥ वासरे शुक्रवार ॥ ली: थानसीद वासी मेरनापुर : ॥ श्री राधे कृष्न० ॥ ॥ राम०

Subject.—शृंगार रस के कवित्तों में नायिका भेद आदि ॥

Note—कवि बेनी कृत—यह ग्राम असनी के रहने वाले थे और निहचलसिंह के आश्रित जान पडते हैं । इन्ही की आज्ञा से इन्होंने यह ग्रन्थ बनाया जैसा कि आदि के तीसरे दोहे से स्पष्ट होता है ॥

निर्माण काल संवत १८१० फाल्गुन शुक्ल १० चन्द्रवार और लिपि काल संवत् १८५० आषाढ कृष्ण ८ शुक्रवार है ॥

No. 63.—उदितकीर्तिप्रकाश *Verse* Substance—country made paper Leaves—4 Size—10¾ × 6¼ inches Lines—23 on a page Extent—50 ślokas Appearance—old Complete Correct Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Udita Kirti Prakáśa.—Praises of Mahárája Udita Náráyaṇa Siṃha of Banáras (1785 1835 A.D) by the poet Braja Lála who wrote this manuscript copy himself in Samvat 1879 (1852 A.D)

Beginning.—श्री हनुमते नमः ॥ अथ उदितकीर्तिप्रकाश लिख्यते ॥ दोहा ॥ कमल कमल तिय का लसत दिव्याभरन विशाल ॥ जय श्री मुखरन चरन कवि व्रजलाल ॥ १ ॥ गग सम धवरास हुव मान तनै व्रजलाल ॥ उदित कीतिप्रकाश सम भाष कवित रसाल ॥ २ ॥ आशीर्वादिक छप्पै ॥ जपि कादि तप जगि धरन धर जगि धरहि धर ॥ जगि गगन आकाश जगि कैलाश वास हर ॥ जगि सृष्टि विधि रचहि जगि शेष सर्वहि देव वर ॥ जगि राम सह लखहि जगि सुर वसहि मेरु पर ॥ कविराज भनत निति पति जगि जगि रैन दिन अगवस ॥ उदोतनरायन भूप मनि तनगि भोग भूप सुभायस ॥ ३ ॥

End.—विक्रम वाचित मान कवि दै करिद मर मुद्ध ॥ ता मुरने यह प्रति लिखी सोधहु मुद्ध अमुद्ध ॥ ५६ ॥ इति श्री महेन्द्र समार उगार काशी सुर उदित नारायणस्य श्री मान कविन्द्र तनय व्रजलाल भट्ट कविराज विरचिते कीर्ति प्रकाशे सपूर्ण शुभ भूयात् ॥ १ ॥ मिती कार्तिक वदी ११ सनी संवत् १८८८ मु महा रामनगर लिखित स्वहस्त ॥

Subject.—काशिराज महाराज उदितनारायणसिंह जी का यश वर्णन ॥

Note.—कवि व्रजलाल कृत। संवत् १८८८ मिती कार्तिक वदी ११ शनिवार को यह पुस्तक कवि ने अपने हाथ से लिखी ॥

No 64.—श्रीलाल मुकुन्दविलास *Verse* Substance—country made paper Leaves—99 Size—8¾ × 5¾ inches. Lines—14 on a page. Extent—1,380 ślokas Appearance—ordinary Incomplete Correct Character—Kaithí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śrí Lála Mukunda Vilása.—Description of the different kinds of heroes and heroines by the poet Mukunda Lál who was a contemporary of Raghunátha (1745 A.D) of Banáras

Beginning.—श्रीगणेशायनम ॥ दोहा ॥ करि जग प्रतिबिंब्यो तुहीं तो मैं जग बहु भेव ॥ दरसनीय तुहीं सदा नमो नमो श्री देव ॥ १ ॥ दरसु कहावै चारिनो चारि भांति सो जान ॥ इक प्रतिच्छ अनुमान पुनि शब्द निपुन उपमान ॥ २ ॥ ग्यानिंद्रिय सब लिहि विषै तिहि सग भय सुग्यान ॥ सो परतिच्छ कहावही सकल ग्रन्थ परमान ॥ ३ ॥

End.—मुग्धा उत्तमा स्वाधीन प्रियतमा ॥ यथा ॥ सुदरी सयानी रस मंदिरै समीप आडे रोकत पिया से चेसो कैसो दोसु लीजिये ॥ भावरी कहा स्याह गहे हो प्यादे पाइ यो मुकुन्द लाल कहै आपे आप मीनिये ॥ मेरेहो सदैदनि प्रमेद दोरत प्यारो के चलतो रूपरै नया चलाव पाइ दीजिये ॥ चितु चाहतो हो तो तरपि मांह चूनरी की खोलतो हो पैहो सो भरोसो

भारी कीजिये ॥ ३ ॥ मुग्धा मध्यमा स्वाधीन प्रियतमा जथा ॥ चौथी चार चोक बीच होता क्यों उदास पायो पूरे भाग मैन मानो सेवके सोनाहरी ॥ बर्णं कर योजना व . . . .
(आगे कुछ नहीं है) ॥

Subject —काव्य ग्रन्थ नायिकादि ॥

Note —ग्रन्थकर्त्ता मुकुन्दलाल—यह कवि रघुनाथ का समसामयिक था ॥

No 65 —कमरुद्दीपा हुलास *Verse* Substance — country made paper Leaves—60 Size—$10\frac{3}{4} \times 6\frac{3}{4}$ inches Lines—15 on a page Extent—1,100 ślokas Appearance—old Complete. Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit.—Library of the Mahárája of Banáras.

Kamaruddin Khán Hulása —An account of Delhi, the emperor, his ministers, etc., and a short description of the different kinds of heroes and heroines by the poet Ganjan, who wrote this book in Samvat 1785 (1728 A.D) under the patronage of Náwab Kamaruddina Khán whom the poet describes as the Vazir Ázama of the Emperor Mohammad Śáha (1719 1748 A.D) The original name of Kamaruddina Khán was Mira Muhammad F[illegible] Muhammad Śáha after the resignation of Ás[illegible] tion of Ahamad Śaha Abdáli at the battle of [illegible] two copies of this manuscript in the possession of the Mahárája of Banáras One is dated Samvat 1856 (1799 A.D), and the other Samvat 1861 (1804 A D)

Beginning —श्रीगणेशायनमः ॥ सरस्वत्यैनमः ॥ छप्पै ॥ करहि प्रथम मगलनि बँहुरि ब्रहु बुद्धि प्रकासहि ॥ जगत मुनष कह देहि नाम मुख लेत हुलासहि ॥ रिद्धिसिद्धि कह क-रहि टरहि घोरेहि गुन निजु जन ॥ माल देहि अति सुजन कान मानहि भूपति मन ॥ सङ्कर सपुत सुषदाय हित हुव असरन कह अति सरन ॥ वड भाग राग गंजन सुकवि हियहि धर्यो गनपति चरन ॥ १ ॥

End —अथ छप्पै कलस ॥ चोसठ कला प्रवीन चोदहो विद्या जाने ॥ सुन्दर सुघर उदार दच्छ सब के मन माने ॥ स्वामिकाज अनुराग जसी अति तेज बली है ॥ रस निधान गुन वीर बडो जग माह बली है ॥ मुनि सुजान मरदान मनि आजम उजीर सब जग कहइ ॥ कमरुद्दीपा नवाब सो अष्ट सिद्धि गजन लहइ ॥ ८८ ॥ इति श्री सुकवि गजन विरचितायां कम-रुद्दीप हुलास सपूर्ण शुभमस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ सवत १८५६ मिती ज्येष्ठ कृष्ण ८ चद्र वासरे लिषितं ईस्वरी प्रसाद गौड काशी जी मधे पठनार्थं ॥

(दूसरी प्रति जो इसी की नकल मालूम पडती है "श्री सवत् १८६१ श्रावण शुक्ल त्रयोदस्यां ॥ १३ रविवासरे ॥" को लिखी है ॥)

Subject —पूर्व मे जमुना दिल्ली पादशाह महल वजीर षष ऋतु नव रसादि फिर नायिकादि का वर्णन है ॥

Note —ग्रन्थकर्त्ता गजन कवि गौड गुर्जर काशी वासी है। नवाब कमरुद्दीपा ने इनको आदर दिया और फिर ग्रन्थ रचना की आज्ञा दी ॥ इनके लेख से मालूम होता है कि नवाब कुछ हिन्दी कविता का रसिक था ॥

निर्माण काल । सवत सत्रह मै बरष बीते पचासीत । वैसाषी सुदि पचमी भृगु बासर विदीत ॥ २३ ॥ =सवत् १७८५ वैसाष शुक्ल ५ शुक्र वार है। इस ग्रन्थ की दो प्रतियां है। न १ बडी और पीछे की लिखी और न २ छोटी पूर्व की लिखी है। इसी से नकल की हुई न. १ मालूम देती है ॥

निर्माण काल संवत १८९० फाल्गुण शुक्ल १० चन्द्रवार और लिपि काल संवत् १८९० आषाढ़ कृष्ण ७ शुक्रवार है ॥

No. 63—उदितकीर्तिप्रकाश *Verse.* Substance—country-made paper. Leaves—4 Size—10¾ × 6½ inches. Lines—23 on a page. Extent—50 ślokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Udita Kírti Prakáśa—Praises of Mahárája Udita Náráyana Singha of Banáras (1785-1835 A.D.) by the poet Braja Lála, who wrote this manuscript copy himself in Samvat 1879 (1852 A.D.)

Beginning—श्री हनुमते नमः ॥ अथ उदितकीर्तिप्रकाश लिष्यते ॥ दोहा ॥ अमल कमल विय कर लसत दिव्याभरन विसाल ॥ जय श्री सुयश चरन कवि⋯⋯बृजलाल ॥ १ ॥ गंग यश अवतंस हुव मान तनै बृजलाल ॥ उदित कीर्तिप्रकास मय भाषा कवित रसाल ॥ २ ॥ आशीर्वादिक छप्पै ॥ कपि करहि तप जलगि चरन धर जलगि धरहि धर ॥ जलगि अयन आकास जलगि कैलास वास हर ॥ जलगि सृष्टि विधि रचहि जलगि धन बरषहि देव वर ॥ जलगि राम लव लसहि जलगि सुर वसहि मेरु पर ॥ कविराज भनत निसि पति जलगि जलगि रैन दिन उगमग ॥ उद्योतनराएन भूप मनि तलगि नित भुव भुगमग ॥ ३ ॥

End—विश्रम वंदित मान कवि दि फरिंद मर भुद्ध ॥ सा सुसमे यह प्रति लिषी सोधहु सुद्ध असुद्ध ॥ ९६ ॥ इति श्री मदेंद्र समार उगार काशी सुर उदित नारायणस्य श्री मान कविंद्र तनय बृजलाल भट्ट कविराज विरचिते कीर्ति प्रकाशे सपूर्ण शुभ भूयात् ॥ १ ॥ मिती कार्तिक वदी ११ सनौ संवत् १८७९ मु॰ मुद्रा रामनगर लिषितं स्वहस्त ॥

Subject—काशिराज महाराज उदितनारायणसिंह जी का यश वर्णन ॥

Note—कवि बृजलाल कृत । संवत् १८७९ मिती कार्तिक वदी ११ शनिवार की यह पुस्तक कवि ने अपने हाथ से लिखी ॥

No. 64—श्रीलाल मुकुंदविलास *Verse.* Substance—country-made paper. Leaves—99 Size—8¾ × 5¾ inches. Lines—14 on a page. Extent—1,380 ślokas. Appearance—ordinary. Incomplete. Correct. Character—Kaithí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śrí Lála Mukunda Vilása—Description of the different kinds of heroes and heroines by the poet Mukunda Lál, who was a contemporary of Raghunátha (1745 A.D.) of Banáras.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ करि जग प्रतिबिंबयो तुही सो मैं जग बहु भेव ॥ दरसनीय तुंही सदा नमो नमो श्री देव ॥ १ ॥ दरसु कहावै जानिवो चारि भांति को जान ॥ इक प्रतिच्छ अनुमान पुनि सब्द निपुन उपमान ॥ २ ॥ ग्यानेंद्रिय अह लिहि जिवे तिहि छग भय सुग्यान ॥ सो परतिच्छ कहावही सकल ग्रन्थ परमान ॥ ३ ॥

End—मुग्धा उत्तमा स्वाधीन प्रियतमा ॥ यथा ॥ सुंदरी सयानी रस मंदिरें समीप आछे रोजना चित्रा मे प्रेमो कैसो दोमु लीजिये ॥ मासरी कराइ ल्याइ गई हो पयाद्रे पाइ यौं मुकुंद लाल कहे आपे आप भीजिये ॥ मेरेही सदेहनि प्रसेद होत प्यारी के चनसो तपरे नया पलाइ पाइ दीजिये ॥ चेतु चाहती हो तो गरचि माह चुनरी की खोलते हो पैहो सो भरोसो

भारो कीजिये ॥ ३ ॥ मुग्धा मध्यमा स्वाधीन प्रियतमा तथा ॥ चौथी चार चौक बीच होता थ्यों। उदास पायो पूरे भाग मैन मानो सेनके सोनाहरी ॥ वर्णे कर योजना च . . . .
(आगे कुछ नहीं है) ॥

Subject—काव्य ग्रन्थ नायिकादि ॥

Note—ग्रन्थकर्त्ता मुकुन्दलाल—यह कवि रघुनाथ का समसामयिक था ॥

No 65—कमरुद्दीप हुलास *Verse* Substance — country made paper Leaves—60 Size—10¾ × 6⅝ inches Lines—15 on a page Extent—1,100 ślokas Appearance—old Complete. Correct Character — Devanágarí Place of deposit —Library of the Mahárája of Banáras.

Kamaruddín Khán Huldsa.—An account of Delhi, the emperor, his ministers, etc., and a short description of the different kinds of heroes and heroines by the poet Ganjana, who wrote this book in Samvat 1785 (1728 A.D) under the patronage of Náwab Kamaruddina Khán whom the poet describes as the Vazír Ázama of the Emperor Mohammad Śáha (1719 1748 A.D) The original name of Kamaruddina Khán was Mira Muhammad Fázil He was appointed minister of Muhammad Śáha after the resignation of Ásafjáh He was killed in the opposition of Ahamad Śaha Abdáli at the battle of Sarahind in 1748 A D There are two copies of this manuscript in the possession of the Maháraja of Banáras One is dated Samvat 1856 (1799 A D), and the other Samvat 1861 (1804 A.D)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ सरस्वत्यैनमः ॥ छप्पै ॥ करहि प्रथम मगलनि बहुरि बहु बुद्धि प्रकासहि ॥ जगत सुजस कह देहि नाम सुख लेत हुलासहि ॥ रिद्धिसिद्ध कह करहि करहि थोरेहि गुन निजु जन ॥ माल देहि अति सुजन कान मानहि भूपति मन ॥ सङ्कर सपूत सुपदाय हित हुय असरन कह अति सरन ॥ बड भाग राग गंजन सुकवि हियहि धर्‍यो गनपति चरन ॥ १ ॥

End—अथ छप्पै कलस ॥ चौसठ कला प्रवीन चौदहो विद्या जाने ॥ सुन्दर सुघर उदार दच्छ सब के मन माने ॥ स्वामिकाज अनुराग जसी अति तेज बलो है ॥ रस निधान गुन बीर बडो जग माह बलो है ॥ सुनि सुजान मरदान मनि आजम उजीर सब जग कहइ ॥ कमरुद्दीपा नवाब सो अष्ट सिद्धु गजन लहइ ॥२८॥ इति श्री सुकवि गजन विरचिताया कमरुद्दीप हुलास सपूर्णं शुभमस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ सवत १८५६ मिती ज्येष्ठ कृष्णा ८ चद्र वासरे लिपितं ईस्वरी प्रसाद गैाड काशी जी मध्ये पठनार्थं ॥
(दूसरी प्रति जो इसी की नकल मालूम पडती है "श्री सवत् १८६१ श्रावण शुक्ल त्रयोदस्या ॥ १३ रवियासरे ॥" की लिखी है ॥)

Subject—पूर्व में जमुना दिल्ली पादशाह महल वजीर वस ऋतु नर रसादि फिर नायिकादि का वर्णन है ॥

Note—ग्रन्थकर्त्ता गजन कवि गैाड गुर्जर काशी वासी हैं। नवाब कमरुद्दीपा ने इनको आदर दिया और फिर ग्रन्थ रचना की आज्ञा दी ॥ इनके लेख से मालूम होता है कि नवाब कुछ हिन्दी कविता का रसिक था ॥

निर्माण काल। सवत सत्रह से बरष बीते पचासीत। बैसाषे सुदि पचमी भृगु वासर विप्रीत ॥ २३ ॥ =सवत् १७८५ वैसाष शुक्ल ५ शुक्र वार है। इस ग्रन्थ की दो प्रतिया है। न १ बडी और पीछे की लिखी और न २ छोटी पूर्व की लिखी है। इसी से नकल ली हुई न. १ मालूम देती है ॥

No 66—श्री कृपाकंद निबंध *Verse* Substance—country made paper Leaves—102 Size—11 × 7 inches. Lines—18 on a page Extent—1,836 ślokas. Appearance—old Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Srí Kripákanda Nibandha—448 Kavittas written in the erotic style with special reference to the praises of Krisna, by the poet Ghanánanda or Ánandaghana, who was killed in 1739 A D in the capture of Mathurá by Nádira Śáha

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कृपाकंद निबंध लिष्यते ॥ नेक उर आये ही बहुत दुष दूरि जात ताप त्रिनु ताहि आप चन्दन कृपा करै ॥ त्यनि दै लागनि दै पाग अनुरागनिदै जागत नगाइ लेके मदन कृपा करै ॥ यानी के विन्नास बरसावे घन आनद हैं मूढ रूप प्रगट मूढ छदन कृपा करै ॥ आरति निकंदन मिलावै नद नदन सु आनदन मेरी मति बदन कृपा करै ॥ १ ॥

End—मन लगे फिरौ हौ अनंग लगे रहौ मोहुवे नेस लगावत क्यों नहीं ॥ निरस रच निहि सरसो रस मूरति प्रीति पगावत क्यों नहीं ॥ दीन पर्यो तुमने घन आनद हो गुन रावि पठावत क्यों नहीं ॥ जागत सोवत से हो कहा कहो सोवत मोहि जगावत क्यों नहीं ॥ ४४८ ॥

Subject—शृगार रस की कविता ॥

Note—ग्रन्थकर्ता घन आनद प्रसिद्ध कवि है—ये सन् १७३९ में मथुरा में मारे गए थे ॥

No 67—ललितललाम *Verse* Substance—country made paper Leaves—46 Size—10¾ × 6¾ inches Lines—16 on a page. Extent—720 ślokas Appearance—old. Complete Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Lalita Lalâma.—A book on Hindi Prosody by the poet Mati Ráma (1650 A D) who wrote this book for Bháva Simha of the family of Rája Surjana Rao Hádá of Búndí.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ सुखद साधु जन को सदा गन्मुख दानि उदार ॥ सेवनीय सब जगत को जग मा बाप कुमार ॥ १ ॥ कवि मतिराम गनेस को सुमिरत सुख सरसात ॥ ध्यान पैन लागे विघन तूल तूल उडि जाति ॥ २ ॥ मद रस मत्त मलिन्द गण गान मुदित गननाथ ॥ सुमिरत कवि मतिराम के सिद्धि रिद्धि निधि हाथ ॥ ३ ॥

End.—रुचिर अरथ भूषन जो रचि जानै मतिराम ॥ ताको बानी जगत में विलसै अति अभिराम ॥ ३६४ ॥ जबलगि कच्छप कोल सहस मुष धरनि भार धर ॥ जबलगि आठौ दिसनि दिग्घ सोहत दिग्गज बर ॥ जबलगि कवि मतिराम सगरि सागर महि मंडन ॥ अनिल अनल जल बलय जोति मडल आषडन ॥ नृप सत्रुसाल नदन प्रबल भावसिंह भुपाल मनि ॥ तब चिरजीव तब लगि सुखद कहत सकल ससार धनि ॥ ३६५ ॥ कंठ करै जो सभनि में विलसै अति अभिराम ॥ सकल भयो ससार हित कविता ललित ललाम ॥ ३६६ ॥ (आगे इति नहीं है परन्तु कविता के अनुमान से ग्रन्थ पूरा जान पडता है स्यात् कोई दो एक कविता रह गई हो तो हो ॥)

Subject—कविता के नियमों का ग्रन्थ ॥

Note—ग्रन्थकर्ता कवि मतिराम प्रसिद्ध है। इन्होंने इस ग्रन्थ को बूंदी के राजा हाडा सुरजनराव के वशज भावसिंह के लिये रचा ॥

No 68—कौशलेन्द्ररहस्य या रामरहस्य *Verse.* Substance—country made paper Leaves—204. Size—9¼ × 6 inches. Lines—19 on a page Extent—4 845 ślokas Appearance—new Complete Incorrect. Character—Deva nágari Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kauśalendra Rahasya or Ramarahasya A religious book dealing with subjects like spiritual knowledge and love of god etc by Rama Charan Dása (Fl 1780) The manu cript is dated Samvat 1886 (1829 A.D)

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः श्लोक ॥ अमलगुणपयोधि विश्वविश्राम देव विविधविभवदेहस्नेहमचैतनार ॥ चिदनुग्रजगुह दिव्यलोकाधिनाथ मखिल जननिवास रामचंद्र नमामि ॥ १ ॥ अनिर्गुण ज्ञानसत्यादिर्यमदायै कृपाविष्णुमाद्य परेश ॥ सुवेदाततरामानुज विप्रवेप प्रसाम्यादुत सद्धिभाषाकरोमि ॥ दोहा ॥ श्रीपति श्रीसेनाधिपति सठरिपुनाथ कृपाल ॥ पदुम नयन श्रीराम पद सदा भुधारि भाल ॥

End—दोहा । त्रिभुवन सपति लषति जित दपति सीताराम । ध्यानहु उर आपत हनक रामचरन विश्राम ३ इति श्रीमद्रामचरनदास विरचित त्रिभेंद्रमौलिकोशलेंद्र रहस्ये चतुर्थोप्रबध ॥ सवत् १८८६ मिती फागुन वार सोमार सुदु . सुभ ॥

Subject.—ज्ञान भक्ति प्रेम आदि का वर्णन ॥

Note.—ग्रथकर्ता रामचरणदास है । इस ग्रथ का लिपिकाल सवत् १८८६ है ॥

No 69—बाजनामा या दौलतनामा *Prose.* Substance—country made paper Leaves—82. Size—8¾ × 5 inches. Lines—18 on a page. Extent—385 ślokas. Appearance—very old Complete Correct Character—Kaithí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Bázanáma or Daulatanáma—An account of the birds of prey such as eagle etc. The name of the author and the date of composition are not given In one place it is said that Fíroza Śáha once asked the physicians of his court to prepare a treatise dealing with the kinds and treatment of the birds of prey and this book was accordingly written by them There have been 3 Firoza Śáhas who were connected with the Royal family of Delhi The first who reigned from 1282 to 1296 belonged to the Khilji dynasty The second, who reigned from 1351 to 1390 A D belonged to the Tughlak dynasty The third belonged to the Mogal dynasty and was the son of Bahádur Śáha II. If by Firoza Śáha is meant one of the these princes then it must be the last one as the language of the book will bear testimony and consequently the time of this may be approximately fixed at 1850 A.D

Beginning—बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीमि ॥ बहुत तारीफ खुदाइतआला को के पीछे ॥ जो पैदा करन वाला है रात और दिन का जिसने इशारत कुन केकुन को से हफद हजार आलम और आसमान वे सितुन पैदा कीया ॥ जमी को बैल पर रषा बैल को मछली को पीठ पर रषा ॥ मछली हवा पर राषी ॥ याने वह कादिर पाक ने इनसान को एक मुठी पाक सो और गरदिस आसमान सो अरस व कुरसो व लौह व कलम व पैदाइस आदम को येक साइत मो येता सज किया ॥ तमाम आलम तेरी जात मो हैरान है तूँ नीचे परदे के छिपा है तिस खुदाइ का शुकुर वेशुमार ॥ तारीफ हजरत मुहम्मद मुसतफा ॥

End—इलाज कुलन ॥ तिल का तेल लेके नये वासन मो नई रुई की वती डालके चिराग जलावे सनाही ताई तव जो तेल वचे सो रष छोडे मरीज जानवर को देवे तामा तर

करके येक दफ़ा खिलावे ॥ तिस पीछे येरा का गुलाब लेवे जिसमें एक पानगी तर होवे ॥ येक साता खिलावे चगा होए ॥ रिसाला से कामलुल मनसूर का तमाम लिखा है ॥

Subject—बाज इत्यादि शिकारी पक्षियों की पहिचान उनकी आदत मिजाज बीमारियां इत्यादि की पहिचान उनके रखने और सिखाने की तरकीबें उनके इलाज इत्यादि ॥

Note—कर्त्ता के नाम का पता नहीं लगता न समय मिलता है। पुस्तक प्राचीन है। एक जगह किताब में लिखा है कि फीरोजशाह ने हकीमों से कहा कि एक जानवरों की पहिचान व इलाज मुकर्रर करो और उन्होंने इस किताब को बनाया।

No 70—खटमल बाईसी *Verse.* Substance—country made paper Leaves—8 Size—11×7 inches Lines—18 on a page. Extent—130 slokas Appearance—old Complete Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Khatamala Baísí—Praises of bug by Ali Muhiba Khán of Agrá, who composed this book in Samvat 1687 (1630 A.D) when he was going from Agra to Delhi on some private business and had put up at an inn where he was sorely troubled by bugs

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ ज्ञान दृष्टि करि देख ले सब से रामहि राम। काहे पीरो भूलि के राखि लियो एक नाम ॥ १ ॥ नगर आगरे बसतु है अलीमुहिबखां नाम। एक बार दिल्ली चले हुतो मोंहि कछु काम ॥ २ ॥ हो डेरा ते टुक निकट बरस पच्यो अति मेह। ऊट लोग पाछे रहे काहू कियो न नेह ॥ ३ ॥

End—बाघन के गन भांति बन में बसे हैं इते व्यालन के गन मुंह तरें डर वरके। गज सिर डारें धूरि कछु न बसाय यातें ऐसी देह पाई और ऐसे बल धरि के ॥ इनकी का-हा है ये तो पसु हैं विचारे तिहु लोकहीं मे जो बली सो हरे हैं से भरि के। भूमि पै उतारे तब आय प्रान हरें मीच खाट पै न आवै खटमलनि के डरि के ॥ २२ ॥ इति श्री प्रीतम कविराज विरचितं खटमल बाईसी समाप्तः ॥

Subject—खटमलों की प्रशंसा ॥

Note—आगरे के रहने वाले अलीमुहिबखां उपनाम प्रीतम कवि ने संवत १६८७ (रिपि वसु दीपक चन्द) में इस ग्रन्थ को बनाया।

No 71—सुवृत्तहार *Verse* Substance—country made paper Leaves—105 Size—10½×6½ inches. Lines—20 on a page Extent—2,000 slokas. Appearance—ordinary Complete. Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Suvrittahára.—A book on Hindi Prosody by the poet Gajarája of Banáras He composed this book in Samvat 1903 (1846 A.D) Dr Grierson says that he was born in 1817 A.D

Beginning—श्रीगणेशायनम ॥ अथ सुवृत्तहार लिख्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धि करनि जग जननि के धामें नाम मनाय ॥ राजति वृत्त मुकतानि में मनि सरोज हिर गाय ॥ १ ॥ गोद लिये गिरिजा गन नायक है अपने मनको प्रनपाली। छूटी लसैं अलकैं मुकपोल पैं माने। विधुतुद की परनाली ॥ पान के हेतु विलुड भयो गजराज पयोधर पै मति घाली। अवन

कुभ श्रमी सो भरें मनो रचक बैठो है तनक ताली ॥ २ ॥ सोरठा ॥ गनाधि पे १६०३ गनि वाम । परस माघ सुदि पचमी ॥ गुरु वासर अभिराम । पुर्व भाद्र उडु परिघ सुजि ॥ ३ ॥

End—सोरठा ॥ ईश्वर गुरू दयाल । सानी वानी श्रमृत की ॥ कविवर गर की माल कही सुकवि गजराज सो ॥ १० ॥ दोहा ॥ तेरी कविता पोथि के सो दिसि श्रावति लाज । यक वचन बहु वचन को समुझि धरो गजराज ॥ ११ ॥ क्रिया भूत वतमान को सहित भविष्य विवेक ॥ नारी नर वाचो सबद समुझि रचो तजि टेक ॥ १२ ॥ सुक्ति उक्ति दरसन कह्यो दरसाये सब ठैाहि ॥ निरपि पद्य सुकवीन को भयो ग्यान तब मोहि ॥ १३ ॥ इति श्री गजराज विगुफित सुवृत्त हार सपूर्णम् ॥

(इसके आगे इसी कवि को एक पत्र में कुछ श्रोर कविता है) ॥

Subject—काव्य के नियम ॥

Note—ग्रन्थकर्त्ता कवि गजराज है । इस ग्रथ का निर्माण काल सवत् १६०३ माघ सुदी ५ गुरुवार है । लिपिकाल नहीं दिया है ॥

No 72—हरिभक्तिविलास पुर्वार्द्ध *Verse* Substance—country made paper Leaves—286 Size—9½ × 6 inches. Lines — 14 on a page. Extent — 3 500 ślokas Appearance—ordinary Complete Correct Character—Devanágari Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Haribhaktivildsa Purvardha—Translation of the first half of the 10th canto of the Bhágavat Purána by Rájá Vikrama Sáhi of Bundelakhanda, one of the descendants of Chhattra Sáhi (B 1649 and D 1731 A.D) Vikrama Śáhi was born in 1785 and died in 1828 A D (See No 73)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ श्री हरि भक्ति विलास लिष्यते ॥ दोहा ॥ एक रदन गज वदन वर गिरिजा तनय सपुत । चहो सुमति हरि भजन हित गहो बाहु मजबूत ॥ १ ॥ कृष्ण कथा जमना विमल गोवरधन मन मोद ॥ प्रेम प्रगट ग्रंदा विपन राधा रवन विनोद ॥ २ ॥ सोरठा ॥ नारायन नर पास । सुक सनकादिक सारदा ॥ तिन पद पकज आस । जन विक्रम हरि जस चहत ॥

End—छद हरिगीतका ॥ यह कृष्ण चरित अपार पारावार को कवि कहि सके । सुक सेष सभु स्वयंभु नारद कहत सारद मति थके ॥ कछु कह्यो हृदय विचार मति अनुसार श्रुति समत यहो । जो सुने गावे मुदित मन सो परम पद पावे सही ॥ १५ ॥ सोरठा ॥ अपनी गति अनुसार । उडत विहग अकास जिमि । पावत नाही पार । तिमि विक्रम हरि जस कहत ॥ इति श्रीमन महाराज छत्रसाल वसावतस नृपति विक्रमादित्य कृते हरिभक्तिविलासे हतनापुरी भवनो नाम येकोनपचासतमो अध्याय ॥ ४९ ॥

Subject—श्री कृष्ण को ब्रजलीला । श्रीमद्भागवत दशमस्कध का छदोबद्ध भाषानुवाद पुर्वार्द्ध ॥

Note—ग्रन्थकर्त्ता छत्रसाल वशज राजा विक्रमादित्य हैं । ये सन् १७८५ में जन्मे श्रोर १८२८ में मरे थे ॥

No 73—हरिभक्तिविलास उत्तरार्द्ध *Verse* Substance — country made paper Leaves—357 Size—9½ × 6 inches Lines—14 on a page Extent—4 370 ślokas Appearance — ordinary Complete Correct Character — Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárájá of Banáras

Haribhaktivilása Uttarárdha.—Translation of the second half of the 10th canto of the Bhágavat Purána made in Samvat 1880 (1823 A.D.) by Rája Vikrama Sáhi of Bundelkhanda (See No 72) The manuscript is dated Samvat 1883 (1826 A D)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हरिभक्ति विलास को उत्तरार्द्ध लिष्यते ॥ दोहा ॥ पंचासत अध्याय कहि सामथ समानि। पुनि पठये प्रभु बंधु निज द्वारावति सुख मानि ॥ १ ॥ निज लीला अरतन धरो अनुकूल कृपा निकेत। भूर भार मो भूम पै ताहि उतारन हेत ॥ उनचास अध्याय कर पुरव कथा बखान। अब हरि को उत्तर चरित सुनियै नृपति सुजान ॥

End—दोहा ॥ नहि कविता सनबंध कछु नहि यन बुद्धि विचार। जन विक्रम प्रभु चरित कहि निज मत को अनुसार ॥ ७१ ॥ इति श्रीमनमहाराज छत्रसालवंशावतंसे नृपति विक्रमादित्य कृत हरिभक्तिविलासे नब्बे अध्यायः ॥ ९० ॥ दोहा ॥ संवत् अष्टादस असी माघ मास गुरु वार। किय हरि भक्ति विलास यह सकल सुतिन को सार ॥ १ ॥ आषाढे मासे शुभे शुक्ल पक्षे त्रयोदस्यां रवि वासरे ॥ आसिन संवत् १८८३ मुकाम महराज नगरे ॥ शुभं शुभमस्तु मंगलं ददाति ॥ श्री ॥ श्री ॥

Subject.—श्री कृष्ण कथा। श्रीमद्भागवत दशम स्कंध उत्तरार्द्ध का भाषा छंदों में अनुवाद ॥

Note—ग्रन्थकर्त्ता छत्रसालवंशज राजा विक्रमादित्य हैं। निर्माण काल संवत् १८८० माघ मास गुरु वार और लिपिकाल संवत १८८३ आषाढ शुक्ल १३ रविवार है ॥

No 74.—अमरप्रकाश *Verse.* Substance—country made paper Leaves—51 Size—10½ × 6¾ inches. Lines—15 on a page. Extent—850 Ślokas. Appearance—ordinary Complete Generally correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Amaraprakása.—The translation of the Amarakosa by the poet Khumána, made in Samvat 1893 (1836 A.D) He lived under the patronage of Vikrama Sáhi of Charakhári (1785 1823 A.D). There is no doubt that he is the same poet who according to Dr Grierson composed Lachhamana Śataka and Hanumána Nakhasikha.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री राधाकृष्णाय नमः ॥ श्री मते रामानुजाय नमः ॥ श्री हयग्रीवाय नमः ॥ श्री सारदायै नमः ॥ अथ लिष्यते अमर प्रकास ॥ दोहा ॥ श्री वागीसुर पद पदम रज बंदौं सानंद ॥ सदाकिनि मकरन्द जहं परिमल परमानंद ॥ १ ॥ दिनदिनाट हय वदन के बंदौं जिन सुमिरत ॥ विघनन घर के घाट के हाट हाट भटकात ॥ २ ॥ बंदौं वाजी बदन की ताजी गरज सतार ॥ सुभ राजी बाजी फिरै भाजी विघन कतार ॥ ३ ॥

End—कमल के केसरा टडु फेदा मुरारि के दो दो नाम ॥ वारिज केसर किंजलक तासु दई नल नाल ॥ बिसकंद करहाट अरु शिफा बिस मृणाल ॥ ६३ ॥ पीन कोस पुनि वराटक छतिया भाषत ताहि ॥ अरु नव दल संवर्तिका से नवीन दल ताहि ॥ ३४ ॥ इति श्री सुकवि खुमान कृत भाषा अमर प्रकास ॥ और वर्ग यह नाम करि पूरन दसम विलास ॥ ६५ ॥

Subject—अमरकोष का अनुवाद ॥

Note.—ग्रन्थकर्त्ता खुमान कवि हैं। ये छत्रसाल वंशज बुंदेलखंडीय विक्रमादित्य के आश्रित थे। निर्माण काल संवत १८९३ (रस गुन वसु ससि) वैशाख शुक्ल नृसिंह चतुर्दशी बुद्ध वार है ॥

No 75—शकुंतला नाटक *Verse* Substance—country made paper Leaves—48 Size—10¾ × 6¾ inches. Lines—15 on a page Extent—1 500 ślokas. Appearance—old Complete Generally correct Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Śakuntala Nátaka—Translation of the Śakuntalopákhyána by the poet Nivája (1680 A D) He made this translation under the orders of Azama Sáha son of the Emperor Aurangzeb The manuscript is dated Samvat 1891 (1834 A.D)

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ रापत न सूरज ससी की परवाहि निसि वासर प्रफुल्लित रहत यक वानो के । ध्यानहू किये ते देत पान मकरंद वास नाक में लहेया जिनकी कहानी के ॥ कैसे और पानी के सरोज सरि करें सोचे मान मेजे सिर सोस सुरसरि पानी के । सिद्धि की सुगंधि पाइ मेरे मन मधुकर पाय पकरन पद पंकज भवानी के ॥ १ ॥

End—दोहा ॥ यो मुनि बैठि विमान म मुनि के करि परनाम ॥ सकुंतला सुत सहित नृप आयो अपने धाम ॥ चो० ॥ इहि विधि भाग भाल मे जाग्यो । राजा राजु करन फिरि लाग्यो ॥ नृप के सुष सब रैयत रानी । घर घर पल मे नैामत वानी ॥ सकुंतला अब भई पटरानी । इतनी यह ह्वै चुकी कहानी ॥ इति श्री सकुंतला नाटक कथायां चतुर्थोंयोक समाप्त सुभमस्तु ॥ सवत् १८९१ मिती वैशाप कृष्ण पक्ष सप्तमी ॥ * ॥ श्रीरामायनमः ॥ श्रीराम ॥

Subject—शकुंतलोपाख्यान ॥

Note—ग्रन्थकर्ता निवाज कवि हैं । ये आजिमशाह के आश्रित थे और उन्हीं की आज्ञा से इन्हों ने शकुन्तला भाषा में बनाई । लिपिकाल सवत १८९१ वैशाष कृष्ण ७ है ॥

No 76—नायिका भेद बरवा छंद *Verse* Substance—country made paper Leaves—20 Size—10 × 6½ inches Lines—7 on a page Extent—200 ślokas. Appearance—old Complete Generally correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Náyika Bheda Barva Chhanda—A detailed description of the heroes and heroines The name of the author or any other information regarding him or his work could not be ascertained

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ अथ नायका भेद बरवा छंद दोहा लिख्यते ॥ दोहा ॥ कवित कहा दोहा कहा तुले न छप्पे छंद ॥ विरचो यहो विचारिके यह बरवा रसकंद ॥ १ ॥ बेधक अनिआरो बडो समुझै चतुर सुजान ॥ सुनत जात चित चाव पै यह बरवे के बान ॥ २ ॥

End—परिहास बरवा ॥ निरखत भौह चढाय धनुष मनोज ॥ लावत उर उपटनवा बैठि उरोज ॥ १६५ ॥ दोहा ॥ लछन दोहा जानिये उदाहरन बरवान ॥ दुनो के संग्रह भए रस शृंगार निधान ॥ १६६ ॥ यहि नवीन संग्रह सुनो जो देवै चितदेइ ॥ बिबिध नाइका नायकनि जानि भलो विधि लेइ ॥ १६७ ॥ इति श्री नायका विभेद संपूर्ण ॥ शुभ मस्तु ॥ सिद्धि रस्तु ॥ ॥ श्रीराम ॥

Subject—नायिका भेद दोहा तथा बरवा छंद में ॥

Note—इसके अंतिम दोहे से यह संग्रह जान पडता है परन्तु संग्रहकर्ता का नाम कहीं नहीं मिला न कोई कालही इसमें है ॥

No 77—अगुन सगुन निरुपन कथा *Verse* Substance—country made paper Leaves—59 Size—10 × 4⅞ inches. Lines—7 on a page. Extent—735 ślokas Appearance—ordinary Complete. Incorrect. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Aguna Saguna Nirupana Kathá.—A book dealing with the doctrines of Śivánanda, who wrote it in Samvat 1846 (1789 A.D) The manuscript is dated Samvat 1890 (1833 A.D)

Beginning—श्रीगणेशायनम. ॥ दोहा ॥ रघुवर नौ गुरपात्न शेष हियो नाम उपदेस ॥ शिवानंद सुमिरन करो मेटो सब कलेस ॥ १ ॥ अस्तुति श्री हनुमानजी के ॥ दोहा ॥ यक दिवस पितु कहेउ अस शीय सो सुनहु विचारि ॥ हनुमान अह गग को स्तुति करहु सुधारि ॥ २ ॥ आपर अपर न जानउ रामवरण सों नेह ॥ शीय कहत कर जोरि के पितु आचा मय यह ॥ ३ ॥

End—सहस ह्रवति निठवर्श हो होत मुहांस ॥ शिवानन्द गति जानन सुपदेव व्यास॥६॥ पटसे सहस अठारह हो अउ तिनि मानु॥ शिवानंद यह अत्पथा नितु दिन जान ॥१०॥ शिवानंद जेहि गुर मिल हो तिं ह गति जानु ॥ कथा कौर तम निरचे मनु अनुमानु ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ भव्द १ यक वसु ८ वेद ४ रस ६ माघव वदि सोमवार ॥ हरि लिखि गंगा के निकट शिवानंद भो पार ॥ १ ॥ दोहा ॥ भृगु आश्रम के पूर्व दिश पचकोस परमान ॥ हल्दी ग्राम हरि नाम जपि शिवानंद सुरधाम ॥ २ ॥ इति श्री शिवानंद विरचितायां ब्रह्मज्ञानादिक अगुन सगुन निरूपण नाम कथा समाप्त ॥ शुभ भूयात् ॥ सवत् ॥ १८ ॥ ९० ॥ लिखि त कारयाम् ॥

Subject.—वेदान्त ब्रह्मज्ञान ॥

Note—ग्रंथकर्ता शिवानन्द है । इस ग्रन्थ का निर्माण काल सवत् १८४६ और लिपि काल सवत् १८९० है ।

No 78—मोक्षपथप्रकाश *Verse*. Substance—Káśmír made paper Leaves—127 Size—10 × 4⅞ inches. Lines—11 on a page. Extent—3 032 ślokas Appearance—old Complete Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Mokṣapantha Prakáśa.—A book dealing with the doctrines of Vedántism by Gulába Singha of Amritsar He wrote this book in Samvat 1835 (1778 A.D) and the manuscript is dated Samvat 1837 (1780 A.D). Dr Grierson says that he was born in 1789 which is decidedly wrong The date of his birth must be fixed at the earliest between 1750 and 1760 A.D

Beginning—ॐ सतिगुरु प्रसादि ॥ ॐ श्रीगणेशायनम ॥ ॐ श्री रामाय नम ॥ सवैया ॥ या जगमे जिनके पद पकज सेवत नीत सुरेश्वर भारी ॥ श्रोर सुरासुर सेवत है अरु सांद्रि भजे भवमे सुपचारी ॥ सात भजे जगमात भजे पुनि जाहि मनाय जिते त्रिपुरारी । सो गणनायक होइ प्रसन गहे पद वदन भेट हमारी ॥ १ ॥

End—सवैया ॥ शत अठारह सुभ सवत मे पुनि त्रिशत पाच भये अधिकाई ॥ सुभ माघ सुदी शुभ सोम दशे शुभवासर सोम महा सुखदाई ॥ तिथि पचम नाम यसतो कहे सभ लोकन को सुनने दरदाई ॥ दिन ताहि सु पूरन ग्रंथ भयो हरिके पद पकज भेट चढाई ॥ ६२ ॥ सवैया ॥ गणनायक सारस्वती रघुवीर सुनानक श्री गुरु आदि उदारे ॥ गुरु गोविंदसिंघ उदार वडे पुनि जो गुरु मे भवसागर तारे ॥ तिन कौन उपायन पदवी कहु लायक नाहि पिखो सम धारे ॥ कर जोर भने बिध दड सम पद पकज मे वहु वद हमारे ॥ ॥ ६३ ॥

इति श्रीमन्मानसिंह वरसा लिखत गुलाबसिंघेन गोरो रामात्मजेन विरचिते मोक्षपंथप्रकाशे विदेहमुक्तिनिर्णयो नाम पंचमोनिवासः ॥ ५ ॥ शुभं भूयात ॥ * ॥ श्रीरामाय नमः ॥ * राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ॥ सहस्र नाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने ॥ संवत ॥ १८३० ॥ शुभमस्तु सर्वजगतां ॥

Subject—वेदांत ॥

Note.—ग्रन्थकर्त्ता गुलाबसिंह अमृतसर निवासी है। यह ग्रंथ सवत् १८३५ माघशुक्ल वसंत पंचमी सोमवार को अमृतसर में पूर्ण हुआ। इसका लिपिकाल सवत् १८३० है।

No 79.—जानकीमंगल *Verse* Substance—country made paper Leaves—32. Size—11 × 5 inches. Lines—5 on a page. Extent—260 slokas. Appearance—new Complete Correct. Character—Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Jánakí Mangala. — Description of the marriage of Ráma and Sítá by Tulasí Dása. There are two manuscript copies of this book in this library The text of the other copy is mostly incorrect.

Beginning.—श्रीगणेशायनमः ॥ गुरु गनपति गिरजापति गौरि गिरापति ॥ सारद शेष सुकवि श्रुति संत सरल मति ॥ हाथ जोरि करि विनय सबहि सिर नावउं ॥ सियं रघुबीर बिबाह जथामति गावउं ॥

End.—छंद विकसहिं कुमुद जिमि देखि बिधु भई अवध सुख सुख सोभा मई ॥ यहि बिधि बिबाहे राम गावहि सुकवि कल कीरति नई ॥ उपबीत ब्याह उछाह जे सियराम मंगल गाइ हैं ॥ तुलसी सकल कल्यान ते नर नारि अनुदिन पाइ हैं ॥ २४ ॥ इति श्री गुसाईं तुलसीदास विरचितं जानकी मंगल संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥ सिद्धि ॥ रस्तु ॥

Subject.—श्री राम जानकी का विवाह ॥

Note.—यह ग्रन्थ प्रसिद्ध श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत है ॥

No 80.—बरवारामायण *Verse* Substance—country made paper Leaves—23 Size—13 × 5 inches Lines—7 on a page Extent—460 slokas Appearance—old. Complete Correct. Character—Devanágari Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Baravá Rámáyana.—The story of Rama Chandra's life in the Barvá metre by Goswámí Tulasí Dása. The manuscript is dated Samvat 1873 (1816 A.D.)

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बरवा रामायन लिषते ॥ बरवा गननायक बरदायक देव मनाय ॥ विघ्न विनास करन प्रभु होउ सहाय ॥ १ ॥ श्री गुरु पद अबुज रस हृदय समारि ॥ ॥ बरनन करौं राम जस कृपा सुधारि ॥ २ ॥ श्री रघुबर अग सोभित अनुलित काम ॥ भक्त चकोर पूर्ण बिधु करौ प्रनाम ॥ ३ ॥

End.—भजन प्रभाव भांति बहु बरनेउ बेद ॥ तुलसी गायउ हरि जस मिटि भव षेद ४०३ ॥ करन पुनीत हेतु निज बचन बिबेक ॥ तुलसी पेषेहु सेवत राषत टेक ॥ ४०४ ॥ सीता राम लषन सग मुनि के साथ ॥ तुलसी चित चित्रकूटहि बस रघुराज ॥ ४०५ ॥ इति श्री उत्तर कांड बरवा रामायन संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् ॥ १८७३ ॥ इति बरवा रामायन ॥ संपूरन ॥ कीमुने पढ़े माघबाबु ॥ सीन प्रसाद के पोथी ॥

(इसके अनन्तर ४ पत्र और हैं उनपर ९ पंतियों में यह लिखित है)—मनी छानरी लिन और दृष्टि रीत भोयारी ॥ बहुरि देत लेहि टेविये मानहु धनुधारी ॥ भरत लषन रिपुदमनहु धरे नाम विनय लोके ॥ गये मोत मऊट मिटे तन पुरती के ॥ सफल मनोरथ विधि किये सत्र विधि सवरी के ॥ अब हूँ है गाये मुने सब ....

(आगे कुछ नहीं है)

Subject—बरवा छन्द में संक्षिप्त रामायण ॥

Note—प्रसिद्ध श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत—लिपिकाल संवत् १८०३ है ॥

No 81—वैराग्यसंदीपिनी *Verse* Substance — country-made paper Leaves—11 Size—9 × 4½ inches Lines—5 on a page Extent—55 ślokas Appearance — new Complete Generally correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Vairágya Sandipiní—Moral lessons on worldly renunciation by Goswámí Tulsí Dása.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ राम वाम दिसि जानकी लषन दाहिनो ओर ॥ ध्यान सकल कल्यान मय सुर तरु तुलसी तोर ॥ १ ॥ तुलसी मिटे न मोह तम कीये कोटि गुन ग्राम ॥ हृदय कमल फूले नहीं बिनु रविकुल रविराम ॥ २ ॥ सुनत लषत श्रुति नैन बिनु रसना बिनु रस लेत ॥ वास नासिका बिनु लहै परसत बिना निकेत ॥ ३ ॥

End—फिरी दोहाई राम की गे कामादिक भाजि ॥ तुलसी ज्यो रवि के उदे तुरत जात तम लाजि ॥ ६१ ॥ यह बिराग संदीपनी सुजन सुचित सुनि लेहु ॥ अनुचित वचन विचारि कह सो सुधारि तह लेहु ॥ ६२ ॥ इति श्री वैराग्य संदीपिन्या माहात्म्य विरचायिन्या श्री गोस्वामी तुलसीदास कृतायां शांत वर्णन नाम तृतीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

Subject—उपदेशयुक्त ज्ञान ॥

Note—कर्ता प्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास जी हैं ॥

No 82—छन्दावली रामायण *Verse* Substance — country made paper Leaves — 12 Size — 9 × 4 inches. Lines—7 on a page. Extent—120 ślokas Appearance—new Complete Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Chhandávalí Rámáyana—The story of Ráma Chandra's life in several metres by Goswámí Tulsí Dása.

Beginning—श्री मते रामानुजायनमः ॥ श्री रामायन को इतिहास लिष्यते ॥ ॥ दोहा ॥ दशकंधर घटकर्ने अघ भार धरा दुख होइ ॥ गई गगन गो देह धरि कहि सुरपति सो रोइ ॥ १ ॥ छंद चौपइया ॥ सुरपति गुर बूझा सुनु मतिसूझा गे विधिलोक तुरंता ॥ विधि सुर समुझाये सग सिधाये जह सोवत श्रीकंता ॥ दशमुष की करनी बहु विधि बरनी धरनी सेहि विधि रोई ॥ मुनि आरत बानी भई नभ बानी विधि जाना नहि कोई ॥ विधि वचन सुनाये सुर समुझाये तजहु सोच मन देवा ॥ जे जन हितकारी प्रभु असुरारी करहि पार सेइ सेवा ॥ बानर गो पुहुा तनु धरि रोहा बसहु जाइ महि माही ॥ अवधेस निकेता व्यूह समेता प्रभु आवत तुम पाही ॥ दोहा ॥ इहि विधि विबुध विरोधि ते गे सुर निज निज धाम ॥ कछु काल बीते अवध प्रगट भये श्रीराम ॥ ४ ॥

End—छंद ॥ नित प्रात सरित अन्हात वधुन सहित प्रभु भोजन करै ॥ गज बाजि राज समाज लषि सब देषि बन उपबन फिरै ॥ बैठे सभा महं जाइ श्री रघुबीर दुख सब के हरै ॥ करि ग्यान ध्यान उलूक को लषि लोग सब विसे करै ॥ माडवी श्रुति कीरति उर्मिला सो सबनि सुत द्वै द्वै जने ॥ जानकी सुत जुगल जाये सबनि मन आनंद घने ॥ सनकादि नारद आदि मुनिबर सकल अवधहि आवही ॥ लषि जाइ रघुबर के चरित सब विधिहि जाइ सुनावही ॥ इक बार कहु महिदेव को सुत सभा मह आयो मर्यो ॥ गुरु बूझि तपते मारि सुद्रहि तबहि सो उठि जिय परयो ॥ इहि भांति रामचरित्र परम पवित्र नित नूतन करै ॥ कहि दास तुलसी सुनत सब के वचन मन पातक टरै ॥ १६ ॥ दोहा ॥ सुनि सीता के जुगल सुत रामकीन्ह अनुमान ॥ लोक सिषावन देन हित बोले श्री भगवान ॥ इति श्री उतर काड समाप्तः ॥ ७ ॥ श्री गुसाई तुलसीदास कृत छंदावलि रामायनसः ॥

Subject—विविध छंदो मे सचित्र रामायण सप्तकांड ॥

Note—कर्त्ता प्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास जी है ॥

No 83—शतप्रश्नोत्तरी *Verse* Substance—country made paper Leaves—14 Size—10¼×5¼ inches. Lines—13 on a page Extent—500 ślokas Appearance—ordinary Complete Incorrect. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banaras

Śataprasnottari.—A book on the knowledge of the creator according to Vedántism by Manohara Dása Niranjani.

Beginning—श्री गणेशायनम. ॥ अथ सो प्रश्नोत्तरी लिष्यते ॥ सोरठा ॥ वाच्य लक्ष करि जान निर्गुण सगुण जो कह्यो ॥ करि नमस्कारि वखानि वाच्य त्याग करि लक्ष को ॥ १ ॥ चौ० ॥ अज्ञान शक्ति आत्मा की कहिये ॥ आत्म अज्ञान अनादि मिले लहीये ॥ अज्ञान अमिल रह्यो शुद्ध वषाना ॥ ताको ब्रह्म करिके सो जाना ॥ २ ॥ अज्ञान मिल्यो सो साषी कहीये ॥ दोइ भाग अज्ञान मे लहीये ॥ जोविश्वर कहीये पुनि तामहि ॥ साषी नाम कह्यो है जा महि ॥ ३ ॥

End—लक्ष अर्थ कह्यो यह मोहे ॥ जामहि द्वैत भान नहि होई ॥ द्वैत भान वाधा कह्यो तामहि ॥ फल फलनाम दोइ नहि तामहि ॥ ११ ॥ फल चिदाभास परमाता ॥ अह ब्रह्म फल कहयो विधाता ॥ स्वरूपमाह दोइ फल नाही ॥ विकल्प रहित रहे सो माही ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ हो मे हो तु नाहि हो तू हो मे हे कहो ॥ सब है हो तू माहि हो तू होत मक है ॥ १३ ॥ इति श्री शतप्रश्नोत्तरी भाषा मनोहरदास निरंजनी कथ्यते नवमोध्डः ॥ ६ ॥ समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥

Subject—वेदान्त ब्रह्मज्ञान ॥

Note—ग्रंथकर्त्ता मनोहर दास निरंजनी है ॥

No 84—ज्ञान वचन चूर्णिका *Verse* Substance—country made paper Leaves—14 Size—10×5 inches. Lines—13 on a page. Extent—550 ślokas. Appearance—old. Complete Incorrect. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Gyána Vachana Chúrniká—The doctrines of Vedántism by Manohara Dása Niranjani The manuscript is dated Samvat 1831 (1774 A.D.).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ ज्ञान वचन चूर्णिका लिख्यते ॥ दोहा ॥ सद्गुरु ह्वै सम तुल्य क्यों राम अज्ञान करैं दूर ॥ जग घट में प्रकाश करि चंदन को निज नूर ॥ १ ॥ जीवेश्वर चैतन्य महि कहिए है द्वै नाम ॥ सर्वथा अन्वय पुन संसारी दुखधाम ॥ २ ॥ कर्म सहित पुनि रहित है सहित कर्म कह्यो सोय ॥ संसारी ताते भयो रहित भयो मोह सोय ॥ ३ ॥

End—तब नीर चूरण भये उदर रोग सब जाय । त्यों साधन सहित विचार ते संसार रोग नसाय ९ सकल रोग संसार सब नासे करै विचार० कहै मनोहर निरंजनो यह निश्चै निरधार ॥ ३ ॥ इति श्री ज्ञान चूरण वचनिका समाप्तम् शुभमस्तु ॥

(इसके आगे कुछ संस्कृत श्लोक संस्कृत टीका सहित ८ पत्रियों और संवत् १८७१ आषाढ़ बदी ४ भृगुवासरे लिखा है)

Subject—भाषा वेदान्त ॥

Note—कर्ता मनोहरदास निरंजनी हैं—लिपिकाल संवत् १८७१ आषाढ़ बदी ४ भृगुवार है ॥

No 85—गोरखसार *Prose* Substance—country made paper Leaves—17 Size—6¾×4¼ inches Lines—17 on a page Extent—300 ślokas Appearance—ordinary Complete. Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Gorakhasára.—The principles of Yoga philosophy by Gorakha Nátha For particulars about Gorakha Nátha see Report for 1903 The manuscript is dated Samvat 1859 (1802 A D)

Beginning—श्रीरामचन्द्रायनमः श्रीगणेशायनमः श्री गुरुपरमात्मनेनमः श्रीलक्ष्मीपतये नमः ॥ श्रीबालमुकुंदाय नमः श्रीवासुदेवायनमः श्री राधावल्लभायनमः ॥ श्री सीतापतयेनमः अथ गोरखसार लिख्यते ॥ मंगलाचरन ॥ श्री गुरु परमानन्द तिनिको दंडवत है ॥ हे कैसे परमानन्द आनन्द स्वरूप हैं ॥ सरीर जिन्हिको जिन्हके निकसि गये ते सरीर चेतनि अरु आनन्दमय होतु हैं ॥ मैं जु हौं गोरिष सो मछंदरनाथ को दंडवत करत हौं है कैसे वे मछंदरनाथ ॥ आत्मा जोति निश्चल है ॥ अंतःकरन जिनिको ॥ अरु मूलद्वार ते छह चक्र जिनि नीकी तरह जाने ॥ अरु जुगकाल कल्प इनि को रचना तत्व जिनि गायो ॥ ग्यान सुगंध के समुद्र तिनिको मेरो दंडवत ॥ १ ॥

End—सो यह पुरुष संपूर्ण तीर्थ अस्नान करि चुको ॥ अरु संपूर्ण पृथ्वी ब्राह्मननि को दे चुको ॥ अरु सहस्र जग्य करि चुको ॥ अरु देवता सर्व पूजि चुको ॥ अरु पितरनि को संतुष्ट करि चुको ॥ स्वर्ग लोक प्राप्त करि चुको ॥ जा मनुष्य के मन छन मात्र ब्रह्म के विचार बैठो ॥ अरु थिर हो ॥ ६० ॥ इति श्री गोरष मत जोग शास्त्र संपूर्ण समाप्तम् ॥ अगहन सुदि ९ संवत् ॥ १८५९ ॥

॥ छ ॥ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

Subject—योग ॥

Note—ग्रंथकर्ता गोरखनाथ हैं । इस प्रति का लिपिकाल संवत् १८५९ है ॥

No 86—कवित्त बेनी कृत *Verse* Substance—country made paper Leaves—63 Size—10×6½ inches. Lines—15 on a page. Extent—935 ślokas Appearance—new Complete Correct Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Kavitta Bení Krita—A collection of 267 kavittas of the poet Bení (1760) written in the erotic style

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ भौंरों फुलेन फुली अलकैं मुकुलों अखिआ बतिया तुतरोहैं ॥ बेनी चलो उठि के अँगराइ उठाइ भुजा जमुहाइ मिठोहैं ॥ पीक की लीकैं कपोलन मंडित पंडित से अधरा मुरझोहैं ॥ भोर की भोरी सी वानि मडी चितये चित मे चढ़ी वे चढ़ी भोहैं ॥ १ ॥

End—पायरत कान सुनेहो परो सो सरूप भरोसो परे अखिया च्वे ॥ बेनी सुभाउ रहै पसरो सो सुभाउ बरोसो न और छके छ्वै ॥ कान्ह परो सो रहै इतहो चित चातु हरो सो बिसूरि कलाये ॥ आगनहू को भरोसो न दै झगरो सो रहै टर्ड मारे न मे हू ॥ २६० ॥

Subject—शृंगार रस की कविता ॥

Note—ग्रन्थकर्ता बेनी कवि हैं। इस प्रति में २६७ कवित्तो का संग्रह जान पडता है ॥

No 87—रामाज्ञा सगनौती *Verse* Substance—country made paper Leaves—30 Size—10½×4½ inches. Lines—8 on a page. Extent—334 ślokas Appearance—new Complete Incorrect. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rámágyá Saganauti—Consideration of auspicious moments for doing anything, by Goswámí Tulasí Dása.

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ प्रथम सर्ग लिख्यते ॥ पहिली दोहाई ॥ बानी बिनायक अब हर रवि गुरु रमा रमेस ॥ सुमिरि करहु सब काज शुभ मंगल देश विदेश ॥ १ ॥ गुरु सारदा सिंधुर बदन ससि सुरसरि सुरगाई ॥ सुमिरि करहु मंगल मुदित मन होईहि सुकृत सहाई ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुरु गनपति हरि मंगल मंगल मूल ॥ सुमिरत करतल सिद्धि सब होइ ईस अनुकूल ॥ ३ ॥

End—ओरे तेहि कामहि अनुसरै सो दोहा जब होई ॥ सगुन समीय सब सत्य फल कहब राम मति सोई ॥ ६ ॥ जन बिसवास बिबिध मनि सगुन मनोहर हार ॥ तुलसी रघुबर भक्ति उर बिलसति बिमल बिचार ॥ ७ ॥ इति श्री तुलसीदास कृत सगनौती रामाग्या सपुर्ण ॥ एक सो आठ कमलगटा धरन तीन मूठी धरै सात को भाग दै गने पहिलो मूठी को सर्ग ॥ दूसरो मूठी को दहाई ॥ तीसरी मूठी को दोहा ॥ ऐसे दै गने याको विधि * ॥

Subject—शकुन विचार ॥

Note—ग्रन्थकर्ता श्री गोस्वामी तुलसीदास हैं ॥

No 88—विनयसार *Verse.* Substance—country made paper Leaves—52 Size—6×6 inches. Lines—12 on a page Extent—775 ślokas. Appearance—old Incomplete Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Beginning.—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ ध्यान चन्दन चूर्णिका लिख्यते ॥ दोहा ॥ रवि गुरु द्वै सम सुन्य वयो तम अज्ञान कर्ई दूर ॥ तम उर मे प्रकाश करि चंदन कौ निज पूर ॥ १ ॥ जोगेश्वर चेतन्य मति कहियत है द्वै नाम ॥ सर्वज्ञता अन्यय पुन मसारी सुखधाम ॥ २ ॥ कर्म सहित पुनि रहित है सहित कर्म कहयो सोय ॥ ससारी तासो भयो रहित भयो सोइ सोय ॥ ३ ॥

End.—तम नीर चूरण भये दद्दर रोग सब जाय । त्यो साधन सहित विचार से ससार रोग नसाय ९ सग्रय रोग ससार सब नासे करे विचार० करे मनोहर निरखनी यह निहचे निरधार ॥ ३ ॥ इति श्री ध्यान चूरण चर्णिका समाप्तम् शुभमस्तु ॥

(इसके आगे कुछ संस्कृत श्लोक संस्कृत टीका सहित ८ पत्रियों और सम्वत् १८३१ अषाढ़ वदी ४ भृगुवासरे लिखा है)

Subject.—भाषा वेदान्त ।

Note.—कर्त्ता मनोहरदास निरन्जनी हैं—लिपिकाल सवत् १८३१ आषाढ़ वदी ४ भृगुवार है ।

No 85.—गोरखसार *Prose* Substance—country made paper Leaves—17 Size—6¾×4¾ inches. Lines—17 on a page Extent—200 ślokas. Appearance—ordinary Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Gorakhasára.—The principles of Yoga philosophy by *Gorakha Nátha*. For particulars about Gorakha Nátha see Report for 1903 The manuscript is dated Samvat 1859 (1802 A.D)

Beginning.—श्रीरामचंद्रायनमः श्रीगणेशायनमः श्री गुरुपरमात्मनेनमः श्रीलक्ष्मीपतये नमः ॥ श्रीगोपालमुकुंदाय नमः श्रीवासुदेवायनमः श्री राधावल्लभायनमः ॥ श्री सीतापतयनमः अथ गोरखसार लिख्यते ॥ मगलाचरन ॥ श्री गुरु परमानंद तिनिको दडवत है ॥ है कैसे पर मानंद आनंद स्वरूप है ॥ सरीर जिन्हिको जिन्हके निकस गये ते सरीर चेतनि अरु आनंदमय होतु हे ॥ मे जु हो गोरिष सो मछंदरनाथ को डंडवत करत हो ॥ है कैसे वे मछंदरनाथ ॥ आत्मा जोति निश्चल है ॥ अनहदतान जिनिको ॥ अरु मूलद्वार ते छह चक्र जिनि नीको तरह जाने ॥ अरु जुगकाल कल्प इनि की रचना तत्व जिनि गायो ॥ ग्यान सुगध के समुद्र तिनिको मेरो दडवत ॥ २ ॥

End.—सो यह पुरुष सपूर्न तीर्थ अस्नान करि चुको ॥ अरु सपूर्न प्रथ्वी ब्राह्मनानि को दे चुको ॥ अरु सहस्र जग्य करि चुको ॥ अरु देवता सर्व पूजि चुको ॥ अरु पितरनि को सतुष्ट करि चुको ॥ स्वर्ग लोक प्राप्त करि चुको ॥ या मनुष्य के मन छन मात्र ब्रह्म के विचार बैठो ॥ थर थिर हो ॥ ६० ॥ इति श्री गोरष मत जोग शास्त्र सपूर्ण समाप्तम् ॥ फाल्गुन सुदि ९ सवत् ॥ १८५६ ॥

॥ छ ॥ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

Subject.—योग ।

Note.—ग्रन्थकर्त्ता गोरखनाथ है । इस प्रति का लिपिकाल सवत् १८५६ है ॥

No 86—कवित्त बेनी कृत *Verse* Substance—country made paper Leaves—63 Size—10×6½ inches. Lines—15 on a page Extent—935 ślokas Appearance—new Complete Correct Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kavitta Bení Krita.—A collection of 267 kavittas of the poet Bení (1760) written in the erotic style

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ भौंहों फुलेल्न पुली श्लकें मुकुलों श्रखिया वतिया सुतरोहैं ॥ बेनी चलो उठि के श्रगिराइ उठाइ भुजा लमुहाइ मिहोहैं ॥ पीक की लीकें कपोलन मंडित पंडित से श्रधरा मुरफोहैं ॥ भोर को भोरी सी बानि मडी चितये चित में चहौ वे चढी मोहैं ॥ १ ॥

End—पायत कान सुनेहों परो सो सरूप भरोसो परें श्रखिया ऱ्वै ॥ बेनी बजाउ रहे पसरो सो सुभाउ बरोसो न श्रोर छकै छुै ॥ कान्ह परो सो रहे इतही चित चातु टरो सो बिसूरि कलावे ॥ श्रंगनहू को भरोसो न दे कगरो सो रहे दरें मारे न में हुै ॥ २६० ॥

Subject—शृंगार रस की कविता ॥

Note—ग्रन्थकर्त्ता बेनी कवि हैं। इस प्रति में २६० कवित्तों का संग्रह जान पड़ता है ॥

No 87—रामाज्ञा सगनौती *Verse* Substance—country made paper Leaves—30 Size—10½×4½ inches Lines—8 on a page Extent—334 ślokas Appearance—new Complete Incorrect Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Rámágyá Saganautí—Consideration of auspicious moments for doing anything, by Goswámí Tulasí Dása.

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ प्रथम सर्ग लिख्यते ॥ पहिली दाहाई ॥ बानी विनायक श्रय हर रवि गुरु रमा रमेस ॥ सुमिरि करहु सब काज सुभ मंगल देस बिदेस ॥ १ ॥ गुरु सारदा सिंधुर बदन ससि सुरसरि सुराई ॥ सुमिरि करहु मंगल मुदित मन होईहि मुकृत सहाई ॥ २ ॥ गिरा गैारि गुरु गनपति हरि मंगल मंगल मूल ॥ सुमिरत करतल सिद्धि सब होइ ईस श्रनुकूल ॥ ३ ॥

End.—कोई कोहि कारवहि श्रनुसरे सो दोहा जब देई ॥ सगुन समोय सब सत्य फल कहब राम मति सोई ॥ ६ ॥ जन बिसवास बिचित्र मनि सगुन मनोहर हार ॥ तुलसी रघुवर भक्ति उर बिलसति बिमल बिचार ॥ ७ ॥ इति श्री तुलसीदास कृत सगनौती रामाज्ञा सम्पूर्ण ॥ एक सो श्राठ कमलगटा श्ररन तीन मूठी धरें सात को भाग दे गने पहिलो मूठी को सर्ग ॥ दूसरी मूठी को दहाई ॥ तीसरी मूठी को दोहा ॥ ऐसे दे गने याकी विधि * ॥

Subject—शकुन विचार ॥

Note—ग्रन्थकर्त्ता श्री गोस्वामी तुलसीदास हैं ॥

No 88—त्रिनयसार *Verse.* Substance—country made paper Leaves—52 Size—6×6 inches Lines—12 on a page Extent—775 ślokas Appearance—old Incomplete Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Vinayamálá.—Prayers of God by the poet Sundara Dása (1800) (See No 57.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ विनयमाला लिष्यते ॥ चौपाई ॥ श्री हरि गुरु को सुमिरन करहु ॥ सरन चरनन पर सिर धरहु ॥ हरि औ गुरु के अति अति भाऊ ॥ पल पल छिन छिन जपी सचाऊ ॥ कृष्णकृष्ण सौं करौं सनेहा । भजौ अहर्निसि कृष्ण को नाम ॥ जेते प्रभु के निज गुण गायो । गाय गाय गुण अति सुख पायो ॥ जिनके सेस सहस मुख गावैं ॥ गाय गाय कहु अंत न पावैं ॥ जिनको चतुर्मुख ब्रह्मा ध्यावैं ॥ शिव सनकादिक पार न पावैं ॥ नारद सारद ध्यान में मगन ॥ व्यास औ शुक भाँति दोनें मन ॥ रिषि मन्वादि अहर्निसि ध्यावैं ॥ गोपी तिनके रस में नाचैं ॥ कोउ रसिक कहे यह बैन ॥ ताके लिषत होत अति चैन ॥

End—चौपाई ॥ सुंदर नाम को नित दिन गावै ॥ जग के पार अपार हो जावै ॥ अपनो देख कुमति मति हीनी ॥ कैंचन पतिताई में भीनी ॥ मूढ़ मूढ़ मन हौनो छौनो ॥ ताते हरि सों विनती कीनी ॥ मेरी विनती को सुनि लीजो ॥ पावन पतित विरद निज दीजो ॥ अपनो दास विचार विचार ॥ अधम उधारनता उर धार ॥ हरि कृपा ते कुच में धर्यों ॥ सुंदर देउ सुंदर को निहारें ॥ राम करुना करि हरि चर दियो ॥ विनती सुनि अति हरष्यो हियो ॥ जो कोउ या विनती को गावै ॥ सो सुधी मेरो पद पावै ॥ दोहा ॥ सुंदर हरिको प्रीति सों विनती करी पुकार ॥ हित चित सों गावे सुने हो •• •••••••••••• •
आगे एक पत्र आदा छूटा है और कुछ नहीं है । यहीं से पुस्तक छोड़ दी है । कुछ थोड़ा सा शेष जान पड़ता है) ॥

Subject—प्रार्थना और दीनता ॥

Note—कर्त्ता सुंदरदास हैं ।

No 89—रसिकप्रिया *Verse* Substance—country made paper Leaves—90 Size—9¾ x 6 inches. Lines—16 on a page. Extent—1,620 ślokas Appearance—old. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasika Priyá—A book on Hindi composition by Kesava Dása, who wrote this book at the request of Indrajita Sinha, younger son of Madhukara Sáha of Orchhá in Samvat 1648 (1591 A. D) This is one of the standard books on Hindi Sahitya.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री गोपालो जयति ॥ अथ रसिक प्रिया ॥ छप्पै ॥ एक रदन गज बदन सदन बुधि मदन कदन सुत ॥ गौरि नंद आनंदकंद जगवंद चन्द्रजुत ॥ सुख दायक दायक सुकृति गन नायक नायक ॥ खल घायक घायक दरिद्र सब लायक लायक ॥ गुरु गुन अनंत भगवंत भव भक्तिवंत भव भय हरन ॥ जै केसौदास निधान निधि लंबोदर असरन सरन ॥ प्रथम सिंगार सुहास रस करुना रौद्र सुवीर ॥ भय बीभत्स बषानिये अद्भुत सान्त सुधीर ॥ १ ॥ ••••• (निर्माण काल)
संवत सोरह से बरष बीते अठतालीस । कातिक सुदि तिथि सप्तमी बार बरनि रजनीस ॥ ६ ॥

End—दोहा ॥ केशव करुना हास्य सह अरु बिभत्स सिंगार ॥ बरनत बीर भयानकहि मसत सेष विचार ॥ जे उपजे बीभत्स ते अरु सिंगार ते हास ॥ केशव अद्भुत बीर तें करुना को प्रकास ॥ यहि विधि केशवदास रस अनरस कहे विचारि ॥ बरनत भूल परा महा कविकुल लहु सुधारि ॥ जैसे रसिक प्रिया बिना देषि घदिन दिन दीन ॥ त्योंहीं

भाषा कवि सबै रसिक प्रिया बिनु हीन ॥ वाहे रति मति अति वढै जानै सब रस रीति ॥ स्वारथ परमारथ लहै रसिक प्रिया की प्रीति ॥ २२८ ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री इंद्रजीत विरचितायां रसिकप्रियायां अनरस वर्नन नाम षोड़स प्रभावः संपूर्ण ॥ शुभमस्तु श्री प्रभवतु ॥

Subject—रस काव्य ॥

Note—कर्त्ता प्रसिद्ध कवि केशवदास हैं। इन्होंने ओड़छे के राजा मधुकरसाहि गहरवार वंशी के कनिष्ठ पुत्र इन्द्रजीतसिंह को आज्ञा से इस ग्रंथ को रचा। निर्माण काल संवत् १६४८ कार्तिक शुक्ल सप्तमी चंद्रवार है।

No 90.—नखशिख *Verse.* Substance — country-made paper. Leaves—14 Size—6½×5 inches Lines—21 on a page. Extent—297 slokas. Appearance—very old. Complete Incorrect. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Nakhasikha—Detailed description of the body of a heroine by the poet Kánha, who, according to Dr Grierson, was born in 1857 A.D

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ कवि कान्ह कृत नष शिष लिप्यते॥ क॰॥ मूषक सवारी दुष्ट दुषक सवारी पुष्ट पुषक पहारी कोटि विघन कों रंदा है॥ लंबोदर नाम पुजे कान्ह मन काम कोटि सूर को सो धाम भाल चंदन को वंदा है॥ पड़े बरदानी सेवें सारद भवानी देवें भुक्ति मनमानी छेवें पापन को फंदा है॥ सोहै गन मुंड पर चंदन भुसुंड पर सुंड पर कंज धरें मुंड पर चंदा है १॥

End—चौपई: नष पद अंगुरी वहो लाल। पायजेब पिंडुरी उर साल॥ जंघा कटि किंकिनी झनकार। नाभि त्रिवली रोमावलि चारु॥ कुच उरज उरहता भरे। ऊपर स्याम कंचुकी करे॥ नष अंगुरी कर चारु हथेरी। कंकन चुरी भुजा सुभ हेरी॥ मोर पीठ ग्रीवा ससलरी। चिवुक अधर दसनावलि भली॥ रसना वानी हसन सुमेष। नथ मुक्ता नासा सुभ वेध॥ गात कपोल लसे सुभ बरनी। कोप पलक पुतरी बरनी॥ डोरे लाल लसे अति काजर। पैनी डीठ नैन छवि हाजर॥ भृकुटी टेढी बेंदा गोल। भाल चंदनो जटित अमोल॥ करनफूल कलिकावलि कान। सीसफूल माग मुकतान॥ पाटी बेनीवार विराजे। अग सुवास वसन छवि छाजे॥ ७१ इति श्री कान्ह कृत नष सिष समाप्तं सपुरन बनारस मध्ये लिप्यते रूपचंद ब्राह्मन॥ (इसके आगे की पंक्ति दीमक खा गई है और प्रत्येक पत्र की अन्तिम पंक्ति का भी यह हाल है)

Subject—नख शिख पर्यन्त प्रत्यंग की शोभा वर्णन॥

Note—कवि कान्ह कृत। डाक्टर ग्रियरसन के लेखानुसार ये कवि सवत् १९०४ में जन्मे थे॥

No 91—श्री हनुमत बाल चरित्र *Verse* Substance—country-made paper Leaves—33 Size—[illegible] inches Lines—15 on a page Extent—420 slokas Appearance—ol[illegible] Correct Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Srí Hanumata Válacharitra—The story of Hanumána's younger days by the poet Brija Lála, who composed the book in Samvat 1876 (1819 A.D)

Beginning—श्री गणेशायनमः श्रीहनुमते नमः॥ अथ हनुमत बाल चरित्र लिप्यते॥ दोहा॥ अमल कमल विय कर लसत॥ दिग्याभरन विसाल॥ जय जय श्री सुवरन बरन॥

बट्टा कवि वृन्दलाल ॥ १ ॥ जयति जानकीनाथ प्रभु बंदहु पवन कुमार ॥ जिनकी किंचित कृपाकर ॥ बावरा ग्रन्थ अपार ॥ २ ॥ रामानुज पद पद्म कर ॥ गुरु चरनन शिर लाय ॥ हनु मत जन्म कथा रचहु ॥ हिये ध्याय सुखपाय ॥ ३ ॥ ....

संवत पट रितु वसु ससी ॥ माह छटे शनिवार ॥ यान्ह कथा वृन्दलाल रचि आदि सुकाण्ड विचारि ॥ १६ ॥

End.—अथ कवि तिन कह नम यो ॥ नहि दूर हरि के दास ॥ भक्तमई यानो रूपन करत सकल उपहास ॥ ५८ ॥ येष कृष्ण कुज बोध मन गयरा अंक प्रमान ॥ यान चरित्र पूरन भयो ॥ सो प्रताप हनुमान ॥ ५९ ॥ टोलति नृपति अली जहां राम यो महराज ॥ सिधिन स्यहस्त सुमान गुन सुकविराज वृजराज ॥ ६० ॥ इति श्री मन रामचन्द्र प्रसंगतर अगस्त मुनि-मयादे श्रीमद्रामायण उत्तर कांड कथान्तर्गत श्री हनुमत बाल चरित्र गूंथेन श्रीमत मान कर्षाद्र तन्दय वृन्दलाल भट्ट कविराज विरचते सुध तट भाष्याख्याने कपीशपासो हनुमति सुयीय निष्कृति पुष पंचमोध्याय: ॥ ५ ॥ सुभमस्तु ॥ श्री हनुमते नम: ॥ रामायनम ॥

Subject.—श्री हनुमान जी के बालपन के चरित्र रामायण उत्तर कांड से अनुवादित ॥

Note.—कर्त्ता वृन्दलाल कवि है ॥ निर्माण काल इसका संवत् १८७६ माघ ६ शनिवार है ॥

No 92.—साहित्यसुधाकर *Verse* Substance — country-made paper Leaves—135 Size—10¼×4¾ inches Lines—7 on a page. Extent—1,880 slokas Appearance—new Complete Incorrect Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Sáhitya Sudhákara.—Hindi prosody and composition by the poet Saradára of Lalitpur, who composed this book in Samvat 1902 (1845 A.D.) under the patronage of Mahárája Isvari Prasáda Náráyana Singha of Banáras.

Beginning.—श्रीगणेशायनम: श्रीगुरुवे नम: श्री गुरु पद रज बंद के कर बर सुमन प्रनाम । करत ग्रन्थ हैं ग्रन्थ सुचि कुचि क्रुन मन विश्राम १ पटन चहै साहित्त को अथवा पढि जय लेइ । तब सरसो साहित्त की देषन को मन देइ २ कवित्त समुद्र के चंद चन्द्रमा के जैसे सुधकर विपन हरन गनपति जैसे हर के । पवन के हनुमत बल को न आके भव दान को करन देषियत भास्कर के । कवि सरदार चेता रामचन्द्रजू के लव कलि मे न दूजो उपमा के कोर नर के । मयो बैरोचन के बन मे सपूत जैसो ईस्वरीप्रसाद उद्धसि दान धर के ॥ ३ ॥

End.— संवत् इक घट बीस सत ताके उपर दोइ । पुन्न कोश सरदार कवि राम जनम तिथि जोइ ॥ ॥ नगर ललित पुरवास है कासीपति के पास । कीनो हरिजन नंद यह हरिजन हेत विलास ॥ ॥ इति श्री साहित सुधाकर ॥

Subject.—पिंगल ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता सरदार कवि ललितपुर निवासी थे । ये काशिराज महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायणसिंह के आश्रित थे और उन्हीको आज्ञा से इन्होंने यह ग्रन्थ बनाया ॥ निर्माण काल संवत् १९०२ चैत सुदी ८ है ॥

No 93.—रसमयन ग्रन्थ *Verse* Substance—country made paper Leaves—15 Size—7¾×4¾ inches Lines—15 on a page Extent—180 slokas Appearance—old. Complete Incorrect Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasabhúsana Grantha.—A description of the different kinds of heroes and heroines by Rámanátha Upádhyáya.

Beginning.—श्री राम जी सरन ॥ श्री गणेशायनमः ॥ प्रथम मनाउ गनपति कह जो सुध चाहु ॥ बढे सकल सुख संपति मिटि है दाहु ॥ १ ॥ चरन तोरि चित सेरो सिव टकुरानि ॥ कठिन सरल सब हुंगा पर मुहि जानि ॥ २ ॥ करहु नीक सिवरानी सब विधि सोधि ॥ रचेहु यथ तोरे बलसन प्रेम पयोधि ॥ ३ ॥

End.—अथ ललित हाव को उदाहरन यथा । लाग्हु तरुनि फुलेलवा पिय रसमाति । पहिरथा दाह गहनवा भलि भलि भाति १४४ अथ कुट्टमितहाव को उदाहरन यथा । मिलेट मीत अत सुखमा गा दुख भागि । जारति चेतु जोन्हैया परसत आगि १४५ अथ विहित हाव को उदाहरन यथा । मिलिगा मीत दुअरवें लोगवन साथ । हेरि सकुचि नहि बोली तिय लचि माथ १४६ इति इति श्री बरवे बाजपेई रामनाथ कृत सपूर्ण शुभमस्तु रसभूषन ग्रन्थ समाप्त । श्री राम राम राम । बरवे रामनाथ कृत ॥

Subject.—नायिका भेद ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता बाजपेयी रामनाथ है । इसमें कोई समय नहीं दिया है ॥

No 94.—रतन हजारा *Verse* Substance—country made paper Leaves—91 Size—9¾×6¾ inches Lines—13 on a page. Extent—1,007 ślokas Appearance—ordinary Complete Correct Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Ratana Hajará.—A collection of one thousand couplets by Rasa Nidhi. Nothing more is known about this poet. The manuscript is dated Samvat 1894 (1837 A.D.)

Beginning.—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री सरसुती देव्येनमः ॥ दोहा ॥ लसत सरस सिंधुर वदन भालथली नपतेस ॥ विघन हरन मगल करन गवरी तनय गनेस ॥ १ ॥ नमो प्रेम परमारथी यह जाचत हो तोह ॥ नदलाल के चरन सो दे मिलाइ किन मोहि ॥ २ ॥ नमो प्रेम जिने कियो दिय लग आइ प्रकास ॥ रगरत वासो नाक गो नाक गोपकन पास ॥ ३ ॥ निसि दिन गुजत रहतमें विरद गरीवनिवाज ॥ है निज मधकुर मुतन की कमल नैन तुहि लाज ॥ ४ ॥ वरन मधुर सुदर अरथ हरि सोहित निरधार ॥ रसनिध सागर मथ लये दोहा रतन हजार ॥ ५ ॥

End.—अधम उधारन प्रभु कहू करतो जो न सम्हार ॥ तो तो मोसो पतित क्यो या भवसागर पार ॥ ६०४ ॥ हेरत कहू जु दीन तन याहि आवती लाज ॥ प्रीतम तें व कहावतो दीनवद व्रजराज ॥ ६०५ ॥ जदपि अकरनी हू करी मैं इह भांति मुरारि ॥ प्रभु करिनी करि आपनी हरि विधि लेहु सुधारि ॥ ६०६ ॥ कहे अलप मति कोन विधि तेरे गुन विस्तार ॥ दोनबंधु प्रभु दान को ले हरि विधि विस्तार ॥ ६०८ ॥ इतिश्री महाराजाधिराज श्रीरसनिधि कृत रतन हजारा सपूर्ण ॥ श्रीरस्तु मगल ददातु ॥ कार्तिक शुक्ल ॥ सवत् ॥ १८९४ ॥ श्रीराम ॥ श्रीराम ॥

Subject.—प्रेमरस के दोहे ॥

Note.—ग्रन्थकर्त्ता महाराज रसनिधि है । लिपि काल कार्तिक शुक्ल ३ सवत् १८९४ है ॥

No 95.—रामायन महानाटक *Verse* Substance—country made paper Leaves—100 Size—8¾ × 6¾ inches. Lines—20 on a page. Extent—3 000 ślokas. Appearance—very old. Complete Incorrect Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rámáyana Mahánátaka.—The story of Rámachandra's life by Prána Chanda Chauhána, who composed this book in Samvat 1667 (1610 A.D) when Sáha Salíma was the Emperor of Delhi. This Salíma cannot be of the Súra family, being the younger son of Sera Sáha Súra for he was dead in the year 1554. Probably it refers to the Mogal Emperor Jahángíra, who was called Prince Salíma before his accession in the year 1605. It is just possible that for some years after the accession Jahángíra might have been popularly known as Sáha Salíma. The manuscript is dated Samvat 1775 (1718 A.D)

Beginning.—सदाशिव परब्रह्मप ॥ नम गुरु शिव गुपन ॥ नम्यु सेष सतीश सो राम लद्दमन ॥ महाबलो राना ॥ सतो सुर्थीयो ॥ राघवे नाम ॥ पालतो ॥ प्रथम करो ताहो की सेवा । जेहो गुरु कह सब मानी देवा । गुरु गनेश कोइ जाने । इन्द्र आदी सुर नाग वपाने । सीव सुत केनी सीधु भ्रहो । गुड डठावे पत्रे नल लीन्हो । पालो पेट मह काठी कठारा । कहउ मह कहउ पवेडय इमारा । कहउ शेश कहउ शेनक कथा । ब्रह्मा कहउ प्याम के पतना । सीव सुत पीके काठी मडाना । तेहो दिन से जल जो पारा ॥ भगमग हिर भानीक । रहे सीद् नरनाह शो जल क्रीडा गनेश की । परी चौपति छन माद ॥ ॥ ॥

कातीक मास पछो उजीयारा तीथ पुनी सोम कर बारा ॥ ताहो दीन कथा कीन्ह अनुमाना साह सलेम दीलीपती थाना समत सोरह स सत साठा पुय प्रगाय पाप भय नाठा जो सारद माता कम दाया बरनो आद पुरुष की माया सेइ माया कह मुनो चग मुला ब्रह्मा रहे कमले के फुला नीकस न सके माया के घाया टेवहु कमल नाल क पंथा आद पुरुष वरनो कोहो भांति चाट मुरस तहां दीवस न राता नीरगुन रूप रूप कहो सीब ध्याना चार बेद गुन जोरि वपाना तीनो गुन जाने सवारा सीरजे पाले मनन हारा पवन जिना सो भस बहु गुना मन म होइ सु पहुन सुना देपे सर पे भाहो न भापो अधकार घोर के भापी सोदी कर दहु कोकर वपाना नोही कर मर्म भेद नही जाना माया योंघु भो कोउ न पारा शकर पवर घोस होर हारा ॥

॥ शारजे पलका यक मह मनसु लागु न बार ॥
धरनी सर्ग पाताल तें मही माया अगम अपार ॥

End—

राम चरित्र जो कहे वपाना वाढे धर्म पाप दोप हाना
अरु जो सुने स्रवन चीत लाई सो जमपुर के नीकट न जाई
सो भा आनक येह अपारा राम नाम वीन होवे न पारा
नारद बालमीक दुर्वासा सीहहु राम नाम की आसा
चारो जुग जाने संसारा अंत काल कह राम अधारा
जेही भांति शङ्कु धरहो ध्याना चारो बेद पठि ब्रह्म सुनाना
मुनीवो तपा सीव सन्यासी जल थल भो अकाश के वासी
इन सब मोली येह व्रत रापा राम नाम वीन भोर न भापा
जो महीमा सारदु कह भारी तेहो वरने कह सकी हमारी
भादी कथा येह बेदे पुराना सो मे भाषा कीन्ह बपाना

वालमीक हनीमत मोली प्रथम कीन्ह अस्तुती भार
भाषेउ प्रानचन्द येह जेही तेनके उधार

इति श्री महानाटक सपुर्ण सुभमस्तु शोधीरस्तु जो कीछु देषा सो लीषा मम दोषो न दीयते ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ सवत् १८०५ मास मागशीर वीदी गुर वासरे लो० मीश्रचद्रे स्वरेख ठा० फकीरचद्नी पाठनार्थे ॥ सुभ—सुभ ॥ दीवत् गोवींद रामनाथनी नी पोथी छे ॥

Subject—रामचन्द्र की कथा ॥

Note—प्रानचद चैाहान ने शाह सलीम दिल्लीपति के समय में इस ग्रन्थ को बनाया। निर्माण काल सवत् १६६० और लिपि काल सवत् १८०५ है ॥

No 96—हितोपदेश *Verse.* Substance—country made paper Leaves—194 Size—11 x 7 inches. Lines—15 on a page. Extent—2 900 ślokas Appearance—ordinary Complete. Correct Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Hitopadeśa—Translation of the Sanskrit Hitopadeśa by Prayága Dása who lived at the court of Khumána Sinha of Charkhárí (1830 A D) (See No 74) The manuscript is dated Samvat 1889 (1832 A.D)

Beginning—श्री राधाकृष्णायनमः ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ सीय सहित रघुनाथ को नमह बारहो बार ॥ जिहि तें हित उपदेस यह होहि सरल सुषदाय ॥ १ गोपनि जुत सुमन नित गो पालत बन के बीचि ॥ अधर मुरलिका धुनि उठत माथे मुकुट मरीचि ॥ २ ॥ सत चित आनद रूप घन अरविंद कुसुम सरीर ॥ वेद गीत नद नद प्रभु करहु कृपा रनधीर ॥ ३ ॥ जामे पूरन होइ यह करहु कृपा श्रीराम ॥ श्रुति हितकारी नह कथा हित उपदेस सुनाम ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ देत सबै मन काम ॥ है प्यारे श्री राम के ॥ याते शिवहि प्रनाम ॥ शिव बिन शिय न कहुं मिले ॥ ५ ॥ दोहा ॥ हर प्रसाद ते सत सब सिद्धि लहत सुचैन ॥ जाके शिर ससि लसत तनु गगा जु की फैन ॥ ६ ॥

End—छप्पय ॥ जलगि धर धरनि जलगि ध्रुव धाम धराधर ॥ जलगि वेद विलि यास जलगि लोमस प्रकास वर ॥ जलगि देव दिग्पाल जलगि गोपाल गनेसह ॥ जलगि धनेस सनेस जलगि अमरेस प्रदेसह ॥ कवि प्राग कहे कैातुक कलित जलगि सरस सिउ गावहि ॥ भूपति षुमान पचम प्रबल तलगि राज्य सुष भुगावहि ॥ १६ ॥ इति श्री हितोपदेसे श्री मन्महाराजाधिराज महाराजा श्री राजाषुमानसिंघ जू देवाज्ञया श्री कवि प्रयागदास विरचिते सुहृधि सधहो नाम चतुर्थे ॥ सर्ग ॥ शुभमस्तु ॥ सवत् ॥ १८८६ ॥ मीति कुआर बदि ॥ ६ वार मगर ॥

Subject—सस्कृत हितोपदेश की भाषा ॥

Note—ग्रन्थकर्ता कवि प्रयागदास हैं—ये चर्खारी के राजा खुमानसिंह के आश्रित थे और उन्हों की आज्ञा से इन्होंने यह ग्रन्थ बनाया ॥ लिपिकाल सवत् १८८६ आश्विन कृष्ण ६ भैाम वार है ॥

No 97—राम मुक्तावली *Verse* Substance—country made paper Leaves—29 Size—7½ x 4½ inches. Lines—16 on a page Extent—about 350 ślokas Appearance—ordinary Complete. Generally correct. Character—Kaithí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Ráma Muktávalí.—Spiritual lessons in regard to the worship and virtues of Rámanáma by the poet Tulasí Dása. The manuscript is dated Samvat 1859 (1802 A.D.)

Beginning.—श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीरामचंद्रायनमः ॥ पोथीराम मुक्तावली ॥ दोहा ॥ राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार ॥ तुलसी भीतर बाहर जो चाहो उजियार ॥ १ ॥ राम नाम के मोद्दहे मोद्दव बीज अपार ॥ मरगहु जय मुखा धरे रामहु न निहफल जाइ ॥ २ ॥ राम नाम श्रुति सार है बुधि देखि मथ कोर ॥ राम नाम सम मत नहि बुधि नाम लोहि मिलोइ ॥ ३ ॥

End.—हनोमान से योनती करि अमिय माह जो ईस ॥ दोउौ दृढ़ करि अपनो माथ धीस धरु योस ॥ अय येहो यथं पाइ के राय कीन्हो परनाम ॥ पठि मुनि हे से निकसि है जो इहि हरि को दास ॥ इति श्री हरि चरिते मानसे कलिकलुष विधमने नाम राम मुक्तावली तुलसीदास की कृत राम को अनुचर सुपरन शुभमस्तु सबत् १८५६ चेत सुदी १५ मगर लिखा कासी मद्धे असपृही मह रामचरन मिश्र ने लिखा अपने वास्ते ॥ पंडित जन सो विनती मोरी ॥ टूटल अच्छर वाचव जोरी ॥ दोहा ॥ मोह लहरि मानि मही मन समुद्र अथगाह ॥ तुलसी धीरज के धरे सत पावहुगे थाह ॥ हम हम हम हमार हम हम हमार के बीच ॥ तुलसी अलखहि को लखै राम नाम कहु नीच ॥

Subject.—राम नामोपदेश तथा नाम माहात्म्य ॥

Note.—ग्रन्थकर्त्ता गोस्वामी तुलसीदास हैं । लिपिकाल सवत् १८५६ चेत सुदी १५ मंगलवार है ॥

No. 93.—रामसलाका *Verse*. Substance—country made paper. Leaves—25. Size—6 x 4½ inches. Lines—17 on a page. Extent—about 450 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Ráma Salákú.—A small book dealing with the means of finding out the would be consequences of actions by the poet Tulasí Dása. Such books are very numerous in Hindi and appear to me to be a later development of Hindu astrology. The manuscript is dated Samvat 1822 (1765 A.D.).

Beginning.—श्रीगणेशायनमः ॥ पोथी रामसलाका की ॥ प्रथम ४ सर्ग प्रथम दहाइ । अथ दोहा । गुर सहाइ ॥ यानी बीन सक शशु रवि गुर हर रमा रमेश । सुमिरि करहु सब काम, सुभ, मगल, देस बिदेस ॥ १ ॥ गुर सुर सेल, सादुर, बदन, ससी, सुरसरि सुर गाइ । सुमिरि चलहु मगल मुरती, होइहो सुकृत सहाइ ॥ २ ॥ गोरा गोरि गुर गनप हरः मगल मगल मुल । सुमीरत करत सीधी सब होइ हो सब अनकुल ॥ ३ ॥

End.—सतवा सर्ग के सगाइ दहाइ । दोहा ॥ सुदीन सादी पोथी नेवती, पुजी प्रमात सप्रम । सभु विचारब चारमती सादर सम्य मुनेस ॥ १ ॥ गुनि गनो दिन गनो घतु गनो दोहा देषी बीचारि । देषक करता बचन वरः असगुन सगुन अनुहारि ॥ २ ॥ सगुन सत सपो नैनगुन अवधो अवध नोसान । होइ सुफल सुभ जासु जसु प्रीतो प्रतीती प्रमान ॥ ३ ॥ गुर गनेश हर गोरो सीय राम लषन हनमान: तुलसी दसरथ सुमीरो सत सगुन बीचार नो धान ॥ ४ ॥ हनोमान सगुन भरथ राम सीया हर आनी । लषन सुमीरी तुलसी कहत सगुन बीचार बषानी ॥ ५ ॥ जो जेही कामही अनहरे, से दोहा जब होइ । सगुन सगे सब सत्य फल, कहब राम गती सोइ ॥ ६ ॥ गुनी बीसुप बीचीत मनो, सगुन मनोहर हार । तुलसी

रघुवर भक्तो ढरः बोलघत बोमल बोचार ॥ ० ॥ इति श्री सातो सर्ग सपुर्न शुभमस्तु जो देषा सो लिषा मम दोष न दीश्रते सवत् १८२२ मिती श्रावन वदी ॥ २ ॥ वार गुरु लो: भीमसेन कायस्थ मोकाम पचबनीचा परोगनकेष ॥

Subject—शकुनावली ।

Note.—कर्त्ता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं। इस प्रति का लिपिकाल सवत् १८२२ श्रावण वदी २ गुरुवार है ॥

No 99—भाषा रामायण *Verse* Substance—country made paper Leaves—22 Size—9¼ × 5 inches Lines—11 on a page. Extent—about 480 ślokas. Appearance—ordinary Complete Incorrect. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Bhásá Rámáyana.—A short story of Ráma Chandra's life by the poet Kapúra Chanda (*alias* Chanda only) who wrote it in Samvat 1700 (1643 A.D) when Śahajahána was the Mughal Emperor in Hindustána.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्रथ रामायण भाषा चद कृता लिष्यते ॥ दोहरा ॥ गुरु गणेश श्रह गौरिसा सुमिरे होय श्रानद ॥ कछुक हकीकत राम की श्ररज करत है चद ॥ १ ॥ श्राद श्रनादि जुगाद है जाहि जपे सब कोइ ॥ राम चरित श्रदभुत कथा सुन्य पुन्य फल होई ॥ २ ॥ श्रादि पुरुष परमातमा निरकार है सोई ॥ भगत हेत सरगुन भयो राम कहत सब कोई ॥ ३ ॥

End—सवह से सवत् भुप विक्रम को गनिये यस । हजार पजा हजार सन हजार गनिये ॥ फ०९ वदी वैशाख मासुरन जाने धाता । साहिजहां पातिसाह दिल्ली श्रदल विधाता ॥ यक सो ग्यारह कवित इहयेर को ये पढत सुनत हरषे हियो सब परनन रघुनाथ को कपूरचद लिष्यो कियो ॥ ११७ ॥ चारि कवित पहिले घ्याह समे राम जी के सुचे तिस समेति यक सो ग्यारह पुरन हुवे ॥ ११६ ॥ इति श्री रामायन चंद कृत भाषा सपुर्ण ॥ श्रीः ॥ शुभमस्तु ॥ श्री सीतारामाभ्या नमः ॥ श्रीः ॥

Subject.—सक्षेप मे श्री रामचन्द्र की कथा ॥

Note—ग्रन्थ के श्रन्तिम भाग से ज्ञात पडता है कि ग्रन्थकर्त्ता का पूरा नाम कपूरचंद था तथा यह दिल्ली के वासी श्रौर शाहजहा के समय में हुए हैं। निर्माण काल सवत् १७०० वैशाख वदी है ॥

No 100—हमीरहठ *Verse.* Substance—country made paper Leaves—30 Size—13 × 7 inches. Lines—12 on a page Extent—725 ślokas Appearance—new Complete Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Hamíra Hatha.—History of Hammíra Sinha Chauhána by Chandra Śekhara of Patiálá. He composed this book in Samvat 1902 (1845 A.D) under the patronage of Mahárája Narendra Sinha of Patiálá.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्रथ चन्द्रशेषर कृत हमीरहठ लिष्यते ॥ दोहरा ॥ गिरिधरधर श्रह गगधर चरन सरन चित लाइ ॥ या हमीर हठ की कथा कहो सवहि सिर नाइ ॥ १ ॥ परसराम ध्रुव सुव श्रचन श्रहिफन पर जिमि दब ॥ श्री नरेन्द्र मृगराज नृप राज

लगि राय सब भव ॥ २ ॥ श्री नरेन्द्र मृगपति नृपति द्विन प्रति दया निधान ॥ दीन जानं कीनी कृपा सेषर पास सुजान ॥ ३ ॥ निकट बोलि दीनी हुकुम यह हमीर हठ जैन ॥ छंद बंद करिके रचे कथा सुहावनि तीन ॥ ४ ॥ महाराज के हुकुम ते अदि विधि विप चरित्र ॥ सो सेषर भाषा करी दूषन करहु न मित्र ॥ ५ ॥

End—महाराज के हुकुम ते सिद्ध हीत सब काज ॥ भयो ग्रंथ जिनकी कृपा परिपूरन सुभ साज ॥ ३९८ ॥ कर नभ रस चन्द आतमा संवत् फागुन मास ॥ कृष्ण पक्ष तिथि चौथ रवि जेहि दिन ग्रंथ प्रकास ॥ ३९९ ॥ रायपुर के जगत में श्री नरेन्द्र मृगराज ॥ सेषर निज प्रभु लोक में सौंजो लपत न भाज ॥ ४०० ॥ मोहि भरोसो रावरो महाराज सिरमौर ॥ करिय कृपा द्विज दीन पै निरषि आपनी ओर ॥ ४०१ ॥ जाचें सुचि सुख रहे सुरपुर सुक्र समाज ॥ तौलौ राज करो अचल श्री नरेन्द्र मृगराज ॥ ४०२ ॥ अथ गद्दि छंद ॥ स्वस्ति श्री मरसकल लोक लोचन चकोर चिंतामणि मनोज मद भंजन पंचमायता विसाल नेत्रवर चितुंद मुंडोपमेय दीर दंड बल षंडन पर मंडली बिहंडन विपद ताम तुंड दंडना पंडित, मार्तंड प्रताप तापचे हरन सरनागत सुपेच देसदेसाधिनाथ गन सेवित सुरेस सामाज्य सुप पूरन पुनीत वेदपथ प्रतीत राजनीत चक्रनोक्ति विनीत वर बुद्धि बीर वंदीजन बिमोचनादि ॥ विविधि बिरदावली विराजमान मानप्रमापराधे सोमवंस के विभूषन विमद विद्या चतुर्दसचतुः षष्ट कलानिधान सकल नरेन्द्र वृंदासु वदनीय चरनारविंद चातुर्य्य सिरोमणि सकल सुर साधन सुप दायक नरनायक दिलीमदल दमन प्रतक्ष कल्पवृक्ष स्वरूप नाभुन कर्मनिष्ठ कुलकेतु मीनकेतु सम मोहन सुघर मधुर वचन उदार सतगुरु पदारविंदानुराग परिपूरित प्रकर्ष गुनग्राहक गरीब निवाज महाराजे श्री राजराजन महाराजाधिराजेश्वर श्री श्री श्री श्री श्री श्री महाराजो नरेन्द्रसिंह चाज्ञाभिगामिनः चन्द्रसेषर कवि विरचिता हमीरहठ कथानकः समाप्तः ॥ शुभमस्तु सर्व जगता ॥ ४ ॥

Subject—चहुआन हमीर का दिल्ली के बादशाह से युद्ध ॥

Note.—कर्ता कवि चन्द्रशेषर हैं जो महाराज नरेन्द्रसिंह पटियाला वाले के आश्रित थे। इन्होंने इस इतिहास को महाराज की आज्ञा से छंदोबद्ध बनाया। निर्माण काल संवत् १९०२ फागुन बदी ४ रविवार है॥

No 101.—हरिभक्तिविलास *Verse* Substance — country-made paper. Leaves—60 Size — 12½ × 7 inches. Lines—12 on a page. Extent—1,775 ślokas Appearance—new Complete Correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Haribhakti Vilása—A religious book dealing specially with devotion to God by Chandra Śeshara of Patiálá (1840 A.D) (See No. 100)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नम ॥ दोहा ॥ बुद्धि बदन बारन बदन चंद्रन चलित विसाल ॥ विघन हरन मंगल करन विमल बाल विधु भाल ॥ १ ॥ अरुन अमल कोमल करत मञ्जु मुकुति मकरंद ॥ श्री गुरु चरन सरोज बर बंदौ आनदकंद ॥ २ ॥ छप्पै ॥ इंदु कुंद करपुर गौर विरषेस यान घन ॥ आदि शक्ति अतुलित विभुति विद्वित प्रकास तन ॥ मुंडमाल विषब्याल भाल विधु बाल विराजत ॥ नगन जटित आभरन अंग नग सिर छवि छाजत ॥ दिग बास दिव्य अंबर अमल बरद विरद मंगल करन ॥ दुष दरन हरन सेषर नरन सतत सिव गिरिजा चरन ॥ ३ ॥

End.—पुः वृन्दावासी चत्वर इंद्र भगत जे ताको मनमे ॥ करि जमुना जल पान ॥ भमत महि वृंदावन मे ॥ हरि जन पग की धूलि प्रेम सो से तन लाये ॥ तिनको अगर

भाषा कवि सबै रसिक प्रिया बिनु हीन ॥ वाढै रति मति अति बढै जानै सब रस रीति ॥ स्वारथ परमारथ लहै रसिक प्रिया की प्रीति ॥ ९९८ ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री इंद्रजीत विरचितायां रसिकप्रियायां घनरस वर्नन नाम षोडस प्रभाव: सपूर्ण ॥ शुभमस्तु श्री श्रम्पत् ॥

Subject—रस काव्य ॥

Note—कर्ता प्रसिद्ध कवि केशवदास हैं। इन्होंने ओडछे के राजा मधुकरसाहि गहरवार बंशी के कनिष्ठ पुत्र इन्द्रजीतसिंह की आज्ञा से इस ग्रंथ को रचा। निर्माण काल सवत् १६४८ कार्तिक शुक्ल सप्तमी चद्रवार है।

No 90—नखशिख *Verse* Substance—country made paper Leaves—14 Size—6¼×5 inches Lines—21 on a page. Extent—297 ślokas. Appearance—very old Complete Incorrect. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Nalhasikha—Detailed description of the body of a heroine by the poet Kánha, who, according to Dr Grierson, was born in 1857 A.D

Beginning—श्रीगणेशायनम. ॥ कवि कान्ह कृत नष शिष लिख्यते ॥ क ॥ मूषक सवारी दुष्ट दूषक सवारी पुष्ट पुषक पहारी कोटि विघन को रदा है ॥ लंबोदर नाम मुझे कान्ह मन काम कोटि सूर को सो धाम भाल बदन को बदा है ॥ षडे बरदानी सेवें सारद भवानी देवें मुक्ति मनमानी देवें पापन को फदा है ॥ सोहे मन मुंड पर चंदन मुमुड पर मुंड पर कज धरें मुंड पर चदा है १ ॥

End.—चौपई. नष पद अंगुरी महो लाल। पायजेब पिंडुरी उर साल ॥ जघा कटि किंकिनी झनकार। नाभि त्रिबली रोमावलि धार ॥ उदर उरज चहता भरे। ऊपर स्याम कचुकी करे ॥ नष अंगुरी कर चारु हथेरी। ककन चुरी भुजा शुभ हेरी ॥ मोर पीठ ग्रीवा मसलरी। चिबुक अधर दसनावलि भली ॥ रसना वानी हसन सुभेष। नय मुक्ता नासा शुभ बेष ॥ गात कपोल लसै शुभ बरनी। कोप पलक पुतरी बरनी ॥ डोरें लाल लसै अति कजर। पैनी डीठ नैन छवि छाजर ॥ भृकुटी टेढी बेंदा गोल। भाल बदनी लटित अमोल ॥ कानफूल कलिकावलि कान। सीसफूल माग मुकतान ॥ पाटी बेनीवार विराजे। अग सुवास बसन छवि छाजे ॥ ७१ इति श्री कान्ह कृत नष सिष समाप्त सपूरनं बनारस मध्ये लिख्यते रूपचद ब्राह्मन ॥

(इसके आगे की पंक्ति दीमक खा गई है और प्रत्येक पत्र की अन्तिम पंक्ति का भी यह हाल है)

Subject—नख शिख पर्यन्त प्रत्यग की शोभा वर्णन ॥

Note.—कवि कान्ह कृत। डाकूर ग्रियरसन के लेखानुसार ये कवि सवत् १६०४ में जन्मे थे ॥

No 91—श्री हनुमत बाल चरित्र *Verse* Substance—country made paper Leaves—33 Size—11×7 inches. Lines—15 on a page. Extent—420 ślokas Appearance—old Complete Correct Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Sri Hanumata Válacharitra—The story of Hanumána's younger days by the poet Brija Lála, who composed the book in Samvat 1876 (1819 A D)

Beginning—श्री गणेशायनम: श्रीहनुमते नम: ॥ अथ हनुमत बाल चरित्र लिख्यते ॥ दोहा ॥ कमल कमल प्रिय कर लसत ॥ दिव्याभरन विसाल ॥ जय जय श्री सुमन धरन ॥

मदत कवि वृजलाल ॥ ९ ॥ जयति जानकीनाथ प्रभु पदहु पवन कुमार ॥ जिनकी किंचित कृपाकर ॥ बाढत यन्थ अपार ॥ १ ॥ रामानुज पद पद्म कर ॥ गुरु चरनन सिरुनाइ ॥ हनुमत जन्म कथा रचहुं ॥ हिये ध्याइ सुपमाइ ॥ ३ ॥ ....

मदन पट रितु मधु मयी ॥ माह छटे शनिवार ॥ बाल कथा वृजलाल रचि आदि सुकाव्य विचारि ॥ १६ ॥

End.—अब कवि रिन कहं नम्र ह्वै ॥ नहिं हर हरि के दास ॥ भक्तमई मानो लखन कारा सकल उपहास ॥ ९८ ॥ मेरु कृष्ण कुल बोध मन सदरा अंक प्रमान ॥ बाल चरित पूरन भयौ ॥ सो प्रताप हनुमान ॥ ९८ ॥ दौलति नृपति अली जहां राज श्री महराज ॥ सिंधिन स्वइच्छ सुमान सुत सुकविराज वृजराज ॥ ६० ॥ इति श्री मनरामचन्द्र प्रनीतर अगस्त मुनि-सवादे श्रीमद्रामायण उत्तर कांड कथान्तर्गत श्री हनुमत बाल चरित्र गुप्त श्रीमन मान कवींद्र तन्दय वृजलाल भट्ट कविराज विरचते सूर्य हाट सास्याध्याने चतुर्थोपातो टवलपि सुग्रीव निषकृति पुष पंचमोध्याय: ॥ ५ ॥ सुपथ सुभे सूयात् ॥ श्री हनमते नमः ॥ रामायनमः ॥

Subject.—श्री हनुमान जी के बालपन के चरित्र रामायण उत्तर कांड से अनुवादित ॥

Note.—कर्ता वृजलाल कवि हैं ॥ निर्माण काल इसका संवत् १८८६ माघ ६ शनिवार है ॥

No 92.—साहित्यसुधाकर *Verse.* Substance — country-made paper Leaves—135 Size—10½ × 4½ inches. Lines—7 on a page. Extent—1,880 ślokas. Appearance—new. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sáhitya Sudhákara.—Hindi prosody and composition by the poet Saradára of Lalitpur, who composed this book in Samvat 1902 (1845 A.D.) under the patronage of Mahárája Isvari Prasáda Náráyana Singha of Banáras.

Beginning.—श्रीगणेशायनमः श्रीगुरवे नमः श्री गुरु पद रज वद के कर कर सुरन प्रनाम । करत एक हैं ग्रन्थ सुचि कवि कुल मन विश्राम १ पढन रहे साहित को सरसा पठि जन लेइ । तन सरसी साहित को देखन को मन देइ २ कवित समुद्र के चंद चन्द्रमा के जैसे सुधधर विघन हरन गनपति जैसे हर के । बचन के हनुमत बल को न जाके बत दान को वरन टेमित भासकर के । कवि सरदार जेता रामचन्द्र के लव कलि में न दूजो उपमा को और नर के । भयो येरोवन के बल सो सपुत जैसे ईस्वरीप्रसाद सदृतेव दान धर के ॥ ० ॥

End.— सम्वद् इक घट कोस सन ताके ऊपर दोइ । पूरन कीय सरदार कवि राम जनम तिथि जोइ ॥ ॥ नगर ललित पुरवास है काशीपति के पास । कीनो हरिजन नद इह हरिजन हेत विलास ॥ ॥ इति श्री साहित सुधाकर ॥

Subject.—पिंगल ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता सरदार कवि ललितपुर निवासी हैं । ये काशिराज महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायणसिंह के आश्रित थे और उन्हींकी आज्ञा से इन्होंने यह ग्रन्थ बनाया ॥ निर्माण काल संवत् १९०२ चैत सुदी ६ है ॥

No 93.—रसमूपन ग्रन्थ *Verse.* Substance—country made paper Leaves—15 Size—7½ × 4½ inches. Lines—15 on a page. Extent—180 ślokas. Appearance—old. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasabhúsana Grantha.—A description of the different kinds of heroes and heroines by Rámanátha Upádhyáya.

Beginning.—श्री राम जो सरन ॥ श्री गणेशायनम ॥ प्रथम मनाउ गनपति कह जो सुष चाहु ॥ बढे सकल सुष संपति सिटि है दाहु ॥ १ ॥ चरन तोरि चित सैरो सिव ठकुरानि ॥ कठिन सल सब हूँ गा पर मुँहि जानि ॥ २ ॥ करहु नीक सिवरानी सब विधि सोधि ॥ रचेहु ग्रथ तोरे वलसन प्रेम पयोधि ॥ ३ ॥

End.—अथ ललित हाव को उदाहरन यथा । लाएहु तहनि फुलेलया पिय रसमाति । पहिरया दाए गदनजा भलि भलि भाति १४४ अथ कुटटमितहाव को उदाहरन यथा । मि लेह मीत अब सुषमा गा दुष भागि । लारति चेतु जोन्हैया मरसत आगि १४५ अथ विहित हाव को उदाहरन यथा । मिलिगा मीत दुषरवै लोगवन साथ । हेरि सकुचि नहि बोली तिय लचि माथ १४६ इति इति श्री बरवै चानपेई रामनाथ कृत सपूर्ण शुभमस्तु रसभुषन ग्रन्थ समाप्त । श्री राम राम राम । बरवै रामनाथ कृत ॥

Subject.—नायिका भेद ॥

Note.—ग्रंथकर्ता बाजपेयी रामनाथ है । इसमें कोई समय नहीं दिया है ॥

No 94.—रतन हजारा *Verse*. Substance—country made paper Leaves—91 Size—9¾×6¾ inches. Lines—13 on a page Extent—1,007 ślokas Appearance—ordinary Complete. Correct Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Ratana Hajárá.—A collection of one thousand couplets by Rasa Nidhi Nothing more is known about this poet. The manuscript is dated Samvat 1894 (1837 A.D.)

Beginning.—श्रीगणेशायनम ॥ श्री सरस्वती देव्यैनमः ॥ दोहा ॥ लसत सरस सिधुर बदन भालथली नषतेस ॥ विघन हरन मगल करन गवरी तनय गनेस ॥ १ ॥ नमो प्रेम परमारथी यह जाचत हौ तोह ॥ नदलाल के चरन सो दे मिलाइ किन मोहि ॥ २ ॥ नमो प्रेम जिने कियो दिय लग चाह प्रकास ॥ रगरत वासो नाक गो नाक गोपकन पास ॥ ३ ॥ निसि दिन गुजत रहतमे विरद गरीवनिवाज ॥ है निज मधुकुर मुरान की कमल नैन सुहि लाज ॥ ४ ॥ बरन मधुर सुदर अरथ हरि सोहित निरधार ॥ रसनिध सागर मथ लयै दोहा रतन हजार ॥ ५ ॥

End.—अधम उधारन प्रभु कहू करतो जो न सम्हार ॥ तो तो मोसो पतित क्यो या भवसागर पार ॥ ९९४ ॥ हेरत कहू जु दीन जन याहि आवती लाज ॥ प्रीतम तै व कहावतो दीनवंदु ब्रजराज ॥ ९९५ ॥ जदपि अकरनी हू करी मै हर भाति मुरारि ॥ प्रभु करिनी करि आपही हरि विधि लेहु सुधारि ॥ ९९६ ॥ कहे अनप मति कौन विधि तेरे गुन विस्तार ॥ दीनबंध प्रभु दीन को ले हरि विधि निस्तार ॥ ९९८ ॥ इतिश्री महाराजाधिराज श्रीरसनिधि कृत रतन हजारा सपूर्न ॥ श्रीरस्तु मगल ददात ॥ कातिक शुक्र ॥ सवत ॥ १८९४ ॥ श्रीराम ॥ श्रीराम ॥

Subject.—प्रेमरस के दोहे ॥

Note.—ग्रंथकर्ता महाराज रसनिधि हैं । लिपि काल कार्तिक शुक्ल ३ सवत् १८९४ है ॥

No. 95.—रामायन महानाटक *Verse.* Substance — country-made paper Leaves—109 Size—8¾ × 6¾ inches. Lines—20 on a page. Extent—3,000 ślokas. Appearance—very old. Complete. Incorrect. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Maharája of Banáras.

Rámáyana Maháná̄taka —The story of Rámachandra's life by Prána Chanda Chauhána, who composed this book in Samvat 1667 (1610 A.D.) when Śáha Salíma was the Emperor of Delhi. This Salíma cannot be of the Súra family, being the younger son of Śora Śaha Súra, for he was dead in the year 1554. Probably it refers to the Mogal Emperor Jahángíra, who was called Prince Salíma before his accession in the year 1605. It is just possible that for some years after the accession Jahángíra, might have been popularly known as Śáha Salíma. The manuscript is dated Samvat 1775 (1718 A.D.).

Beginning—सदाशिव परंब्रह्मरूप ॥ नम गुरु चित्र गुरन ॥ नम्‌ तेन पतीत से राम लछमन ॥ महाबली राणा ॥ जतो सुग्रीवे ॥ राघवे नाम ॥ दानतो ॥ प्रथम करौं ताहो की सेवा । जेहो गुरु कह सज मानी देवा । गुरु गनेश कीर जाने । इंद्र जाही सुर नाग बखाने । शीव सुत केनी शीघ्र मन्हो । गुड ठठावे सबे नल लीन्हो । पालो पेट मह काठी चठारा । कहउ मह कहउ पवेउय हमारा । कहउ सेष कहउ सैनक करया । ब्रह्मा कहउ ध्याम के घरना । शीव सुत पीके काठी चठाना । तेहो दिन सो जल जो मारा ॥ जगमग सिर चानीक । रहे योद नरनाह सो जल क्रीड़ा गनेश की । परी चौपति छन माह ॥ ॥ ॥

कातीक मास पक्षो उजीयारा तीथ पुनो सोम कर वारा ॥ ताही दीन कथा कीन्ह अनुमाना शाह सलेम दीलीपती जाना समत सोरह स सत साठा पुन्य प्रगास पाप भय नाठा जो आद माता कर दाया बरनो आद पुरुष की माया जेह माया कर मुनो जग मुला ब्रह्मा रहे कमले के फुला नीकस न सके माया के बाधा देषहु कमल नाल के पथा आद पुरुष बरनो कोहो भाति चद सुरज तहां दीवस न राती नीरगुन रूप रूप कही शीव ध्याना चार वेद गुन ओरि बखाना तीनो गुन जाने ससारा थीरचे पाले भंजन हारा श्रवन विना सो सब बहु गुना मन म होय सु पहले सुना दृष्टे सत पे आही न आयो अधकार चोर के मायो तोही कर दहु कोकर बखाना तोही कर मर्म भेद नही जाना माया शीघ्र भो कोउ न पारा शकर शहर बीच होय हारा ॥

१ शीरचे धनका सक मह भजहु लागु न धार ॥
घरनो स्वर्ग पाताल तें महो माया अगम अपार ॥

End.—

राम चरित्र जो कहे बखाना वाढे धर्म पाप होवे हाना
अरु जो सुने श्रवन चीत लाई सो जमपुर के नीकट न जाई
सो सा आनक येह संसारा राम नाम बीन होवे न पारा
नारद वाल्मीक दुर्वासा कीन्हहु राम नाम की आसा
चारो जुग जाने ससारा अंत काल कह राम अधारा
जेहो नीति शम्भु धरही ध्याना चारो वेद पढि ब्रह्म सुजाना
मुनीयो तपा शीव सन्यासी जल थल यो आकाश के बासी
इन सब मोली येह व्रत राषा राम नाम बीन और न भाषा
सो महीमा शारद्‌ कह भारी तेहो बरनै कह मती हमारी
आदी कथा येह चेहे पुराना सो मे भाषा कीन्ह बखाना

No 108—सुजन विनोद *Verse* Substance—country made paper Leaves—40 Size—9½ × 4 inches Lines—10 on a page. Extent—1,125 ślokas. Appearance—old Complete Incorrect. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Sujana Vinoda—A book on Hindi composition by the poet Deva Datta of Mainapuri (1620 A.D) This manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A.D) There is another incomplete copy of this book in this library

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहरा ॥ श्री राधा हरि प्रेम वस सरस सिंगार उदार ॥ हर्षितु बारहो मास गुण वृन्दा विपिन बिहार ॥ १ ॥ श्री वृन्दा वन अस्तुति ॥ प्रेमी उक्ति ॥ होसी वृज वृंदावन मोही मे वसति सदा जमुना तरंग स्यामरंग अवलीनि को ॥ देव बेरे सुद्र सघन बन देषियत कुंजन में सुनियतु गुंजन अलीनिको ॥ वंसीवट तट नट नागर नचतु मोमें रास के विलास में मधुर धुनि बीनको ॥ भरि रह भनक बनक तार ताना को तनक तनक तामें मनक चुरीनि की ॥ २ ॥ अथ वृन्दावन समय गुण दंपती वर्णन ॥ दोहा ॥ द्वै द्वै रितु लोन्यो सबै दंपति सीनि सरूप ॥ रस उत्पत्ति विलास अरु प्रकास सुरस अनूप ॥ ३ ॥

End—तन मन थोट पट कपट घूंघट घोलि उर सो लगाये इतने पे अरसात हो ॥ याकी अपन्याउ अपने न सपने हो थिर होत नही नभ पछि थिरात हो ॥ कोधो किहि गेल छैल छतिया छपाय जकि विरह धीराने देव बोलत न बात हो ॥ प्यारे परजंक हू में साथ ले थथक थक हमें अकुलात हो ॥ ४८ ॥ मोतीसो आरती हिय आनिके प्रभात दृग ढीले करि प्रीतम के गात मु लफलफनि के ॥ उतरत सेज ते सपीनि सुप देत नाथ नहीं पैंनी लाबो लपै लाल मेरे लफनि को ॥ दासी देवता सो पग दंपति के दाबि चली दाबे पग सघन ‥ ‥ लाल को चरन सेव आये दास देव रगमगी अंगजेब जगमगी मु लफनि की ॥ ५० ॥ इति श्री सुजनविनोदे देव कविकृते पट रितु विलास वर्णनो नाम सप्तमो विलासः ॥ ७ ॥ इति सुजन विनोद सपुर्ण सुभ सवत् १८५७ मिती श्रावण सुदी ६ बुध वासरे लिषितं श्री दिमान दुर्जनसिंह गौर स्तन इद्रगढ नदी सिधु नदी तटे परगने तहाहिर सरकार येरछि सुबा अकबरबाद यार दुरपीधोधो लियो मनिकर्णिका तटे ॥

Subject—काव्य साहित्य ॥

Note—कवि देवदत्त रचित। लिपिकाल सवत् १८५७ मिती श्रावण सुदी ६ बुध वार है ॥

No 109—केदारपंथप्रकास *Verse.* Substance — country made paper Leaves—*71* Size—*12¼ × 7* inches. Lines—*12* on a page Extent—*2,725* ślokas. Appearance — new Complete. Correct. Character — Devanágari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Kedára pantha prakása.—An account of the journey of Rájá Narendra Nátha Sinha of Patiálá by the poet Dása. He wrote this book in Samvat 1910 (1853 A.D)

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ अथ केदार पथ प्रकास लिख्यते ॥ दोहा ॥ गुर गन पति पितु मात के पद बंदो सु प्रात ॥ जिनकी कृपा कटाक्ष रवि तुरत हरत भय रात ॥ १ ॥ नर नारायन सुमर पुन द्वीपाइन मन लाय ॥ जिनके मग पत परत नर पारावन ह्वै जाय ॥ २ ॥ जिह गुन गाइन सुनत नित नारायन मुद होत ॥ तिह नारद मुनि पद अथ जन भाय धारव पोत ॥ ३ ॥ तिह वानीं पद द्वंद को पद्रत अघ दर ध्यान ॥ जिह कारन हित दयाकर जन कुवलन सुपदान ॥ ४ ॥ जन कुवलन को सुपद जो पन कमलन को नाथ । ताबे रघुबर दद लहु यो। बंदे कवि दास ॥ ५ ॥

End.—सोरठा ॥ लिखी सु ग्रंथ निज हाथ यहै लखी में जथा मति ॥ गुन छमयो कविनाथ भूल चूक कविदास की ॥ ९८ ॥ ग्रन्थो यातक माघ मवग नभ शशि चन्द महि ॥ ग्रन्थ की कविदास कथा केदार प्रकास कर ॥ ९. ॥ दान दरहु कल कुर बिना इर्श्वर पुष ते ॥ कथा षमी रस पूर नारायन मदनी ॥ ६० ॥ इति श्री राजाधिराज श्री नरेंद्रसिंघ केदार यात्रायां किदार पंच प्रकासे पंच किदारो नाम पंचमो विलास ॥ ५ ॥ शुभम ॥

Subject.—केदार यात्रा वर्णन ॥

Note.—कर्त्ता कवि दास है । ये श्री पटियाला राज्याधिप श्री वीर महाराज नरेंद्र सिंह ने केदार बद्रीनारायण की यात्रा करने समय जैसा वहाँ के मार्ग का वृत्तान्त लिखा था तदनुसार इन्होने इस ग्रंथ में उसे छन्दोबद्ध किया है । निर्माण काल संवत १९१० कातिक सुदी १२ है ॥

No 110—दलसिंघानंदप्रकाश *Verse*. Substance—country made paper Leaves—37 Size—12×7 inches. Lines—12 on a page. Extent—950 ślokas Appearance—new Complete. Generally correct Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Dala Singhánanda prakása.—A collection of 727 couplets on different subjects by the poet Dása (See No 111). It appears that the poet completed this collection in Samvat 1890 (1833 A D) From the opening lines of this book it appears that the poet's full name was Dala Singha and his *nom-de-plume* was Dása.

Beginning.—ॐ श्री गणेशायनमः ॥ अथ दलसिंघानंद प्रकाश ॥ मतसया लिख्यते ॥ कृत कविदास श्री दलसिंघ ॥ मंगलाचरण ॥ दोहा ॥ सिमर गुरु गोविंद सिंह सिमर सुजन को सिद्धि ॥ जा पद पदम सुप्रेम है बुद्धि वृद्धि नव निद्धि ॥ १ ॥ गुरु गोविंद सिंघ पद पदम करत सारदा ध्यान ॥ कर मुजन राजति भले जाते लाखे जान ॥ २ ॥ अति ध्यान गुरु पद पदम पै पदमा कीनो नेह ॥ पदम सुपद अनुराग कर बैठी तापर गेह ॥ ३ ॥

End.—अथ ग्रन्थ जनम बरनन ॥ दो० ॥ संवत नभ निध वसुरविपु वासर बुध विचार ॥ माह सुदी दुतिया भले भयो ग्रन्थ अवतार ॥ ७२५ ॥ गुरु पाप से सोध शुभ छत्र विराजत नित्य ॥ पुर पटियाले मो रची यह रचना बरमित्य ॥ ७२६ ॥ मीता पकरा मे कहीं मन बच क्रम कर मीत ॥ कविरचन गोविंदसिंघ पद सदा बसे मम चीत ॥ ७२७ ॥ इति श्री दलसिंहानंद प्रकाश ग्रन्थ से सताईं दोहरा समाप्त ॥

Subject.—अनेक विषयों के ७२७ दोहों का संग्रह ॥

Note.—ग्रन्थकर्त्ता कवि दास हैं । आरम्भ में इसके लिखा है कि "कृत कविदास श्री दलसिंह" इससे यह अनुमान होता है कि इनका पूरा नाम दलसिंह और उपनाम कवि दास था । १८९० आषाढ़ सुदी २ बुध वार इस ग्रन्थ का जन्म समय लिखा है ॥

No 111—सुंदरसार सिंगार *Verse*. Substance—country made paper Leaves—57 Size—9¼×6½ inches. Lines—16 on a page. Extent—900 ślokas. Appearance—ordinary Complete. Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sundara Sata Singára.—Praises of Krisna Chandra by one Sundara who composed this book in Samvat 1869 (1812 A.D)

Beginning—श्री कृष्णायनम ॥ अथ सुंदरसतसिंगार लिख्यते ॥ चौपाइ ॥ हरि बन बन भोरही पधारे ॥ भूषन वसन अंग अंग सुधारे ॥ मन मोहन जन जन मन मोहन ॥ काम लजावन नख सिख सोहन ॥ पीतांबर कर मुरली धारे । झूम झूम बरषत हैं सुधारे ॥ मधुर मधुर अति बोलत बतियां ॥ सोहै मन मोहै सुभ दतियां ॥ पोहैं मानो मुक्ते मोती ॥ रीझ रीझ गई लखि लखि जोती ॥ श्री वृषभानु लली को गली जो ॥ सुंदर हिली मिली आवे चली सो ॥ अबही तो आपके दे गए बोहनी ॥ डारेंगे आगे सब पर मोहनी ॥

End—कवित्त ॥ मानै उमग से दीप पै पतंग सफूलें मतंग सो मानो पतंग सी झुक झुक झुकाई है । बाकी पीत अंग की बागे पीत रंग के भूषन पीत अंग अंग सोहौ भी सोहाई हैं ॥ कपत अंग अंग गहें तपत अंग अंग हैं भरो छप रंग मनोरंग सी उडाई है । सरसत अंग अंग बरषत रंग रंग दंग दंग तन मन सो सुंदर वलि जाई है ॥ १०२ ॥ चौपाई ॥ संवत अठारह से उनहत्तर ॥ वैसाष मास मलि मास पवित्तर ॥ शुक्ल पच्छ नौमी रतवार ॥ सुन्दर पोथी करी मुरारि ॥ इति श्री सुंदरसतसिंगार संपूर्णम् ॥ ग्रंथकर्त्ता की प्रार्थना ॥ दोहा ॥ मैं तो अपनी जान में कीहो शुद्ध बखान ॥ पर लेषक के लिखन को कछू नहीं परमान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पिंगल छंद भेद नहिं जानो ॥ काव्य ग्रंथ मन में नहिं आनो ॥ केवल हरि रस हरि जस गायो ॥ हरि रसिकन के मन को भायो ॥ पिंगल दृष्टि ते यह न लखोगे ॥ जिय में हरि को ध्यान लिखोगे ॥ मैं ताके बल हरि जस गाऊ ॥ चेतन सो अपराध छिमाऊ ॥ दोहा ॥ कियो हरि जन सुष कारने सुंदर सत सिंगार ॥ सत जनन मन सेती माथे भक्ति प्रकार ॥ १ ॥

Subject—श्री कृष्णचन्द्र के विषय में किसी भक्त की भावना ॥

Note—ग्रंथकर्त्ता कोई सुन्दर नामक भक्त हैं, जिन्होंने इस ग्रंथ को संवत १८६६ में बनाया ॥

No 112—जगतमोहन *Verse* Substance — country made paper Leaves—400 Size—10¾ × 7 inches Lines—17 on a page Extent — 9 900 ślokas. Appearance—new Incomplete. Correct Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Jagata Mohana—A book dealing with several branches of Hindi composition and such other subjects as Vedánta Nyáyá astrology medicine etc The name of the author is Raghunátha Bandijana to whom some villages were given by Rája Barivanda Singha (*alias* Balavanta Singh) of Banáras. He composed this book in Samvat 1807 (1750 A.D) There are several blank pages in this manuscript Probably some portions of it have not been copied out.

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ सुफल होति मन कामना मिटत विघन के वृंद । सुख सरसत बरसत हरष सुमिरत लाल मुकुंद ॥ १ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मा को सुत मानसिक गौतम परम प्रसिद्धि । ताके कुल कोटू मिसिर प्रगट भयो तप सिद्धि ॥ १ ॥ वेद कंठ चारो करे अष्टादशो पुरान । उपनिषदो अरु सास्त्र सब औ सब कला निधान ॥ २ ॥ प्रबोध चंद्रोदय करे नाटक परम अनूप । जामे दरसनु है सदा ब्रह्मज्ञान को रूप ॥ ३ ॥ [आगे काशिराज की वंशावली गौतम मुनि से महाराज बरिवंडसिंह तक । फिर निर्माण काल] दोहा ॥ अट्ठारह से मुनि अधिक संवत अति अभिराम । माघ शुक्ल श्री पंचमी तिथि मिति सब सुख धाम ॥ ४ ॥ ग्रंथ जगत मोहन भयो ता दिन सब सुखरास । नवरस मय सब जगत में अपनो कियो प्रकास ॥ ५ ॥

End—सोरठा ॥ लियो सु नृप निज हाथ यहै लखी जो यथा मति ॥ शुभ छन्दनि अविनाथ भूप सकल कविदास की ॥ ८८ ॥ पुन्यो बालक भाष यद्यपि नाम रसिकन महिं ॥ प्रेम की कविदास यथा किदार प्रकास कर ॥ ८९ ॥ मान करहु कछु फुर बिना सबयर पुन्य तें ॥ कथा स्वामी रस भूर नारायन पुर्वचनो ॥ ९० ॥ इति श्री राजाधिराज श्री नरेंद्रसिंघ केदार यात्रायां किदार पद प्रकासे पद विहारी नाम पंचमो विस्राम ॥ ५ ॥ शुभम ॥

Subject—केदार यात्रा वर्णन ॥

Note—कर्त्ता कवि दास हैं। ये भी पटियाला राज्याश्रित थे और महाराज नरेंद्र सिंह ने केदार बद्रीनारायण की यात्रा करते समय जैसा वहां के मार्ग का वृत्तान्त लिखा था तदनुसार इन्होंने इस ग्रन्थ में उसे छन्दोबद्ध किया है। निर्माण काल संवत् १८१० कातिक सुदी ११ है ॥

No 110—दलसिंघानंदप्रकाश *Verse* Substance—country made paper Leaves—37 Size—12 × 7 inches. Lines—12 on a page Extent—950 ślokas Appearance—new Complete Generally correct Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Dala Singhánanda prakása.—A collection of 727 couplets on different subjects by the poet Dása (See No. 111) It appears that the poet completed this collection in Samvat 1890 (1833 A.D) From the opening lines of this book it appears that the poet's full name was Dala Singha and his *nom-de-plume* was Dása.

Beginning—दो श्री गणेशायनम ॥ अथ दलसिंघानंद प्रकाश ॥ मतसया लिख्यते ॥ कृत कविदास श्री दलसिंघ ॥ मंगलाचरन ॥ दोहा ॥ सिमर गुरु गोविंद सिंह सिमर सुमन को सिद्धि ॥ जा पद पदम सुप्रेम है बुद्धि वृद्धि नव निद्धि ॥ १ ॥ गुरु गोविंद सिंघ पद पदम करत सारदा ध्यान ॥ कर सुमन रागति भले याते लीजे जान ॥ २ ॥ अति प्रेम गुरु पद पदम सो पद्मा कीनो नेह ॥ पदम सुपद अनुसरन कर बैठी जाकर गेह ॥ ३ ॥

End—अथ ग्रन्थ जनम वरनन ॥ दो० ॥ संवत नभ निधि वसु शशि वासर बुध विचार ॥ साढ सुदी तृतिया भले भयो ग्रन्थ अवतार ॥ ७२४ ॥ गुरु पान के सीस शुभ छत्र विराजत नित्य ॥ पुर पटियाले मो रची यह रचना करि मित्य ॥ ७२६ ॥ श्रोता वक्ता जो कहा मन वच क्रम कर नील ॥ कवियन गोविंदसिंघ पद सदा वसे मम चीत ॥ ७२७ ॥ इति श्री दलसिंहानंद प्रकासा ग्रन्थ से सतसै दोहरा समाप्त ॥

Subject—अनेक विषयों के ७२७ दोहों का संग्रह ॥

Note—ग्रन्थकर्त्ता कवि दास हैं। आरम्भ में इसके लिखा है कि "कृत कविदास श्री दलसिंह" इससे यह अनुमान होता है कि इनका पूरा नाम दलसिंह और उपनाम कवि दास था। १८९० आषाढ सुदी ९ बुध वार इस ग्रन्थ का जन्म समय लिखा है ॥

No 111—सुन्दरदास सिंगार *Verse* Substance—country made paper Leaves—57 Size—9¼ × 6¼ inches. Lines—16 on a page. Extent—900 ślokas Appearance—ordinary Complete Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Sundara Sata Singára.—Praises of Krisna Chandra by one Sundara who composed this book in Samvat 1869 (1812 A D)

Beginning—श्री कृष्णायनम ॥ अथ सुंदरसतसिंगार लिख्यते ॥ चौपाइ ॥ हरि बन बन भोरही पधारे ॥ भूषन बसन अंग अंग सुधारे ॥ मन मोहन छन छन मन मोहन ॥ काम लजावन नख सिख सोहन ॥ पीतांबर कर मुरली धारे । छम छम बरषत हैं सुधारे ॥ मधुर मधुर अति बोलत बतियां ॥ सोहै मन मोहै शुभ दतियां ॥ पोहै मानो मुक्ते मोती ॥ रीझ रीझ गई लखि लखि जोती ॥ श्री वृषभानु लली की गली जो ॥ सुंदर हिली मिली आवै चली सो ॥ अबही तो आपके है गय बोहनी ॥ डारैंगे आगे सब पर मोहनी ॥

End.—कवित्त ॥ भाये उमग से दीप पै पतंग सफूलैं मतंग सी मानो पतंग सो झुक झुक झुकाई है । वाकी पीत अंग की बागे पीत रंग के भूषन पीत अंग अंग सोहै सो सोहाई है ॥ कपत अंग अंग गहें तपत अंग अंग हैं भरी रूप रंग मनोरंग ही उडाई है । सरसत अंग अंग बरषत रस रंग दग दग रान मन सो सुंदर बलि जाई है ॥ १०१ ॥ चौपाई ॥ संवत अठारह से उनहत्तर ॥ बैसाख मास मलि मास पवित्तर ॥ शुक्ल पक्ष नौमी शनवार ॥ सुन्दर पोथी करो मुरारि ॥ इति श्री सुंदरसतसिंगार संपूर्णम् ॥ ग्रंथकर्त्ता की प्रार्थना ॥ दोहा ॥ मै तो अपनी जान मैं कीन्हो शुद्ध बखान ॥ पर लेखक के लिखन को कछु नहीं परमान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पिंगल छंद भेद नहि जानो ॥ काव्य ग्रंथ मन मे नहि आनो ॥ केवल हरि रस हरि जस गायो ॥ हरि रसिकन के मन को भायो ॥ पिंगल दृष्टि ते यह न लखेगो ॥ जिय मे हरि को आन लिखेगो ॥ मैं ताके बल हरि जस गाऊ ॥ औरन सो अपराध छिमाऊ ॥ दोहा ॥ कियो हरि जन सुख कारने सुंदर सत सिंगार ॥ सत जनन जन सेती मागो भक्ति प्रकार ॥ १ ॥

Subject—श्री कृष्णचन्द्र के विषय मे किसी भक्त की भावना ॥

Note.—ग्रंथकर्त्ता कोई सुन्दर नामक भक्त हैं, जिन्होंने इस ग्रन्थ को संवत १८६९ मे बनाया ॥

No 112—जगतमोहन *Verse* Substance — country made paper Leaves—400 Size—10¾ × 7 inches Lines—17 on a page Extent — 9,900 ślokas Appearance—new Incomplete Correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Jagata Mohana—A book dealing with several branches of Hindi composition and such other subjects as Vedánta Nyáyá astrology, medicine, etc The name of the author is Raghunátha Bandíjana to whom some villages were given by Rájá Bariwanda Singh (*alias* Balavanta Singh) of Banáras He composed this book in Samvat 1807 (1750 A D) There are several blank pages in this manuscript Probably some portions of it have not been copied out

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ सुफल होति मन कामना मिटत विघन के वृंद । गुण बरसत बरसत हरष सुमिरत लाल मुकुंद ॥ १ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मा को सुत मानसिक गौतम परम प्रसिद्धि । ताके कुल कोटू मिसिर प्रगट भयो तप निद्धि ॥ १ ॥ वेद कंठ चारो करे अष्टादशो पुरान । दर्शनषटो अरु शास्त्र सब औ सब कला निधान ॥ २ ॥ प्रबोध चंद्रोदय करे नाटक परम अनूप । जामे दरसतु है सदा ब्रह्मज्ञान को रूप ॥ ३ ॥ [आगे काशिराज की वंशावली गौतम मुनि से महाराज बरिवंडसिंह तक । फिर निर्माण काल] दोहा ॥ सत्रह से मुनि अधिक संवत अति अभिराम । माघ शुक्ल श्री पंचमी तिथि मिति सब सुख धाम ॥ ४ ॥ ग्रन्थ जगत मोहन भयो ता दिन सब सुखरास । नवरस मय सब जगत में अपनो कियो प्रकास ॥ ५ ॥

End—अथ मुरछना ॥ जहां होत आरोह सो जहां होत अवरोह । स्वर को मुनिगन मूर्छना तासं कहत करि छोह ॥ १२० ॥ उरध को सुर सार जो सो कहिये आरोह । अथ को स्वर आवे जहां ताहं कहिये अवरोह ॥ १२८ ॥ ग्रामाश्रित है मूर्छना तिन की संख्या ग्राम तिन के मुनिये नाम अब मन स्वर मग बिसारा ॥ १२६ ॥ प्रथम मूर्छना षज् की ताको मद्रा नाम । है निषाद की दूसरी सो रजनी अभिराम ॥ १३० ॥ धैवतादि की आयता है तिसरी गुन रास । सुद्ध षज् है मूर्छना चौथी पंचम पास ॥ १३१ ॥ मत्सरी है पांचवे मध्यम स्वर के पास । अस्वाक्रांत छटुई स्वर गंधार के आस ॥ १३२ ॥ रिषभादि स्वर सो भई प्रगट मूर्छना जान । नाम उदग्ता कहत है अति सुख दायक तान ॥ १३३ ॥ (ग्रंथ यहीं पूरा का अंत है आगे कुछ नहीं लिखा है मालूम पन्ना १ टूटा है इति मिति कुछ नहीं है) ॥

Subject—इसमें अनेक विषय हैं, वेदान्त, न्याय, सामुद्रिक, ज्योतिष, वैद्यक, कोक, शिल्प, चित्रकाव्य, अलंकार, नायिका, संगीत आदि ॥

Note—इसके ग्रन्थकर्ता काशी निवासी वंदीजन कवि रघुनाथ हैं । ये महाराज काशीनरेश बरिवंडसिंह जी के आश्रित थे । इन्होंने इनको कई ग्राम दिए थे । इस ग्रन्थ का निर्माणकाल संवत १८०७ माघ शुक्ल ५ है ॥

No 113—रसमूल *Verse.* Substance—country-made paper. Leaves—56. Size — 10½ × 6½ inches. Lines — 13 on a page Extent — 444 ślokas. Appearance—new Incomplete Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasa Múla.—The detailed description of heroes and heroines by the poet Lála of Banáras who flourished in the time of Rájá Cheta Singha (1770-1781) of Banáras He composed this book in Samvat 1833 (1776 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ गौरी गनपति वंदि के श्री सकर को ध्यान ॥ भाषा कविता करत हौं दीजे ग्रन्थ बनाय ॥ १ ॥ जाके भले सुने सबै लगत चहे सब कोइ । कवि कोविद मोहित रहै भूपति को सुख होइ ॥ २ ॥ कवित । ध्याइ गजबदने सदाई वक्र रदने सुपुन्य करे बदने देवैया बहु धन के । सकर सुवन त्रिभुवन में प्रगट ऐसे भुवन भुवन में रवैया जन जन के । कहै कविलाल कलाधर भाल भलकत छविजाल प्यारे कुलि गन के । कविता दुगुति के सुमति के प्रकाश है नासन कुमति के विनाशन विघन के ॥ ३ ॥

(पृष्ठ ६) रितु बसंत दिन फाग के गंग जमुन के कूल । पावनगर में मोद भरि कथ्यो ग्रन्थ रसमूल ॥ ३३ ॥ संवत ठारह से बरस भए बीति तेतीस ॥ मास फागु तिथि पंचमी भयो ग्रन्थ रस ईस ॥ ३४ ॥

End—अथ अधमा लछन ॥ पिय अनुरागी रहतु है आपु न रागी नेकु । अधमा तासों कहतु हैं मानु करे करि टेक ॥ २२१ ॥ नायक हो जाकि जाति है जाको है यह सोधु ॥ ठग गन ठानति पुरुष सो अनगन तनगन रोधु ॥ २२२ ॥
(इति नहीं है । आगे ३ पत्रे नहीं हैं) ॥

Subject.—नायिका भेद ॥

Note.—यह ग्रन्थ कवि लाल रचित है जो काशीनरेश महाराज चेतसिंह के आश्रित थे । इसका निर्माणकाल संवत १८३३ फाल्गुण की पंचमी है ।

No 114.—कवित्त महाराना महीपनारायण वहादुर तथा और काशी राजा के *Verse* Substance—country made paper Leaves—33 Size—10½ × 6¾ inches Lines—13 on a page Extent—290 ślokas Appearance—new Incomplete Correct Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kavitta Mahárája Mahípa Náráyana Bahadura tatha aur Kásírajon ke—Praises of the Rájas of Banáras and of Rájá Cheta Sinha specially, by the poet Lála of Banáras (1775 A.D) The book does not appear to be complete

Beginning—श्री गणेशायनम. ॥ राम' ॥ कवित राजा महीप नारायन वहादुर के ॥ थपन उथपन विदित महिपालन को जाहिर जहांन प्रतिपालक दुनी को है । जब्बर भुज ब्बरन जब्बर यवत काशी सब्बर मिटाये ख्याल गौतम धनी को है ॥ कहे कविलाल दान भोज बनो विक्रम सो जबूद्वीप उपर करन करनी को है । नाली वरिवंडसिंह भूपति जसी को भो महीपति महो को नीको टीको राजसी को है ॥ १ ॥

End—श्रथा धूघ धूधुरीन धूरि सो छुटे रहे काल ही चपेटे है करेटे बल घाट के । श्रेहत श्रडत मद झरत भरत नद पगतर पव्वे चूर करत सराह के ॥ कहे कविलाल बाधि कढ़त कतारे मानो मेघ मघवारे नभ तारे लो उछाह के । हलत धरारे होत नगर हलारे चज चलत दतारे चेतसींघ नरनाह के ।

Subject—काशी नरेश के पूर्व राजाओं की प्रशंसा ॥

Note—ग्रन्थकर्ता लाल कवि हैं । काल इसमें कोई नहीं है न इति श्री ही है । इसी से इस ग्रन्थ के पूर्ण होने में सन्देह है ।

No 115—रामायण *Verse* Substance—country made paper Leaves—570 Size—12¾ × 6¾ inches Lines—11 on a page Extent—13 448 ślokas Appearance—new Complete Generally correct. Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Rámayana—The story of Rama Chandra's life by Mahárája Visvanátha Singha of Rewáh (1840) The manuscript is dated Samvat 1889 (1832 A D)

Beginning—श्री गणेशायनमः । श्री मते रामानुजाय नम ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ श्रथ लिख्यते बालकांड ॥ श्लोक ॥ तत्व वेदांतशास्त्रस्मृतिनिगममहत्संहितानाटकाना यत्तत्व सात्विनीनामुरगपतिमते यत्पुराणस्तानात ॥ पैतामीय च तन्त्र कथयति निगमं काव्य रामायणाना । साहित्याना रहस्य विमलमतिमुदे विश्वनाथप्रवचे ॥ १ ॥ सोरठा ॥ परहु ते पर प्रभु दानि ॥ प्रियादास पद पदुम कह ॥ कार प्रनाम उर श्रानि ॥ कहौ चरित पर राम के ॥ बंदो हित हरिवश ॥ रसिक सिरोमनि रास रस ॥ करतहि साधु प्रसंस ॥ मगन मोर मन मोद से ॥ १ ॥ चौपाई ॥ श्री हरिवंश कुलोदधि श्रायो । सकल तापहर राम सुहायो ॥

End—दोहा० ॥ जैति जैति श्री हरि गुरु प्रियादास रस गाय । रामायन जिनको कृपा कहू मुन्य विसुनाथ ॥ जैति जैति धानी जयति श्रावारन करतार । परम परा गुर की शरति बरनन जेहि सुख सार ॥ सोरठा ॥ दो जो सिय रघुनाथ । बसहु श्राय मेरे हियें ॥ गहो सान विसुनाथ । देहु नाथ निज प्रेम पर ॥ १०८ ॥ श्रथ कमलबंध छ्पद० ॥ विस्वनाथ कर नाथ राम जेहि हर हरजर घर । प्यार मार हिर मोर धीर उर कर धर धर सर । वार वार हर भार पार कर नर वर हर धर ॥ धीर जोर उर धार पीर दर हर पर दर कर ॥ से रच्यो

रहे रस रमो रस रम्यो रहे रसार यर ॥ हूँ रहिया रमे रम्ये रतोर राये रटि रटि मुर नर ॥ * ॥ इति श्री महाराज कुमार श्री बाबू साहेब विश्वनाथसिंह देव कृत उत्तर काड सपूर्ने ॥

Subject—श्री रामचन्द्र का इतिहास ॥

Note—महाराज विश्वनाथसिंहजी देव रीवाँधिपति कृत। यह ग्रन्थ इन्होंने अपनी बाल्यावस्था ही में लिखा है, तब राज्याधिकारी नहीं हुए थे। लिपि काल लका काड से मिलता है और कहीं नहीं है। यह सवत १८८६ है।

No 116—रामगुणोदय *Verse.* Substance—country made paper Leaves—76 Size—$9\frac{1}{2}\times6\frac{1}{2}$ inches. Lines—30 on a page. Extent—about 3 375 ślokas Appearance—old Complete Correct Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Rámaguno laya—An account of the horse sacrifice performed by Ráma Chandra. The poet, Dhanī Ráma wrote this book in Samvat 1867 (1810 A D) at the request of Babu Devakínandana of Banáras whose old palatial buildings may still be seen in Banáras in Mohalla Rámápurá. Dr Grierson says that this poet was born in 1831 which date appears to be incorrect. If the year 1831 may be taken to be of the Vikrama Samvat it may be the correct date of the poet s birth

Beginning—श्री गणेशायनम। कवित्त। जाहि सुमिरत सहजे ही सिद्धि पाइयत गाइयत आगम निगम मति सार है। शकर परम प्रिय परम विसाल वर बदत मयद मति अगम अपार है॥ कहै धनीराम जन मन प्रतिपाल करै सकल अमगल विनायक बिहार है। ईसुरी गजानन चरन चित्त राखि हैं। कहत यह भाषि राम चरित प्रचार है॥ १ ॥

End—सोरठा। सीय सहित यहि भाति अश्वमेध यत्र राम किय। दियो प्रसारि द्विति तीनि लोक कीरति बिमल ॥ १३ ॥ छद सात मैमन पूछियो मय की कथा। भाषियो मति सेष तोहि भई जथा॥ सेष भाषिन को सुने सुख पाइयो। धन्य धन्य अनेक धा मुनि गाइयो ॥ १४ ॥ दोहा ॥ जाग कथा भाषा करयो अति हिठई मन पूरि। छमा करायन हेतु सब कविन निहोरत भूरि ॥ १५ ॥ इति श्री राम गुणोदये यज्ञ समापन नामैकषष्टितम' सर्ग ॥ ६१ ॥ पुस्तकोयं समाप्तिमगमत धनीराम कविना स्वहस्तेन लिखिता ॥ चवरी छद ॥ अब्धि नैन सिद्धि समित चद सवत जानही। शुक्र श्री तिथि रुद्र शुक्र सुपच्छ स्यामल मान ही ॥ रवती उड्ड मे प्रसन्न महा द्विजोत्तम सो ठइयो। चार सादिन यथ पूरनता विसेषि सो पाइयो ॥ १ ॥ सवत १८६० जेष्ठ वदी ११ शुक्रवार रेवती नक्षत्र ॥ छ छ छ छ छ छ छ छ ॥

Subject—श्री रामाश्वमेध का वर्णन ॥

Note—कर्ता कवि धनीराम हैं। ये बाबू देवकीनन्दनसिंह के आश्रित थे। निर्माण काल स० १८६० जेष्ठ कृष्ण ११ शुक्रवार है। यह पुस्तक ग्रन्थकर्ता की हस्तलिपि मालूम पड़ती है ॥

No 117—मृगमृगया *Verse* Substance—country made paper Leaves—51 Size—7×4 inches Lines—6 on a page Extent—300 ślokas. Appearance—new Complete Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Bhúpa Bhúsana —Moral lessons for kings by the poet Jaikehari of Patiálá. He wrote this book in Samvat 1890 (1823 A D)

Beginning —ॐ श्री गणेशायनम ॥ अथ भुपभूषण लिष्यते ॥ भुजग छद ॥ सदा सचिदा नद रूप अपार । सुधीसो वुधीसो समीसो अपार ॥ अजे आदि अक्षे अधो ऊध गामी । कथी केहरी जे अहर्त नमामी ॥ १ ॥

End —पृथ्वीपाल के हेत ये ग्रथ कीनो । भयो सा सुमे विक्रमा साल चीनो । नभ निद्ध सिद्धी धरा को धरीजे । सुदी हाड की तीन को सान लीजे ॥ १६० ॥ इति श्री जेकेहर विरचिते भूपभूषणे नीति ग्रंथे नयम रतन समापत । शुभमस्तु सर्वजगताम ॥

Subject —राजनीति ॥

Note.—ग्रथकर्ता जेकेहरि कवि हैं । ये पटियाले के राजा पृथ्वीपालसिंह के आश्रित जान पडते हैं । इस ग्रथ के निर्माण का सवत् १८६० आषाढ शुक्ल ३ है ।

No 118 —विनोदचन्द्रिका *Verse* Substance — country made paper Leaves—9 Size—8¼ × 4¾ inches. Lines—15 on a page Extent—300 slokas Appearance — old. Complete Generally correct. Character — Devanágarí Place of deposit —Library of the Mahárája of Banáras.

Vinoda Chandriká —The detailed description of heroes and heroines by Kavindra Udaya Nátha (1720) son of Káli Dása Trivedi The full name of this book is Rasa-vinoda rasa chandriká The manuscript is dated Samvat 1860 (1803 A D)

Beginning —श्री गणेशायनम ॥ विनोद चन्द्रिका लिष्यते ॥ तपोव तत्व के सतोगुन के सत्व के ममत्व महादेव पारवती पर किति को । वुद्धि को विधान के प्रधान गीरवानन की वोन केधो विघन विनासीनो विमति को ॥ मदन मलित सुडा दड सो मिलित केधो कामना प्रयाग को प्रयाग उप श्रुति को । मद्ता कविंद्र इदु कल्प सो विमल महा सिद्धिन के सदन रदन गनपति को ॥ १ ॥ योना पुस्तक धारिनो हस चारिनो नाम । यानो वाक सर स्वती देहु वुद्धि अभिराम ॥ २ ॥ ताते उपजे ग्रथ यह चलै चहूं दिसि चारु ॥ रति विनोद रस चद्रिका सुनि रीझै ससारु ॥ ३ ॥

End —आगत पतिका ॥ दोहा ॥ पिय आये परदेस ते हरषित होइ जो वाल । आगत पतिका कहत है ताको सुमति रसाल ॥ १०१ ॥ आयो विदेस ते नाह नवेली को आनद कोउ धरी सुधरी है । लाज लिये गुर लोगनि की गृह काज को आजु भरी नजरी है ॥ ज्वाल वुझी विरहानल की लिय केल सकल हुं अरु भरी है । वेलि दवागिनि की झुरसी जिमि दोगरे के परे होत हरी है ॥ १०२ ॥ अयद्य ॥ आये परदेस ते सलोने स्याम सुनो वाम आगि मिसु गई लपे ऐसे नये हाल की । विवरन रग भयो गरे सुर भग भयो पुलकित अग भयो भूलो गति काल की ॥ भनत कविंद पेद स्वेद जल मोचे दृग कपत अधर भले दसा सोस जान की । चीर सो सरीर ढाप्यो घूघट सो मुष देख्यो उघरि उघरि जात लगनि गोपाल को ॥ १०३ ॥ इति श्री रसिक रायमनो विनादार्थे कविंद्र उदयनाथ वनिताया विनोद चन्द्रिकायाँ कुलवधु परवधू वर्नन नाम तृतीय प्रकास ॥ ३ ॥ समाप्तम भूयात । श्री १८६० मिती कार्तिक शुद्ध २ चन्द्रवासरे लिखित ईश्वरीप्रसाद गौड की ॥

Subject —नायिका भेद ॥

Note —ग्रन्थकर्ता कविंद्र उदयनाथ हैं जो १७७७ के लगभग हुए । इस पुस्तक का लिपिकाल सवत् १८६० है ॥

No 119—पञ्चाङ्ग दर्शन *Prose* Substance—Kashmir made paper Leaves—87 Size—$11\frac{3}{4} \times 6\frac{1}{4}$ inches Lines—15 on a page Extent—975 ślokas Appearance—new Complete Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Panchánga Darśana.—The mode of preparing Hindu almanacs by Yadunátha Śukla who wrote it in Samvat 1857 (1800 A.D) The manuscript is dated Samvat 1887 (1830 A.D)

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ नमः सरस्वत्यै ॥ अथ पचाग दर्शन ग्रंथो लिख्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धि समस्त कर्म को होय विदित जग माह । ताते ताहि विचारियत शस्त्र बुद्धि के छांह ॥ १ ॥ नाम रूप है कल्प मनु युग सवत्सर मास । पखवार तिथि नषत्र युति करण लग्न सो रास ॥ २ ॥ कल्पादिक नित चक्र से तिन को नित न विचार । वारादिक नित भ्रमत हे ताते तासु प्रचार ॥ ३ ॥

End—गुरु शुक्र सूर्य तीसरे चौथे शनि मगल छठे इह योग लिया गया है सो राजा रन को युद्ध मे फलदाय ॥

स्वाती भरणी श्लेषा धनिष्ठा हस्त अनुराधा तीनो उत्तरा रोहिणी	मूल शतभिषा आर्द्रा अभिजित	तीनो पूर्वा अश्विनी पुष्य मघा मृगशिरा श्रवण कृत्तिका चित्रा धनिष्ठा
शनि रवि चन्द्र गुरु	बुध	शुक्र भौम
प्रतिपत् तीज पचमी एकादशी द्वादशी	अष्टमी षष्ठी द्वितीया	द्वादशी अष्टमी चौथ चतुर्दशी
अकुल गणई	कुलाकुल	कुल गणहु
अगण मे युद्ध की इच्छा करे तो विजय होय	गण इस गण मे युद्ध करे तो सधि होय	गण मे युद्ध करे तो स्थिर रहे

गिरि शर वसु शशि वर्ष मद मधु वदि रवि सुध वार । दर्शन यह पचाग को लियो नयो अवतार ॥ १ ॥ यान वचन भाषा रचन मान नहीं अपमान । कीनो लीजे धरि हिये सज्जन सरस सुजान । २ ॥ इति श्री शुक्र मथुरानाथ सुत शुक्र यदुनाथ विरचित पचाग दर्शन समाप्तम शुभ भूयात् ॥ सवत् १८८० श्रावण शुक्र पूर्ण पञ्चदशी दिन बुधवार घरे सपूर्णम् ॥ लिखित महाराजस्य पंडितस्य काश्मीरे रामनगर विषे ॥ शुभ ॥

Subject—ज्योतिष ॥

Note—ग्रन्थकर्ता यदुनाथ शुक्ल है । इन्होंने सवत् १८५७ मे इस ग्रन्थ को बनाया । इसका लिपिकाल १८८० है ॥

No 120—स्वरोदय *Verse* Substance—country made paper Leaves—64 Size—$10 \times 6\frac{1}{4}$ inches Lines—17 on a page Extent—about 850 ślokas Appearance—old Incomplete. Incorrect Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Swarodaya.—The decision about the most auspicious moment for engaging in a battle by the breaths taken at that time It is a common belief among Hindus that when they want to do a work they examine their breaths *i e*, they see whether the breath comes strongly from the right or the left nostril Th moment when the breath comes with a greater force from the right nostril is considered to be most auspicious. The name of the author is not given In the opening Stanza the name Datta occurs which may be the *nom de plume* of the poet

Beginning.—श्रीगणेशायनम ॥ कवित वंदे सुर मुनि गन्धर्वहु नाग नर कामद कृपानिधि सकल सिद्धि को है घर ॥ भ्रमर भरित को सरोज मुड भ्रष सोहे चारो भुज धरैं पास अकुस अभैवर ॥ सेदुर न मुड गज तुड वक्र पक्र दंत लबोदर भनै दत सकल कलपु हर ॥ गनपति प्यारो जो दुलारो गिरिजा जू को सो सुमिरत देत सुष संपतिनि को निकर ॥ १ ॥ बीघन हरन तुम हो सदा गनपति होहु सहाइ । विनती कर जोर करो दोजै ग्रन्थ बनाई ॥ वीना पुस्तक धारिनी हस चारिनी नाम । वानी याक सरस्वती देहु बुधि अभिराम २ श्रीगणेशायनम ॥ दो० ॥ वानि जू को सुमिर के देखि सुरोदय पंथ । धर्मवत राजानि के अर्थ कीनियत ग्रन्थ ॥ १ ॥ मल्ल युद्ध भट यु धुनि नृप युद्ध के काल ॥ वादी प्रतिवादी विषै वरनत सम कविराज ॥ २ ॥ दुहु दिस गनक विचारि कै कहत जिते के हेतु । पै निदान यह जानिबो धर्मवत कर खेत ॥ ३ ॥

End.—शनि औ राहु रवि भौम है कासिन क्रम धरि लाइ । जौने आसन विष अव विघ्न इत्यादिक पाई ॥ २७ । जौन आसन विषे मे धरे वृहस्पति आइ । आनद सदा सोहार के करै सो राज बनाइ ॥ २८ ॥ इति श्री सिघासन विधि प्रकाश समाप्तम् ॥ ० ॥ (इसके आगे एक और चक्र बना है उसके आगे चार पाच सादे पन्ने छूटे हैं । इसी से यह ग्रन्थ पूरा नहीं जान पडता) ॥

Subject.—राजाओं के लडाई पर चढने के लिये स्वरों का विचार ॥

Note.—कर्ता के नाम का पता नहीं है । कदाचित दत्त हो । कोई समय भी नहीं दिया है ॥

No 121.—श्रीवाल्मीकि रामायण *Verse* Substance—Kashmir made paper Leaves—615 Size—14 × 12¼ inches. Lines—24 on a page Extent—about 37 000 ślokas. Appearance—new Complete Generally correct Character—Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Śrī Valmīki Rāmayana.—Translation of Válmíki's Rámayana by Santosh Sinha of Patiálá He took two years to finish the translation which was completed in Samvat 1890 (1833 A D)

Beginning.—ॐ श्रीगणेशायनम ॥ अथ रामचद्राय नम श्री मति वाल्मीक रामायन लिष्यते ॥ वालकाड प्रारभते ॥ दोहा ॥ वानी याक सुधरन मै विसद बरन समचदै ॥ वीन दड मडत करा वदो पद्म कर वद ॥ १ ॥ दोहा ॥ सवल अना अन सिरजि सह फल ब्रह्मड अनेक ॥ व्यापक जड चाम ब्रह्मन महा महो सिर टेक ॥ २ ॥ कवितु । श्री गुरु नानक अनूप ब्रह्मरूप भये अगद अमर भये रामदास दो सहर । सति गुरु अरजन श्री हरि गुविंद चद हरीराय देत हैं अनद को विलद वर ॥ कसटि निकद हरि कृष्ण मुकुंद जन तेग बहादर विषाद विदारन हर । श्री गुविंदसिंघ लौं करिदम पदारविंद वंदे बिदु दुइ हर जुर हाथ यद कर ॥ ३ ॥

End.—दोहरा ॥ मदन देयासिंह को कवि सन्तोषसिंह जानि। बरनन करि गुन राम के चहि चित महँ कल्यान ॥ ११ ॥ युगल भनो कुरुखेत महि के थल पुरि अभिराम ॥ राम कथा बरनन करो रामायन शिहि नाम ॥ १२ ॥ छप्पै ॥ समत विक्रमजीत अष्टदस सहस भनिज्जय। सोम त्रिगुणा करिय भयो पूरन लखि लिज्जय ॥ पुन इकानवा चढ्यो मधि दोउनि मानहु ॥ सित पख अति सुमति चैत सुभ मास पछानहु ॥ सवि भई ग्रंथ की समापति रामाइन सुंदर सरस ॥ कवि हाथ जोरि विनती करति चाहति चित रघुपति दरस ॥ १३ दोहरा ॥ इकि इकि दिन महि सरग इकि कथ्यो मुदितनि मांहि। याते ग्रन्थो मिताय बहु चिते बरष दुइ नाहि ॥ १४ ॥ जे सति मानहु चान है पठहि सुनहि हित लाइ ॥ छिमा करहि लखि दोष को कवि बुधि अल्प बनाइ ॥ १५ ॥ कवित्त ॥ मुद्रता छद की सुधारी आप मद को कि चादनी सुचद की मुकुट प्रोत पद की। पाती रातविंद को निपाती पाप वृंद को मनिंद मधि बिंदु को विलदरता गुबिंद की ॥ सारदा मुनिंद को अद्वारता अनद को सुधा रदा गिरिंद मणिमाल ज्यो फनिंद की। पुञ्ज अरविन्द की दिनिन्द की धरिन्द की शल्न्दनि इन्द की मुकथा रामचन्द की ॥ १६ ॥ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ 86

Subject.—वाल्मीकि रामायण का छन्दोबद्ध अनुवाद।

Note.—ग्रन्थकर्त्ता कवि सन्तोषसिंह हैं जिन्होंने १८८७ और ८१ की सन्धि में इस ग्रन्थ को पूरा किया ॥

No. 122.—रसमय ग्रन्थ *Verse.* Substance—country made paper. Leaves—75. Size—9½ × 4½ inches. Lines—7 on a page. Extent—1,100 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Rasamaya Grantha.—The detailed description of heroes and heroines by the poet Beni of Asaní. He wrote this book in Samvat 1817 (1760 A.D.). The manuscript is dated Samvat 1818 (1761 A.D.).

Beginning.—श्रीगणेशायनमः ॥ प्रथम गणेशहि वंदिये पावैं सब सुभ रीत। सोत कहैं जग सुजस के बड़ै सुकृत मे गीत ॥ १ ॥ लस्यो कुभ सेंदुर चस्यो चिन्तहति नीली कार। एक रदन रवि शशि मनो गस्यो राहु बरजोर ॥ २ ॥ अथ नृप वंश वर्नन ॥ गौतम रिषि के वंस मे कोटि सप्त मे रुद्र। धरम धुरा सुभ करम के कलि मे भये समुद्र ॥ ३ ॥ कोटु के कुल मे भये मनरजन मनराज। गनबकस रच प्रकटि जिन गजे अरि कुल गज ॥ ४ ॥ मनरञ्जन के चारि सुत जैसे चारो वेद। जिनते महो प्रगट भये राज काज के भेद ॥ ५ ॥

End.—दोहा ॥ कीन्हो रसमय ग्रन्थ यह समुझि कबिन की रीति ॥ जे कवि कोविद रसिक मन ते करिहैं यत प्रीति ॥ ४३४ ॥ लसत बस उमराव वर दानवेउ करि मत ॥ सुकृती साधु कुलीन वर नवरस मे सरवज्ञ ॥ ४३५ ॥ दोहा ॥ बेनी कवि को वासु है असनी वर सुभथान ॥ बसत सबै घटकुल जहा करैं वेद को गान ॥ ४३७ ॥ निहचनसिंघ सुजान वर को अनुशासन पाइ। कीनो रसमय ग्रन्थ यह धरनि नायका भाइ ॥ ४३८ ॥ अष्टादस सत सत्रहोतर सवत सोरि मानि ॥ फागुन दसमी सित सुभग चन्द्रवार अनुमानि ॥ ४३६ ॥ विनती जोजतु कबिन सो भूल परी जो होइ ॥ सोधि सुधारो बरन धरि यंथहि नीके जोइ ॥ ४४० ॥ चरन सरोज मनाइ के गनपति के सिर नाइ। ग्रन्थ रच्यो श्रृंगार सुभ दोहा कबिन बनाइ ॥ ४४१ ॥ इति श्री रसमयग्रन्थ सपूर्ण सुभमस्तु ॥ रितु वसत वैसाख सुदि छठि तिथि सुभग रसाल ॥ वसु शशि वसु शशि सवत धरि लिख्यो सुलिपि नदलाल ॥ १८१८ ॥ शुभमस्तु।

Subject.—नायिका भेद ॥

Note—ग्रन्थकर्ता बेनी कवि असनी निवासी हैं। इन्होंने राजा निहचलसिंह की आज्ञा से संवत १८९० में यह ग्रन्थ रचा। इसका लिपिकाल संवत १८९८ है॥

No 123—पिंगल *Prose and Verse* Substance—country made paper Leaves—49 Size—11×7 inches Lines—15 on a page Extent—1,200 ślokas. Appearance—old. Incomplete. Correct. Character—Devanágari Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Pingala.—A book on Hindi Prosody by the poet Sukhadeva (1700 A D)

Beginning—श्रीगणेशाय नमः। गणपति गौरि गिरेश के पाइ नाइ निज सीस। मिश्र सु कवि महाराज को देत वनाइ असीस॥१॥ रजत खंभ पर मनहु कनक जंजीर विराजति। विसद सरद घन मध्य मनहु छन दुति छबि छाजत॥ मानहु कुमुद कदंव मिलित चंपक प्रसून तति। मनहु मध्य घनसार लसति कुंकुम लकीर अति॥ हिमगिरि पर मानहु रवि किरण इमि घनधोर अरधग मह। सुषदेव सदासिव मुदित मन हिमतसिंघ नरेस कह॥२॥

End.—रूप घनाक्षरी॥ अथ गद्यस्योदाहरण॥ जजर अरि जेर करि सेर समसेर बहादुर वैरिवारण विदारणसिंह॥ समत्थ हत्थ॥ अथत्थजल॥ हत्थ समान महावीर॥ समर धीर॥ धरणि धुरधर॥ धराधीश॥ धवल धाम॥ धवल सुजस पुंज विजित सुर धुनी धार धवलिम श्री महाराजाधिराज हिंमतिसिंह चिरंजीव॥ इति गद्य॥ अथैकाक्षरात्पादादारभ्य षट्विंशति वर्णेय .. ..

(इसके आगे १। पृष्ठ सादा छूटा है। इति आदि कुछ नहीं है। ४४ पत्र तक पुस्तक लिखी। पश्चात् पत्रों पर पिंगल के विषय के कई ग्रंथ से बने हैं)॥

Subject—काव्य बनाने की रीति॥

Note.—कर्ता सुखदेवसिंह मिश्र हैं जो अमेठी के राजा हिम्मतसिंह के आश्रित थे।

No 124—मरदान रसारनव *Verse* Substance—country made paper Leaves—89 Size—$10\frac{3}{4}\times 6$ inches. Lines—15 on a page Extent—1 000 ślokas. Appearance—new Complete. Generally correct. Character—Devanágari Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras

Maradána Rasáranava.—The detailed description of heroes and heroines by Sukhadeva (1700 A.D) The manuscript is dated Samvat 1859 (1802 A.D)

Beginning—श्रीवक्रतुण्डो जयति॥ कानन टूटैं विघन के जानन के यह चान॥ कज आनन की कांति मिटि गज आनन के ध्यान॥१॥ वेद धस अवतंस मनि गुण गण को दरियाव। कनकसिंघ जाहिर भयो जग में रैना राउ॥२॥ दिल्लीपति के काज जिन कोटिक करी फतूह। जगमगात जग पर भजो जाके जस को जूह॥३॥ जाहिर हिंमति इंद भयो सत हिंदुन को मेंड। समृति जानि जग में करी प्रगट पुण्य की मेंड॥४॥ पृथ्वीपाल को भयो ताके पृथ्वीराज। मोज देन को मोज सो बडो गरीबनेवाजु॥५॥

End.—ऐसे नवहू रसनि के भेद कहे हम जानि। रसध्वनि की रीति लखि सवै जानो हैं जानि॥२०॥ यह मरदान रसारनो पूरो कीनो यत्नु। याके जाने जानियतु रस ध्वनि को यत्नु॥४१८॥ इति श्री मरदान रसारनो सुष्देव कवि विरचितम् सम्पूर्णम्॥ सम्वत १८५९ साल आषाढ मासे कृष्णपक्षे षष्ठ्यां कुज वासरे॥ लेखक महीरामदास ग्रामेतु धराउल॥ शुभमस्तु॥ राम॥

Subject.—नायिका भेद ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता सुखदेव कवि हैं। ये वैश्य राजा मरदान के आश्रित थे और इन्हीं की आज्ञा से इन्होंने यह ग्रन्थ रचा, इसी कारण मरदान रसार्णव इसका नाम रक्खा गया है। इसका लिपिकाल संवत् १८७६ है।

No 125.—कवित्त रामायण *Verse.* Substance — country-made paper. Leaves—80. Size—9½ × 5½—inches. Lines—8 on a page. Extent—1,440 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Devanāgari. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Kavitta Rámáyana.—The story of Rama Chandra's life in the Kavitta metre by Goswámí Tulasí Dása. The manuscript is dated Samvat 1856 (1799 A.D.)

Beginning.—श्रीगणेशायनमः। कवित्त ॥ अवधेस के द्वारें सकारें गई सुत गोद के भूपति लै निकसे। अवलोकिहों सोच विमोचन को ठगि सी रहियो न ठग्यो धिक से ॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातिक से। सजनी ससि में समसील उभै नवनील सरोरुह से विगसे ॥ १ ॥

End.—कहो हनुमान सों सुजान राम राय सों कृपा निधान संकर सों सावधान सुनिये। हरष विषाद राग रोष गुन दोष मई विरचि बिरंचि सब देखियत दुनिये ॥ माया जीव काल के जो काम को सुभाय के करैया राम वेद कहै साचो मन गुनिये। तुमते कहा न होइ हाहा सो बुझैये मोहि हौं हूं रहौं मौनहीं बयो सो जानि लुनिये ॥ २६१ ॥ इति श्रीराम किंकर गोस्वामी तुलसीदास कृत कवित्त सम्पूर्णं शुभम् ॥ संवतु ॥ १८५६ ॥ ज्येष्ठ वदि ॥ ८ ॥ सोमे मुकाम काशी मनिकर्णिका तटे ॥ कवित्त ॥ यह पुस्तक राम सिया हित सों तुलसी असी पारि विचारि बनाई। सो लिपी टुकेन गौर गरीब ने अच्छर मात्र जु चूकि गो भाई ॥ ताको सुधारि की सज्जन सुजन सो सिर पै न धरो जु बुराई। मैं सब संतन के पग लागत पोथी मनोहर दास लिखाई ॥ १ ॥ दोहा ॥ उत न हमारा इदुरमो नदी सिधु के तीर। विश्वनाथ काशी विषे त्यागो अधम सरीर ॥ २ ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री ॥

Subject.—श्री रामचन्द्र का संक्षिप्त इतिहास ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं। इस प्रति का लिपिकाल सं० १८५६ है।

No 126.—श्रीराम नहछू *Verse.* Substance — country-made paper. Leaves—6. Size—11 × 5 inches. Lines—5 on a page. Extent—50 ślokas. Appearance—ordinary. Complete. Generally correct. Character — Devanágarí. Place of deposit—Library of the Mahárája of Banáras.

Śrí Ráma Nahachhu.—A collection of songs by the poet Tulsí Dása in honor of the nail paring ceremonial of Ráma Chandra.

Beginning.—श्रीगणेशायनमः। श्री जानकी वल्लभो विजयते। आदि सारदा गनपति गौरि मनाइ अहो। रामलला कर नहछू गाइ सुनाइ अहो ॥ जेहि गाये सिधि होइ परम निधि पाइ अहो। कोटि जनम कर पातक दूरि सो जाइ अहो ॥ १ ॥ कोटिन्ह बाजन बाजहि दसरथ के गृह हो। देव लोक सब देखहि आनद अति हिय हो ॥ नगर सोहावन लागत बरनि न जाते हो। कौसल्या के हर्ष न हृदय समाते हो ॥ २ ॥

End—दसरथ राउ सिघासन चैठि विराजहि हो। तुलसिदास बलि जाहि देपि रघुराजहि हो॥ जे ये नहछू गावे गाइ सुनाइहै हो। रिद्धि सिद्धि कल्यान मुक्ति नर पावइ हो॥ २०॥ इति श्री गुसाईं तुलसीदास कृत नहछू राम जू के मुडन समय का सपूर्णम्॥ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु॥

Subject—श्री रामचन्द्र के नहछू समय के मगल गान॥

Note—यह ग्रन्थ श्री गोस्वामी तुलस दास कृत है॥

No 127—श्रीपार्वतीमगल *Verse* Substance — country made paper Leaves—24 Size—11 x 5 inches Lines—5 on a page Extent—195 ślokas Appearance — new Complete Correct. Character— Devanágarí Place of deposit—Library of the Mahárája of Banaras.

Srí Párvatí Mangala—An account of the marriage of Mahádeva and Parvatí by Goswámí Tulasí Dása, who says that he composed this book in the Jaya Samvat There are 60 names of these Vikrama Samvats, Jaya being the 28th Consequently in the 16th century of the Vikrama era, Jaya Samvat fell twice, i e, in 1639 and 1699 It may, therefore, be concluded that Tulasí Dása wrote this book in Samvat 1639 (1582 A.D)

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ श्री हेरवम्पाय रामायनमः॥ विनय गुरुहि गुनि गनहि गिरिहि गननाथहि॥ हृदय आनि सियराम धरै धनु भाथहि॥ गावउ गौरि गिरीस विवाह सुहावन॥ पाप नसावन पावन मुनि मन भावन॥ कवित रीति नहि जानउ कवि न कहावउ॥ सकर चरित सुसरित मनहि अन्हवावउ॥ अपवाद विवाद विदूषित बानिहि॥ पावनि करौ सुगाइ महेस भवानिहि॥ जय सवत फागुन सुदि पाचै गुरु दिनु॥ अश्विन विरचेउ मगल सुनि सुप छिनु छिनु॥

End—छद॥ मृगनैनि विधु बदनी रच्यो मनि मजु मगल हारसो॥ उर धरहु जुवती जन विलोकिति लोक सोभा सारसो॥ कल्यान काज उछाह ब्याह सनेह सहित जो गाइ है॥ तुलसी उमा सकर प्रसाद प्रमोद मन जिय पाइ है॥ १६॥ इति श्रीमद्गोस्वामि श्री तुलसीदास कृत शिवशिवा विवाह मगल समाप्तम्॥ शुभमस्तु॥ ॥ ॥

Subject—श्री महादेव पार्वती का विवाह॥

Note—यह ग्रन्थ प्रसिद्ध श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत है। निर्माणकाल इसमें भी नहीं मिलता। आरम्भ के एक छद से इतना मिलता है कि "जय नाम सवत्सर फागुन सुदी ५ गुरुवार" इससे इस ग्रन्थ का बनना सवत् १६३६ में माना जा सकता है।

APPENDIX I.

APPENDIX I

LIST OF THE BOOKS THE FULL NOTICES OF WHICH ARE NOT GIVEN

N.B —*The dates in thi s brackets indicate the time of tl e autl or Incomplete books are marke l w tl aster sks*

No	Name of autl or	Name of book	D e of mpo s o	Age f man s r p	Remarks
128	Bal Rama	Jhulano		1806	
129	Besabu I āma	Nama Mala			A k nd of lex con
130	Bhadra	Nakha Sikha			
131	Bhawanī Datta	Dughal ya Muhurta Bhāsa			Astrology
132	Bhupa	Champu Samudrika Bhasa		1669	Res dent of bal ajad pur
133	Bihārī Lala	Satsaī	(1650)	1789	See Nos. 115 of 1900 27 of 1901 and 8 of 190
134				181	
135	Charana Dasa	Gyāna Swa odaya	(1760)	1815	See No 70 of 1901
136	Chhema Rāma	* I ate Prakasa			Th s book deals w th H d rhetoric. Dr Gr erson ment ons one poet of this name who wrote on Nayaka Bheda and who flou ished n 1600 A D
137	Chintāmani	* Kavikula Kalpataru	(1650)		See No 127 of 1900
138	Deva	A n J ma	(1690)	1757	See Nos 53 of 1900 an l 121 of 1909
139					
140	D lipa	Ramayana Tīka	(1859)		He l ved at Cl a n pur
141	Ganesa	*R tu Varnana ..	1800		
142	Gokula Nātha	Nāma Ratna Mala	1814	1800	See No ? of 1900
143	Hansaraja	Sancha Sāgara		1 54	See No 135 of 1900
144	Jasawanta S ngha	Bhasa Bl ūsana	(1660)	1801	See No 47 of 1902
145	Jhāma Dasa	Ramarnava	1761	1 6 1800	See No 21 of 1901
146		* "		1805	
147				1806	
148	Krisna Dāsa	D na Līla		1890	A m nor poet
149	Lālajī M sra	Koka Sara		1849	
150	Mal ka Muhammads Jayasī	Padmava t	1540	1761	See No 54 of 1900 and Nos 24 25 and 53 of 1901
151	Manī Rāma	Sara Sangraha		1783	A collect on
152	Manohara Dāsa N ranjanī.	Sata Prasnī Sa īka		1775	See No 58 of 1901
153	Nanda Dasa	Anekartha Nama Mala	(1567)	1809	See No 58 of 1902
154					
155	Nayana Sukha	Vaidya Mano sava	1599	1717	See No 34 of 1900
156	"	"		1799	
157	N ya Nātha	Mantra Khanda Rasa Ratnakara.			Tantra
1 8	Padmākara	Jagata vinoda	1815	1831	See No 6 of 1902
159		*			
160	Para a Rama	Nakha S kha			See No 173 of 1902
161	I ubakara	"			Worm-eat n
16	Sahajo Bāī	Sahaja Prakāsa	1743		See No 129 of 1900
163	Sera laput a	Koka Sara	1 00	1794	
164	Sa ada a	I ama Līlā Prakāsa	1849		
16	Sundara Dāsa	Sundara S ngara	1631	1775	See No 3 of 1902
166	Syāma Sakha	Rama Dhyana Sundarī			
167	Tulasī Dāsa	Rama Chari a Manasa	15 4	1767	See No. 1 of 1900 and Nos ?? and 28 of 1901
168	"	*		1794	
169		"		1 96-97	
1 0		Hanumāna Bahuka	16 3?		See No. 60 of 1901
1 1	Umā Datta	Baraha Masa			
17	Viswanatha S ngha	G ta Ra hunandana Sa īka.	1832	1833	See No. 41 of 1900 The date 1844 g ven in this note is of the ms and not of the compos t on of the book
1	"	Bhajana			

No.	Name of author.	Name of book.	Date of composition A. D.	Age of manuscripts.	Remarks.
174	Unknown Authors	Bhasa Jonga Lagana Prakasa	...	...	
175	" ...	Bhasa Sunadnka ...	...	...	
176	" ...	* Fasja Nami ...	...	...	
177	" ...	Hitopadesa Satka ...	...	...	
178	" ...	* Isira ala ...	...	1735	Commentary in Prose.
179	" ...	* Jarana Chikitsa ...	...	...	
180	" ...	* Kavita Sangraha ...	...	...	Prose
181	" ...	Lilarasa Taranagini ...	...	...	
182	" ...	* Paheli ...	...	1833	
183	" ...	Sankawali	...	...	Explanation of disputed points in Tulasi Dasa's Ramayana.
184	" ...	Srimada Bhagavat ...	...		
185	" ...	Sarva Purana ...	...	...	Prose
186	" ...	Tulsi Sagara Setu ...	1880	...	Prose version of Tulasi Dasa's Ramayana.

INDEXES

INDEX II

Names of Manuscripts Noticed

[N B —*The figures indicate the number of the notice*]

INDEX I

Names of authors

[N B —*The figures indicate the number of the notice*]